इकाई 10 कोश और उनके प्रकार

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य
10.1 प्रस्तावना
10.2 "कोश" से तात्पर्य
10.3 अनुवाद में कोश की उपयोगिता
10.4 कोशों के प्रकार
  10.4.1 एकभाषिक कोश
  10.4.2 द्विभाषिक कोश
  10.4.3 उपभाषा कोश
  10.4.4 अपभाषा कोश
  10.4.5 विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह
  10.4.6 परिभाषा कोश
  10.4.7 विषय कोश
  10.4.8 अभिव्यक्ति कोश
  10.4.9 मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश
  10.4.10 थिसॉरस
  10.4.11 पर्याय कोश
  10.4.12 उच्चारण कोश
  10.4.13 नाम कोश
  10.4.14 साहित्य कोश
  10.4.15 विश्व कोश
  10.4.16 पुराण एवं मिथक कोश
10.5 सारांश
10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- शब्दकोशों सहित अन्य अनेक प्रकार के कोशों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- इन कोशों के स्वरूप, प्रकृति तथा प्रकार्य से परिचित हो सकेंगे; और
- अनुवाद के संदर्भ में उनकी उपयोगिता से परिचित होकर उनका सही इस्तेमाल सीख सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

अनुवाद का कार्य मात्र एक भाषा में उपलब्ध सामग्री का दूसरी भाषा में शब्दांतर नहीं है। अनुवाद में शब्दों के अर्थ के साथ कथन के आशय का भी समुचित रूप से वहन होना चाहिए। इसके लिए अनुवादक को केवल अपनी मेधा या स्मरण शक्ति पर ही निर्भर न रहकर विभिन्न साधनों का सहारा लेना पड़ता है। ऐसा एक प्रमुख साधन है -- शब्द कोश। इस इकाई में आपको शब्दकोश एवं अन्य कोशों के विषय में बताया जा रहा है।

अनुवाद वह माध्यम है जिसके द्वारा एक भाषा की बात दूसरी भाषा में प्रकट की जाती है। वह बात साहित्य, संगीत, कला-कौशल, विज्ञान या अन्य किसी भी विषय से संबद्ध हो सकती है। अनुवाद की पहली शर्त है, अनुवादक की कुशलता--स्रोत और लक्ष्य, दोनों भाषाओं पर उसका समान अधिकार; और दूसरी शर्त है, जिस विषय की सामग्री का अनुवाद किया जा रहा हो, उस विषय के बारे में पर्याप्त जानकारी।

भाषा पर अधिकार का एक पक्ष है, दोनों भाषाओं के शब्दार्थ का ही नहीं, विभिन्न संदर्भों में उन शब्दों के निहितार्थ का भी ज्ञान। आप जानते हैं कि परम विद्वान व्यक्ति से भी किसी भाषा के एक-एक शब्द के अर्थ और प्रयोग की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। किसी विशेष स्थिति में उसे किसी शब्द का उपयुक्त प्रतिशब्द ध्यान में नहीं भी आ सकता है, या अनेक प्रतिशब्दों में से सही विकल्प चुनने में उसे दुविधा भी हो सकती है। ऐसे में जो उपकरण उसके लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है, वह है शब्द कोश। विभिन्न प्रकार के शब्द कोशों के अतिरिक्त "थिसॉरस" और "पर्याय कोश" भी उसकी सहायता कर सकते हैं।

विषय का समुचित ज्ञान होने पर भी कई बार कुछ विशेष प्रयोगों या संकल्पनाओं की अवधारणा उसके सामने स्पष्ट नहीं होती है। ऐसे में अनेक प्रकार के विषय कोश, साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्व कोश आदि की सहायता लेकर वह विषय को और अच्छी तरह समझने में सक्षम हो सकता है। प्रस्तुत इकाई में इन भिन्न प्रकार के कोशों का परिचय देते हुए उनके उपयोग-प्रसंगों पर प्रकाश डाला जा रहा है।

10.2 "कोश" से तात्पर्य

आइए, पहले भाषा तथा अनुवाद के संदर्भ में "कोश" के अर्थ पर विचार करें। कोश भाषिक भी होते हैं और भाषिकेतर भी। भाषिक कोशों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के शब्दकोश, अभिव्यक्ति कोश "थिसॉरस" (Thesaurus), पर्याय कोश, बोली या उपभाषा कोश, लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश आदि आते हैं जिनमें भाषा के शब्द तथा अभिव्यक्तियाँ प्राय: अर्थ तथा प्रयोग संदर्भों के साथ दी जाती है। भाषिकेतर कोशों में विभिन्न विषयों -- साहित्य, धर्म, दर्शन, विज्ञान आदि से संबद्ध जानकारी संकलित रहती है। साहित्य कोश, पुराण कोश, विश्वकोश आदि इस श्रेणी में आते हैं।

अनुवाद के संदर्भ में सबसे पहले भाषिक कोशों के - मुख्य रूप से शब्दकोशों के महत्व पर ध्यान जाता है। जैसा कि नाम से ही प्रकट है, शब्दकोश का अर्थ है शब्दों का कोश अर्थात् खजाना। आम धारणा और पारंपरिक-परिभाषा के अनुसार शब्दकोश (Dictionary या Lexicon) ऐसा ग्रंथ है जिसमें किसी भाषा के शब्दों को वर्णक्रम से संकलित करके उनके अर्थ/अर्थों और प्रयोगों का ब्योरा दिया जाता है। स्तरीय शब्दकोशों में इन सबके अतिरिक्त शब्दों की व्याकरणिक कोटि, उच्चारण, पर्याय और प्रयोग संदर्भों का भी उल्लेख होता है। संस्कृत के 'निरुक्त' तथा 'निघंटु' ऐसे कोश हैं जिनमें शब्दों के साथ उनकी व्युत्पत्ति भी दी गई है। आज भी किसी भाषा के मानक शब्दकोश में शब्द के अर्थ के साथ उसके स्रोत का भी उल्लेख रहता है और अगर उसके रूप में परिवर्तन आया हो तो स्रोत वाले मूल शब्द का भी उल्लेख रहता है।

कई आधुनिक शब्दकोशों में केवल प्रचलित या परंपरा और प्रयोग से सिद्ध शब्दों के अतिरिक्त ऐसे शब्द भी होते हैं जो नई वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक प्रगति की आवश्यकताओं से जन्मे हैं। शब्दों के विशिष्ट प्रयोग तथा मुहावरों को भी इसमें शामिल किया जाता है। किन्तु किसी भी सामान्य शब्दकोश में दर्शन, शिल्प, प्रशासन आदि से संबद्ध संपूर्ण शब्दावली को समाहित करना संभव नहीं है। व्यवहार के अतिरिक्त इन विषयों से संबद्ध विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली का भी उस चर्चा में प्रयोग होता है। इसलिए हर समृद्ध भाषा में ऐसे कोश भी होते हैं जिनमें विशिष्ट ज्ञान क्षेत्रों या व्यवहार क्षेत्रों से संबद्ध शब्दावली उपलब्ध हो। ये शब्दकोश एक-भाषिक (Mono-lingual) होते हैं।

शब्दकोश का कार्य केवल एक भाषा के शब्दों का अर्थ या परिचय देने तक ही सीमित नहीं है। आपने ऐसे अनेक शब्दकोश देखे होंगे, जिनमें एक भाषा के शब्दों का अर्थ तथा परिचय दूसरी भाषा में दिया जाता है। इस प्रकार के अंग्रेजी-हिन्दी अथवा हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशों का उपयोग आपने स्वयं भी कई बार किया होगा। अनुवाद कार्य में ऐसे द्विभाषिक (Bi-lingual) या बहुभाषिक (Multi-lingual) कोश बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं।

कोश का ही एक रूप "थिसॉरस" भी है जिसमें विचारों और अवधारणाओं को शब्दों तथा उनके पर्यायों को सूचीबद्ध किया जाता है और भिन्न पर्यायों की अवधारणाओं का सूक्ष्म विवेचन करते हुए उनके सटीक अर्थ को इंगित किया जाता है। इससे लेखक को संदर्भ के अनुसार सही शब्द चुनने में सहायता मिलती है। इसी से मिलते-जुलते होते हैं पर्याय कोश, जिनमें प्राय: वर्णक्रम से

संग्रहीत शब्दों के साथ उनके पर्यायवाची, समानार्थक और कभी-कभी विपरीतार्थक शब्दों की सूची भी दे दी जाती है।

बोली या उपभाषा कोशों में किसी भाषा से संबद्ध बोलियों की शब्दावली का अर्थ तथा व्याकरणिक जानकारी आदि के साथ संग्रह रहता है। अपभाषा कोशों में अमानक भाषा प्रयोग अर्थ सहित संग्रहीत होते हैं। अभिव्यक्ति कोश विशिष्ट भाषा के प्रयोगों या भाषाई मुहावरों के संग्रह होते हैं तो लोकोक्ति तथा मुहावरा कोश भाषा में प्रचलित लोकोक्तियों तथा मुहावरों के अर्थ तथा प्रयोग का परिचय देते हैं। ये सभी कोश एकभाषिक भी हो सकते हैं और द्विभाषिक भी।

भाषा के अर्थ तथा प्रयोग से संबद्ध इन कोशों के अतिरिक्त अनेक प्रकार के भाषिकेतर कोश भी होते हैं जिनमें विभिन्न विषयों से जुड़ी अनेक प्रकार की जानकारी रहती है। आपने विश्वकोश या Encyclopeadia अवश्य ही देखे होंगे जिनमें विषयों को वर्णक्रम में रखते हुए विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों से संबद्ध जानकारी एकत्रित की जाती है। पुराण तथा पुराकथा कोश, जैसा कि नाम से ही जाहिर है, विभिन्न पुराणों, पुराकथाओं तथा इनमें आई हुई संकल्पनाओं तथा चरित्रों का परिचय देते हैं। संस्कृति कोश देश या क्षेत्र विशेष की संस्कृति के विभिन्न पक्षों को समझने में सहायक होते हैं। इसी प्रकार साहित्य कोश, संदर्भ कोश, परिभाषा कोश और सूक्ति तथा उद्धरण कोश आदि अनेक प्रकार के कोश होते हैं जिनकी लेखन तथा अनुवाद के संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

10.3 अनुवाद में कोश की उपयोगिता

विभिन्न प्रकार के कोशों के सामान्य परिचय के बाद हम अनुवाद के संदर्भ में इनकी उपयोगिता पर विचार कर सकते हैं। हम पहले ही बात कर चुके हैं कि भाषाओं के अच्छे जानकार से भी भाषा के तमाम शब्दों के अर्थ और प्रयोगों की जानकारी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। इसके अतिरिक्त कभी-कभी अनूद्य विषय की कुछ संकल्पनाएँ अनुवादक के लिए अस्पष्ट हो सकती हैं जिससे सटीक अनुवाद में बाधा उत्पन्न होती है। अनुवाद के क्रम में उसके सामने और भी कई कठिन स्थितियाँ आ सकती हैं। उनसे निपटने के लिए विभिन्न प्रकार के कोशों से उसे बहुत सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए :

1. हो सकता है कि अनुवादक को स्वयं स्रोत भाषा के शब्द के ही सटीक अर्थ का ज्ञान न हो। कई बार साहित्यिक कृतियों में अपेक्षाकृत अप्रचलित शब्द का प्रयोग होता है। उनके अनुवाद के लिए उनका सही-सही अर्थ जानना बहुत आवश्यक होता है। ऐसे में स्रोत भाषा के एक-भाषिक शब्दकोश की आवश्यकता पड़ती है।

2. किसी शब्द के सामान्य अर्थ का ज्ञान तो प्राय: सबको होता है, पर विशेष संदर्भ में उसका अर्थ कुछ और भी हो सकता है। ऐसे में भी उसका समुचित अर्थ सुनिश्चित करने के लिए एकभाषिक कोश उपयोगी होता है।

3. सामान्य रूप से भी स्रोत भाषा के शब्द का लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द (समकक्ष शब्द equivalent) ज्ञात न होने पर अनुवादक को द्विभाषिक कोश की सहायता लेनी पड़ती है।

4. व्यावसायिक और तकनीकी विषयों की पारिभाषिक शब्दावली के लिए तो इन विशिष्ट क्षेत्रों से संबद्ध द्विभाषिक कोशों की आवश्यकता पड़ती ही है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय लेखन के अनुवाद में भी इन क्षेत्रों से संबद्ध कोश अथवा पारिभाषिक शब्द संग्रह उपयोगी होते हैं। कई बार एक ही वस्तु या अवधारणा के लिए एक से अधिक शब्दों का प्रयोग होने के कारण अनुवादक के लिए स्थिति अस्पष्ट हो जाती है। ऐसे में उसे प्रामाणिक कोशों से मानक शब्द का चुनाव करने में सहायता मिलती है।

5. कई रचनाओं में स्रोत भाषा के मानक रूप के स्थान पर या फिर मानक रूप के साथ ही उपभाषाओं या उपभाषा (slang) का प्रयोग भी होता है। ऐसे प्रयोगों का अर्थ सुनिश्चित करने के लिए इनसे संबद्ध उपभाषा अथवा बोली कोशों का अध्ययन उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य भी होता है।

6. विभिन्न भाषा क्षेत्रों की संस्कृति में भिन्नता होने के कारण एक भाषा में व्यक्त अवधारणा को दूसरी भाषा तक पहुँचना बहुत सरल नहीं होता है। स्वयं अनुवादक के लिए भी कई बार स्रोत भाषा की रचना का सांस्कृतिक संदर्भ बहुत स्पष्ट नहीं रहता। कई बार कुछ मुहावरों तथा भाषा प्रयोगों के पीछे सुदीर्घ सांस्कृतिक परंपरा रहती है और अनुवाद में उसका परिचय देना जरूरी होता है। इन सब

स्थितियों में स्रोत भाषा के क्षेत्र से संबद्ध संस्कृति कोश से अनुवादक को सहायता मिल सकती है। विभिन्न क्षेत्रों की पुराकथाओं से जुड़े हुए या उनके संदर्भ से युक्त लेखन के अनुवाद में पुराकथा कोश बहुत सहायक होते हैं।

7. किसी शब्द के अनेक पर्यायों में अर्थ का सूक्ष्म अंतर रहता है। इसी प्रकार स्रोत भाषा के एक शब्द के लिए कई बार लक्ष्य भाषा में अनेक प्रति-शब्द मिलते हैं। ऐसे में स्रोत भाषा के शब्द का सटीक तथा सूक्ष्म अर्थ समझने के लिए और लक्ष्य भाषा में उसके लिए उपयुक्त प्रतिशब्द का चुनाव करने के लिए "थिसॉरस" तथा पर्याय कोश बहुत उपयोगी होते हैं।

यहाँ अनुवाद कर्म में भिन्न-भिन्न प्रकार के कोशों की उपयोगिता का संकेत मात्र दिया गया है। आइए, अब हम इन भिन्न-भिन्न प्रकार के कोशों की प्रकृति और प्रकार्य को समझने की कोशिश करें और उदाहरणों के माध्यम से देखें कि व्यावहारिक रूप में ये किसी प्रकार उपयोगी सिद्ध होते हैं।

10.4 कोशों के प्रकार

कोशों के अनेक प्रकारों तथा उनकी उपयोगिता का कुछ संकेत आपको इस इकाई के पिछले भागों से मिल गया है। आइए, अब इनका कुछ और विस्तृत परिचय प्राप्त करें।

1. भाषिक कोश

इस श्रेणी में हम उन कोशों को रख सकते हैं जिनका सरोकार भाषा और शैली के विभिन्न पक्षों से होता है। इनके अंतर्गत केवल शब्द ही नहीं, पर्यायों, विशिष्ट शब्द तथा भाषा प्रयोगों, विशिष्ट अभिव्यक्तियों तथा लोकोक्तियों और मुहावरों से संबद्ध कोश भी आ जाते हैं। इनमें प्राथमिक स्तर पर आता है शब्दकोश, और उसमें भी एकभाषिक और द्विभाषिक कोश।

2. अन्य कोश

हमने अब तक उन कोशों पर विचार किया जो सीधे भाषा-शब्द, शब्दार्थ, पर्यायवाची शब्द, शब्द प्रयोग, मुहावरों, प्रयुक्तियों, अभिव्यक्ति आदि--से जुड़े हैं। वैसे तो अनुवाद भाषा का ही व्यापार है और इससे जुड़ी हर बात कहीं न कहीं भाषा से जुड़ती है। किंतु इस अनुभाग में हम कुछ ऐसे कोशों पर बात करेंगे जो सीधे-सीधे भाषा प्रयोग की अपेक्षा कुछ अन्य बातों से जुड़े हैं। इन बातों का महत्व भी अनुवाद में कम नहीं है।

10.4.1 एकभाषिक कोश

एकभाषिक कोश में किसी एक भाषा के शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह होता है और उसी भाषा में उनके अर्थ भी दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए :

> **कड़ाह--** संज्ञा पु. (सं.) 1. कड़ाह। बड़ी कड़ाही। 2. कछुए की खोपड़ी। 3. कुआँ। 4. नरक। 5. झोपड़ी। 6. भैंस का बच्चा। 7. ढूह। ऊँचा टीला। 8. सूप।
>
> -- (संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर)

अच्छे कोश में किसी दिए गए शब्द के विभिन्न अर्थों के अतिरिक्त उनकी व्याकरणिक कोटि, वे संज्ञा हों तो उसका लिंग, वचन, शब्द का स्रोत तथा विभिन्न प्रयोग भी दिए जाते हैं। कहीं-कहीं उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ को और अधिक स्पष्ट भी कर दिया जाता है। शब्द के साथ इतनी जानकारी विस्तार से देने में अध्येता का ध्यान भटक सकता है और अर्थ-बोध में उलझन हो सकती है। अत: शब्दकोश के आरम्भ में ही कुछ संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं, जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। इन संकेतों के माध्यम से चर्चाधीन शब्द की श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि के विषय में अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। आपको कोशों में इस प्रकार की सूचियों का भी अध्ययन करना चाहिए। शब्दकोशों के उद्देश्य तथा उनकी पद्धति को समझने के लिए उनकी भूमिकाओं और प्रस्तावनाओं का भी अध्ययन करना चाहिए।

आम धारणा है कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश उपयोगी होता हैं क्योंकि उसमें एक भाषा के शब्दों के अर्थ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं किंतु, अनुवादक को एकभाषिक

कोश की आवश्यकता भी अक्सर पड़ती है। स्रोत भाषा के किसी अप्रचलित, अल्प-प्रचलित या अपरिचित शब्द का अर्थ जानने के लिए यह अपरिहार्य है। आप कह सकते हैं कि यह कार्य तो द्विभाषिक कोश से भी सिद्ध हो सकता है। किंतु एक तो एकभाषिक कोश में शब्दों पर अधिक संख्या में और अधिक गहराई तथा विस्तार से विचार होता है और दूसरे उसमें शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग के अनेक विकल्पों पर प्रकाश डाला जाता है जिससे उसका अर्थ-बोध अधिक स्पष्ट तथा सुनिश्चित हो जाता है।

ऐसा कई बार सरल शब्दों के साथ भी होता है कि किसी संदर्भ में उनका सीधा अर्थ संगत नहीं लगता। उदाहरण के लिए चिड़ियाघर के सूचनापट पर **Big cats** का उल्लेख हो तो उसका अर्थ "बड़ी बिल्लियाँ" निश्चय ही नहीं होगा। अंग्रेजी शब्दकोश में अर्थ देखें तो पता चलेगा कि इस शब्द का उल्लेख बाघ, तेंदुआ आदि बिल्ली जातीय वन्य प्राणियों के लिए भी होता है और दिए हुए संदर्भ में यही अर्थ संगत है। इसी प्रकार यदि किसी स्त्री के लिए कहा जाए -- **She is a cat.** तो इसका सीधे-सीधे अनुवाद "वह बिल्ली है" नहीं होगा। यह अनुवाद अपने आप में हास्यास्पद भी है और अस्पष्ट भी क्योंकि इससे लेखक/वक्ता का आशय स्पष्ट नहीं होता। अंग्रेजी शब्दकोश में **cat** का एक एक अर्थ **spiteful woman** भी है। इसके आधार पर इस वाक्य में **cat** का अनुवाद "द्वेषपूर्ण" या "द्वेषी" हो सकता है।

लक्ष्य भाषा के एक-भाषिक शब्दकोश की भी इसी प्रकार आवश्यकता पड़ती रहती है। स्रोत भाषा के किसी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में एकाधिक प्रतिशब्द हो सकते हैं। संभव है अधिक प्रचलित प्रतिशब्द किसी संदर्भ विशेष में अधिक उपयुक्त न हो। ऐसे में शब्दकोश जो अनेक विकल्प सुझाता है उनमें से उपयुक्त अर्थच्छाया वाला शब्द चुना जा सकता है। नीचे कुछ उपयोगी एक भाषा कोशों का उल्लेख किया जा रहा है :

कोश :

1. **हिन्दी शब्दसागर/संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर,** संपा. रामचन्द्र वर्मा, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. **ब हत् हिन्दी कोश,** संपा. कालिका प्रसाद तथा अन्य, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।
3. *The Concise Oxford Dictionary*, ed. *H.W.* Fowler & F. Co. Fowler, Oxford University Press.
4. *Chambers's Twentieth Century Dictionary*, ed. William Ceddie, London, W & R. Chambers Ltd.

10.4.2 द्विभाषिक कोश

द्विभाषिक कोश में एक भाषा के शब्दों के अर्थ, उच्चारण तथा प्रयोग संदर्भ दूसरी भाषा में दिए जाते हैं। अनुवाद में इनकी उपयोगिता असंदिग्ध है क्योंकि ये स्रोत तथा लक्ष्य, दोनों भाषाओं के शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग को समाहित करते हैं। स्रोत भाषा या लक्ष्य भाषा में से कोई भी इन कोशों की प्रथम भाषा हो सकती है जिसके शब्दों के अर्थ तथा प्रयोग दूसरी भाषा में रहते हैं। अंग्रेजी-हिन्दी के परस्पर अनुवाद के संदर्भ में अंग्रेजी-हिन्दी और हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश-इस श्रेणी में आएँगे। अनुवाद में यद्यपि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा के शब्द पर्याय खोजने होते हैं, लेकिन दोनों ही प्रकार के कोशों की आवश्यकता होती है।

स्रोत भाषा — लक्ष्य भाषा शब्दकोश की उपयोगिता तो आपके सामने स्पष्ट है, किन्तु कई बार, विशेषकर अनुवाद पुनरीक्षण के क्रम में यह देखना आवश्यक हो जाता है कि लक्ष्य भाषा का जो शब्द आपने चुना है वह स्रोत भाषा के संबद्ध शब्द का आशय सटीक रूप से दे रहा है या नहीं। उदाहरण के लिए एक वाक्य लीजिए :

— **He is quite clear in his mind.**

अंग्रेजी शब्द **clear** के अनेक अर्थ हो सकते हैं। आप कौन-सा चुनेंगे? अंग्रेजी-हिन्दी कोश देखिए। डा. कामिल बुल्के के कोश में इस शब्द के कई अर्थ दिए गए हैं --

स्पष्ट, स्वच्छ, पारदर्शक, निर्दोष, सुनिश्चित और निर्बोध

उपयुक्त प्रतिशब्द का चयन बहुत कुछ संदर्भ से निर्धारित होता है किंतु वाक्य का एक सामान्य अर्थ भी होता है जिसकी दृष्टि से कुछ शब्द बिल्कुल अनुपयुक्त होंगे। अर्थ की दृष्टि से शब्द की उपयुक्तता के निर्णय के लिए आप फिर स्रोत भाषा की कसौटी अपना सकते हैं। अर्थात् हिन्दी-अंग्रेजी कोश में इन तमाम प्रतिशब्दों के अंग्रेजी प्रतिशब्द देखिए। मीनाक्षी हिन्दी-अंग्रेजी कोश में ये अर्थ इस प्रकार हैं :

स्पष्ट	--	clear, evident
स्वच्छ	--	1. clear, 2. limpid, clean and clear
पारदर्शक	--	Transparent
निर्दोष	--	1. innocent, blameless, guiltless, 2. unblemished
सुनिश्चित	--	firmly determined, definite

अब आप देखिए कि इनमें से कौन-सा अंग्रेजी प्रतिशब्द आशय की रक्षा करते हुए मूल वाक्य में सहज भाव से लग सकता है। ऐसे शब्द हैं — **clear, firmly determined** और **definite1** अत: इन्हीं के हिन्दी प्रतिशब्दों का प्रयोग उपयुक्त रहेगा --

— वह अपने मन में बिल्कुल स्पष्ट/सुनिश्चित है।

अब संदर्भ के अनुसार इनमें से उपयुक्त शब्द चुन लीजिए।

इस प्रकार आपने देखा कि अनुवाद में द्विभाषिक कोश दोनों तरह सहायक होते हैं -- स्रोत भाषा के लक्ष्य भाषा पर्याय देखने में; और लक्ष्य भाषा के स्रोत भाषा पर्याय देखने में भी। कुछ कोश बहुभाषिक भी होते हैं, जिनमें एक ही कोश में एक भाषा के शब्दों के प्रतिशब्द एक से अधिक भाषाओं में दिए जाते हैं। इसी प्रकार कुछ द्विभाषिक कोश दुतरफा भी होते हैं। अर्थात् उनके पूर्वार्ध में भाषा "क" के शब्दों के अर्थ भाषा "ख" में दिए जाते हैं और उत्तरार्ध में भाषा "ख" के शब्दों के अर्थ भाषा "क" में। इस प्रकार के शब्दकोश सैलानियों के लिए विशेष उपयोगी होते हैं क्योंकि वे अपनी भाषा ("क") के किसी शब्द का अर्थ तुरंत भाषा ("ख") के ज्ञाता को बतला सकते हैं और साथ ही उसके द्वारा कही गई बात को भी साथ-साथ समझ सकते हैं। अनुवाद के लिए भी ऐसे कोश सहायक होते हैं। नीचे कुछ उपयोगी द्विभाषिक कोशों का उल्लेख किया जा रहा है --

द्विभाषिक कोश :

1. अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ. कामिल बुल्के, कैथोलिक प्रेस, राँची।
2. बृहत् अंग्रेजी-हिन्दी कोश, डॉ. हरदेव बाहरी, ज्ञानमंडल, वाराणसी।
3. *Oxford Hindi English Dictionary,* R.S. McGreger, Oxford University Press, Oxford.
4. *'A Practical Hindi-English Dictionary',* Mahendra Chaturvedi, *B.N.* Tiwari, National Publishing House, Delhi
5. शिक्षार्थी हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोशों, डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली।

10.4.3 उपभाषा कोश

उपभाषा कोश में मानक भाषा से जुड़ी हुई किसी बोली के शब्दों और प्रयोगों का अर्थ सहित संग्रह होता है। उपभाषा में हुई किसी रचना के लिए तो ऐसे कोश उपयोगी होते ही हैं, पर कई बार मानक भाषा में लिखे गए साहित्य में--मुख्य रूप से कथा साहित्य में - बोलियों के शब्द तथा प्रयोग भी मिले-जुले होते हैं। हिन्दी में आपको ऐसे असंख्य प्रयोग आंचलिक कथा साहित्य में मिलेंगे। विशुद्ध आंचलिक की श्रेणी में न आने वाले साहित्य में भी कई बार ऐसे अनेक शब्द मिलते हैं जो क्षेत्र विशेष की बोली तक ही सीमित होते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी के कई कथाकारों की रचनाओं में स्कॉटिश तथा वेल्श भाषा प्रयोग मिलते हैं। कथा साहित्य तथा इतर रचनाओं में भी, क्षेत्रीय रीति-रिवाज, कृषि आदि संबंधी उपभाषा के शब्द कई बार आते हैं। उपभाषाओं के बहुप्रचलित शब्द तो मानक भाषा के शब्दकोशों में मिल जाते हैं जैसे स्कॉटिश शब्द bairn (बच्चा) lass (लड़की)। किंतु अधिकतर शब्द बोली विशिष्ट होने के कारण केवल

उपभाषा के शब्दकोश में ही मिल सकते हैं। अनुवादक को केवल संदर्भ से शब्द के अर्थ का अनुमान लगाने के स्थान पर कोश से उनका अर्थ देख लेना चाहिए। तभी अनुवाद अधिक संगत और प्रामाणिक होगा। अंग्रेजी उपभाषा शब्दों के लिए आप निम्नलिखित उपभाषा कोश की सहायता ले सकते हैं:

सहायक उपभाषा कोश :

— **The English Dialect Dictionary, ed. Joseph Wright, Oxford University Press, Oxford.**

हिन्दी के संदर्भ में हिन्दी की बोलियों (बृजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी मैथिली, भोजपुरी आदि के कोश उपयोगी होंगे।

10.4.4 अपभाषा कोश

अपभाषा कोश सुनने में बड़ा विचित्र लगता है, किन्तु बोलचाल की भाषा में कई ऐसे प्रयोग होते हैं जो मानक भाषा से बहुत भिन्न होते हैं और मात्र मानक भाषा की शब्दावली, शब्दार्थ और प्रयोगों के माध्यम से इनका मतलब नहीं समझा जा सकता। इन्हें अपभाषा या चालू भाषा (slang) के प्रयोग कहा जा सकता है। हिन्दी में ही देखिए, "खुंदक", "ठुल्ला", "पंगा लेना", "फट्टे मारना" आदि शब्द और प्रयोग मात्र मानक भाषा के माध्यम से नहीं समझे जा सकते। कई बार मानक भाषा में प्रयुक्त सहज सामान्य शब्द भी चालू भाषा में कुछ ओर अर्थ देते हैं, जैसे "छोड़ना" या "फेंकना" (गप्प मारना, दूर की हाँकना आदि)। अंग्रेजी आदि भाषाओं में भी आपको ऐसे प्रयोग मिलेंगे जिनके शब्दार्थ उनके आशय को बिल्कुल भी प्रकट नहीं करते। उदाहरण के लिए :

— **pickled**
— **chunk of wood**
— **kick the bucket**
— **be a beauty**

इनके **शब्दार्थ** क्रमशः इस प्रकार होंगे :

— अचार डला हुआ
— लकड़ी का टुकड़ा
— बाल्टी को लात मारना
— सुंदर (व्यक्ति/वस्तु) होना

वास्तव में इनका **निहितार्थ** क्रमशः इस प्रकार होगा :

— नशे में धुत्त
— किसी काम का न होना
— मर जाना
— फूहड़ और अविश्वसनीय व्यक्ति होना

एक बात पर ध्यान दीजिए। एकभाषिक कोश पर चर्चा करते समय इस बात का उल्लेख किया गया था कि कभी-कभी किसी शब्द के बहुप्रचलित पर्याय का चलन भी पूरे कथन को गलत या हास्यास्पद बना सकता है। ऐसे में कोश में दिया हुआ अन्य पर्याय काम आता है। लेकिन अपभाषा प्रयोगों के मामले में यह बात नहीं है। ऐसे प्रयोगों के जो अर्थ निकाले जाते हैं, वे उनके कोशीय अर्थ नहीं होते। दूसरे शब्दों में ऐसे किसी भी शब्द या प्रयोग के अनेक कोशीय अर्थों में से कोई भी अर्थ ऐसे आशय का वहन नहीं करता।

सामान्यतः शिष्ट और शालीन भाषा में इस प्रकार के चालू प्रयोग नहीं होते। ऐसे कई प्रयोग फूहड़ और अभद्र भी होते हैं, पर किसी विशेष वर्ग द्वारा या किसी विशेष स्थिति में उनका प्रयोग होता भी है। कथा साहित्य में भी किन्हीं विशेष चरित्रों, परिवेश या स्थितियों के यथार्थ चित्रण के क्रम में इस प्रकार की भाषा का प्रयोग होता है। स्रोत भाषा की रचना में इस तरह

के प्रयोग हों तो अनुवाद में दो बातें आवश्यक हैं -- (एक) इन प्रयोगों के स्पष्ट और सही अर्थ समझें; और (दूसरी) लक्ष्य भाषा में उसी प्रभाव को बनाए रखने की चेष्टा करें।

सहायक अपभाषा कोश :

1. **A Dictionary of Slang and Unconventional English, Erik Partridge, Routledge & Kegan Paul Limited, London.**

10.4.5 विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह

विविध विषयों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली/कोश/शब्द संग्रह भी उपभाषा कोशों की ही भाँति अनुवादक के लिए सामान्य भाषा कोशों के पूरक का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान के विविध विषयों की अपनी विशिष्ट शब्दावली और विशिष्ट प्रयुक्तियाँ होती हैं। मानक भाषा का कोश कितना ही विराट क्यों न हो, सामान्य रूप से उसमें विविध ज्ञान क्षेत्रों -- इतिहास, भूगोल, दर्शन, ज्योतिष, वाणिज्य, प्रबंधन, गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, अंतरिक्ष विज्ञान, प्रशासन आदि असंख्य विषयों -- से संबद्ध तकनीकी शब्दावली को समाविष्ट करना संभव नहीं होता। इसलिए किसी विशेष विषय से संबद्ध सामग्री का अनुवाद करते समय उस विषय से संबद्ध शब्दावली के कोशों का सहारा लेना आवश्यक ही नहीं, अपरिहार्य है। ऐसे एक भाषिक कोश भी हो सकते हैं जिनमें शब्दों के अर्थ तथा आशय को स्पष्ट किया जाता है। अनुवाद के लिए विषयों से संबद्ध द्विभाषिक या बहुभाषिक कोश और अधिक सहायक होते हैं। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने मानविकी, विज्ञान, चिकित्सा से संबद्ध "वृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह" प्रकाशित किए गए हैं जिनमें अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के भी प्रतिशब्द दिए गए हैं। इनके माध्यम से अंग्रेजी के संकल्पनात्मक तथा तकनीकी शब्दों के मानक प्रतिशब्द आसानी से मिल सकते हैं। विभिन्न सरकारी विभागों तथा मंत्रालयों द्वारा भी अपने क्षेत्र से संबद्ध शब्दावली तथा शब्द प्रयोगों के कोश प्रकाशित किए जाते हैं और संबद्ध विषय के अनुवाद में वे बहुत उपयोगी सिद्ध होते हैं। ऐसे कुछ द्विभाषिक सहायक कोश निम्नलिखित हैं :

1. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (मानविकी), 2 खंड, भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।
2. बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (विज्ञान), 2 खंड, भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।
3. आकाशवाणी शब्दकोश, भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. विधि शब्दावली, भारत सरकार, विधि मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. समेकित प्रशासन शब्दावली, भारत सरकार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली।

10.4.6 परिभाषा कोश

ये परिभाषा कोश अथवा पारिभाषिक कोश मात्र पारिभाषिक शब्दावली कोशों संग्रहों से भिन्न होते हैं। शब्दावली संग्रहों में विभिन्न विषयों तथा अनुशासनों से संबद्ध पारिभाषिक शब्दावली दी जाती है। पारिभाषिक शब्दकोश भी विषय विशेष की पारिभाषिक शब्दावली से ही जुड़े हुए होते हैं। ऐसे द्विभाषिक शब्द कोशों में एक भाषा में दी हुई पारिभाषिक शब्दावली के प्रतिशब्द दूसरी भाषा/भाषाओं में दिए जाते हैं। किन्तु परिभाषा कोशों में पारिभाषिक शब्दों का मात्र अर्थ ही नहीं दिया जाता बल्कि उनसे संबद्ध अवधारणा को समझाया भी जाता है। इसी प्रकार ये विषय कोशों की श्रेणी में होते हुए भी उनसे कुछ भिन्न हैं। विषय कोशों में विषय से संबद्ध सिद्धांतों, अवधारणाओं आदि की जानकारी दी जाती है। इस क्रम में पारिभाषिक शब्द तथा संबद्ध अवधारणाएँ भी आ जाती हैं। किन्तु परिभाषा कोश मूलतः शब्दकोश हैं और इनका पूरा बल विषय की जानकारी कराने पर नहीं बल्कि पारिभाषिक शब्दावली की अवधारणा और उसके अभिधेय पर रहता है।

आप पूछ सकते हैं कि पारिभाषिक शब्द की अवधारणा को समझना क्यों आवश्यक है जबकि शब्दों का अर्थ देना ही काफी है। पर यह बात आपके सामने कई बार आ चुकी है और अनुवाद अभ्यास के क्रम में स्वयं आपने भी कई बार महसूस किया होगा कि शब्दरूपी किसी ध्वनिसमूह का कोई निर्विकल्प अर्थ नहीं होता। वास्तविक अर्थ पूरे संदर्भ से ही निर्धारित होता है।

उदाहरण के लिए हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में 'ध्वनि' का अर्थ आप क्या देंगे? सामान्य अर्थ है sound किन्तु काव्यशास्त्रीय संदर्भ में a अर्थ असंगत होगा। इसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की कविता 'काली आँखों का अंधकार' की पंक्ति 'अत्यंत तिरस्कृत अर्थ सदृश' का अनुवाद like extremely disclaimed meaning निश्चय ही नहीं होगा। 'अत्यंत तिरस्कृत वाच्य' भारतीय काव्यशास्त्र की अवधारणा है। इसके समुचित अंग्रेजी प्रतिशब्द के चुनाव के लिए आपके आगे इस अवधारणा का स्पष्ट रहना जरूरी है।

यहाँ आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि इसके लिए कोश देखना क्यों जरूरी है? काव्यशास्त्र या इसी प्रकार अन्य विषयों के ग्रंथ भी इसमें सहायक हो सकते हैं। ठीक है। किंतु ध्यान रखें कि अनुवादक को हर विषय का ज्ञान होना जरूरी नहीं है। इसलिए किसी भी विषय के सही ग्रंथ को उठाकर उसमें संबद्ध अवधारणा के बारे में पढ़ लेना इतना आसान नहीं है। पहले तो उसे आवश्यकतानुसार उपयुक्त ग्रंथ का पता लगाना होगा। फिर उस अवधारणा से संबद्ध भाग को पढ़ना होगा जिसमें स्वाभाविक रूप से ही बहुत-सी ऐसी जानकारी भी शामिल होगी जो वर्तमान प्रसंग में उसके लिए इतनी आवश्यक नहीं भी हो सकती है। अनुवाद कार्य की समय-सीमा को देखते हुए उसके लिए ऐसे ग्रंथ अधिक सहायक होंगे जिनमें अधिक समय या शक्ति नष्ट किए बिना वह आवश्यक अनिवार्य जानकारी पा सके। परिभाषाकोश इसी दृष्टि से बहुत मददगार होते हैं।

परिभाषा कोशों में भी शब्दों का वर्णक्रमानुसार संयोजन होता है ये एकभाषिक भी हो सकते हैं जिनमें जिस भाषा का शब्द होता है उसी भाषा में उसके विषय की जानकारी (उच्चारण, इतिहास, अर्थ, प्रयोग संदर्भ तथा आवश्यकतानुसार विभिन्न विद्वानों के मतामत तथा विवेचन आदि) रहती है। अनुवादक के लिए और भी उपयोगी ऐसे द्विभाषिक कोश होते हैं जिनमें एक भाषा के पारिभाषिक शब्द के साथ उसका प्रतिशब्द तथा अन्यान्य जानकारी दूसरी भाषा में रहती है। उदाहरण के लिए :

> Hypochondria **(हाइपोकॉन्ड्रिया) : स्वकाय दुश्चिंता।**
>
> अपने स्वास्थ्य के बारे में विकृत चिन्ता - रोगी का यह भाव कि वह शरीर के रोग से पीड़ित है। दृष्टान्त के लिए यह सोचना कि उसे अनीमिया या क्षयरोग हो गया है इत्यादि। यह अकारण और आधारहीन होता है। वस्तुत: व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होता है और यह उसकी कोरी कल्पना मात्र रहती है। एडलर के अनुसार यह अवस्था हीनता
>
> संसूचन (suggestion) की विधियाँ विशेष सफल सिद्ध होती है।
>
> (मानविकी पारिभाषिक कोश, 'मनोविज्ञान खंड')

> Epigraph **(ऐपिग्राफ) : पुरालेख, सुभाषित।**
>
> व्युत्पत्ति की दृष्टि से इसका अर्थ है "पुरालेख", किन्तु कोई भी ऐसी उक्ति जो संक्षिप्त, सुष्ठु और चमत्कारपूर्ण हो सुभाषित कही जाएगी। इसमें और व्यंग्योक्ति में यह अंतर है कि व्यंग्योक्ति मूलत: व्यंग्यात्मक ही होनी चाहिए, इसका व्यंग्यात्मक होना अनिवार्य नहीं है।
>
> (मानविकी पारिभाषिक कोश, 'साहित्य खंड' 3)

आप देख रहे हैं कि इन उदाहरणों में न केवल अवधारणाओं को समझाया गया है बल्कि मिलती-जुलती अवधारणाओं से इनका अंतर भी स्पष्ट कर दिया गया है। दूसरे उदाहरण में दिये हुए शब्द के दो वैकल्पिक प्रतिशब्द तथा उनके संदर्भ भी स्पष्ट कर दिए गए हैं। इन सब बातों से अनुवादक के लिए इनकी उपयोगिता स्पष्ट है।

पुस्तकालयों में आपको दर्शन, साहित्य, धर्म, कला, विज्ञान आदि सभी विषयों से संबद्ध परिभाषा कोश/पारिभाषिक कोश मिल जाएँगे। सभी विषयों के ऐसे कोशों का उल्लेख इस पाठ की सीमा में संभव नहीं है। आपकी सुविधा के लिए यहाँ सामान्य रूप से उपयोगी कुछ कोशों का सुझाव दिया जा रहा है।

सहायक कोश ::

1-3. Encyclopaedia of Humanities संपादक डॉ. नगेन्द्र, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन (दर्शन खंड, साहित्य खंड, मनोविज्ञान खंड)।

4. **साहित्यशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश,** राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एंड संस।

5. **भाषाशास्त्र का पारिभाषिक शब्दकोश,** राजेन्द्र द्विवेदी, दिल्ली, आत्माराम एंड संस।

6. **साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश,** प्रो. महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डा. तारकनाथ बाली, दिल्ली, बुक्स एण्ड बुक्स।

10.4.7 विषय कोश

विषय कोश मात्र भाषिक ही नहीं भाषिकेतर संदर्भ से भी जुड़े होते हैं किन्तु भाषिक स्तर पर उनकी भूमिका के कारण इस भाग में उनका उल्लेख भी किया जा रहा है। विषय कोशों में संबद्ध विषय की शब्दावली संकल्पनाओं आदि की जानकारी रहती है। जब आप किसी विशेष विषय का अनुवाद करते हैं तो मात्र शब्दांतरण पर्याप्त नहीं होता। जब तक आपके सामने हर संकल्पना स्पष्ट नहीं होगी, आप सही अनुवाद कैसे कर सकेंगे? कभी-कभी स्रोत भाषा के किसी तकनीकी शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते समय भी यह कठिनाई हमारे सामने कई बार आती है। जिन विज्ञानों और अनुशासनों पर अब तक हिन्दी में कुछ विशेष लिखा नहीं गया है या जो पश्चिम में अभी उभरने की प्रक्रिया में हैं उनसे संबद्ध शब्दावली हिन्दी में या तो अभी बनी नहीं है, या फिर लगभग अप्रचलित है। ऐसे में आपको संदर्भ से अर्थ समझकर उपयुक्त शब्द खोजना या बनाना होगा। समझने की इस प्रक्रिया के लिए आपको विषय कोश की सहायता लेनी होगी।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक ही शब्द अलग-अलग विषयों में अलग-अलग अर्थों में व्यवहृत होता है। यह सही है कि द्विभाषिक शब्दकोश में उस शब्द के विभिन्न प्रतिशब्द भी मिल जाते हैं किन्तु उससे यह स्पष्ट नहीं होता कि विषय विशेष में आपको कौन-सा प्रतिशब्द चुनना है या कौन-सा प्रतिशब्द अभी अधिक उपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए unity शब्द लीजिए। सामान्य बोलचाल में इसका अर्थ "एकता" होता है किंतु संख्या के संदर्भ में यह "इकाई" (numerical unity) नाटक के संदर्भ में "अन्विति" (unity of time, place and action) और अभिकल्पन के संदर्भ में "सुसंगति" (unity of design or pattern) का अर्थ देता है। दार्शनिक संदर्भ में यह कभी-कभी "अद्वैतता" का अर्थ भी दे सकता है।
इसी प्रकार voice का अर्थ सामान्य बोलचाल में एक होता है और व्याकरण में कुछ और।

The voice of a sentence is important in determining its meaning का अर्थ

-- किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसकी आवाज/वाणी बहुत महत्वपूर्ण होती है -- न होकर

-- किसी वाक्य का अर्थ निर्धारित करने में उसका वाच्य बहुत महत्वपूर्ण होता है -- होगा। राजनीति विज्ञान में इसका अर्थ "ध्वनि" हो सकता है -- जैसे voicevote (ध्वनि मत) सरीखे प्रयोग में।

हिन्दी में भी आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे। "लीला" शब्द को ही लीजिए -- "बाल लीला", "रसलीला", "प्रणय लीला", "लीला कमल", "ब्रह्म की लीला", "भगवान की लीला" (मुहावरा) आदि अनेक संदर्भों में इस शब्द के आपको अनेक अर्थ मिलेंगे जिन्हें किसी एक प्रतिशब्द में नहीं समेटा जा सकता। विषय कोश आपको यह बतला सकते हैं कि अमुक विषय में इस शब्द से संबद्ध अवधारणा क्या है और उसके लिए कौन-सा प्रतिशब्द उपयुक्त होगा। किसी भी अच्छे पुस्तकालय में आपको भाषा विज्ञान, दर्शन, साहित्यशास्त्र, राजनीति, अर्थशास्त्र, गणित, सांख्यिकी तथा विभिन्न विज्ञानों एवं अनुशासनों से संबद्ध इस प्रकार के अनेक विषय कोश तथा Encyclopaedia मिल सकते हैं। कुछ विषय तथा एनसाइक्लोपीडिया इस प्रकार

5 :

-- *International Encyclopaedia of the Social Sciences,* ed. D.L.Sills, Collier Macmillan Publishers, London.

-- *The McGraw Hill Dictionary of Modern Economics : A Handbook of Terms and Organizations,* Greenwald, McGraw Hill, New York.

-- *Encyclopaedia of Religion and Ethics,* ed. James Hastings, T.T. Clark, Edinburgh

10.4.8 अभिव्यक्ति कोश

अभिव्यक्ति कोश का अर्थ संभवत: आपके सामने बहुत स्पष्ट न हो। हम विषय विशिष्ट की शब्दावली तथा अपभाषा (slang) की बात कर चुके हैं। कुछ शब्द तथा शब्द प्रयोग ऐसे भी होते हैं जो किसी विशेष विषय, प्रयुक्ति या प्रसंग से जुड़े रहते हैं हालांकि उन्हें तकनीकी शब्दों की श्रेणी में नहीं रखा जाता। उन्हें **Jargon** या खास बोली कहा जा सकता है। उनका अनुवाद भी खास बोली में ही होना चाहिए क्योंकि प्रयुक्ति विशेष की भाषागत संरचना भी विशेष ही होती है। उदाहरण के लिए आपने समाचार पत्रों की या सरकारी तथा कार्यालयी पत्राचार, रपटों आदि की भाषा देखी होगी जिसमें एक विशेष सरंचना और मुहावरे का प्रयोग होता है। हर भाषा में अपने तरीके से उस विशिष्टता का पालन होना चाहिए। कार्यालयी भाषा के कुछ उदाहरण लीजिए :

अंग्रेजी	**हिन्दी**
Acceptance in principle.....	सिद्धांत रूप में स्वीकृति
You are hereby informed.....	आपको इस पत्र के द्वारा सूचित किया जाता है...
Tenders are invited...	निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं

कुछ सामान्य शब्दों के अप्रचलित रूप भी विशेष संदर्भों और प्रयुक्तियों में आते हैं। उदाहरण के लिए **spoiler** शब्द को लीजिए। अमेरिका में राजनीतिशास्त्र के संदर्भ में इसका प्रयोग ऐसे व्यक्ति के लिए होता है जो अपनी पराजय निश्चित जानते हुए भी चुनाव में इसलिए खड़ा होता है कि अपने प्रतिद्वंद्वी के वोट काट सके। राजनीतिशास्त्र के ही शब्द **impossibilism** का प्रयोग समाज सुधार के उन हवाई आदर्श भरे विचारों में विश्वास के लिए होता है जिनका यथार्थ में कार्यान्वयन असंभव होता है। दूरदर्शन के संदर्भ में एक मुहावरे **inherited audience** का प्रयोग होता है। यह उस स्थिति का परिचायक है जब लोग किसी अत्यंत लोकप्रिय कार्यक्रम के बाद चैनल बदलने का झंझट नहीं करते और अच्छा-बुरा, जैसा भी कार्यक्रम आता है, देखते रहते हैं। अभिव्यक्ति कोश में इस प्रकार के प्रयोगों का भी संग्रह रहता है।

इसी प्रकार कई प्रसंगों में लंबे-लंबे शब्दों या शब्द समूहों के संक्षिप्त रूप या मात्र आद्यक्षरों का प्रयोग होता है, उदाहरण के लिए "संयुक्त विधायक दल" के लिए "संविद" **United Nations Organisation** के लिए **UNO** और **Child Relief and You** के लिए **CRY** । इन बहुप्रचलित शब्दों के अलावा कई ऐसे शब्द भी हैं जो केवल विशेष प्रयुक्तियों में ही आते हैं, जैसे **B.P. (Bill payable), RAM (Random Access Memory), MAD (Magnetic Airborne Detection)** आदि। सही अनुवाद के लिए आपको इन अभिव्यक्तियों का सही अर्थ तथा प्रसंग मालूम होना चाहिए। इसमें भी अभिव्यक्ति कोश बहुत सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

सहायक अभिव्यक्ति कोश :

1. *Newspeak — A dictionary of Jargon,* Jonatham Green, Routledge & Kegan paul Ltd. London. ....
2. **अंग्रेजी–हिन्दी अभिव्यक्ति कोश,** कैलाशचन्द्र भाटिया, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।

10.4.9 मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश

मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश भी अनुवाद कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। मुहावरे तथा लोकोक्ति हर भाषा के अनिवार्य अंग होते हैं और भाषा को चुस्त तथा व्यंजक बनाते हैं। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के ऐसे प्रयोगों की चुस्ती तथा व्यंजकता लाने के लिए मुहावरों तथा लोकोक्तियों का भी समुचित अनुवाद होना चाहिए। यहीं एक परेशानी हो सकती है। मुहावरे अपने शब्दार्थ से भिन्न अर्थ देते हैं। उदाहरण के लिए "नौ दो ग्यारह होना" का गिनती या गणित से कोई संबद्ध नहीं है न "रंगे हाथ" या red handed का हाथों के रंग से। इसलिए मुहावरों का अनुवाद शब्दार्थ शब्दांतरण के माध्यम से तो हो ही नहीं सकता। उसके लिए लक्ष्य भाषा में प्रसंग के उपयुक्त मुहावरों की तलाश करनी होगी।

लोकोक्तियों में अपने भाषा-क्षेत्र की संस्कृति का सार तत्व अभिव्यक्ति होता है और इसलिए उन पर अपने क्षेत्र की संस्कृति की गहरी छाप होती है। किन्तु साथ ही वे कुछ सार्वभौम मानवीय

सत्यों को भी अभिव्यक्त करती हैं। अतः हर भाषा में समान आशय का वहन करने वाली लोकोक्तियाँ भी प्रायः मिल जाती हैं, जैसे :

अंग्रेजी	हिन्दी
The grass is greener on the other side of the fence	दूर के ढोल सुहावने
Empty vessels makes much noise	अधजल गगरी छलकत जाय

लोकोक्तियों के अनुवाद में हमेशा आपकी कोशिश यह रहनी चाहिए कि स्रोत भाषा की लोकोक्ति का भाषांतर करने के स्थान पर लक्ष्य भाषा में उसकी समानार्थक लोकोक्ति का प्रयोग करें। ऐसी समानार्थक लोकोक्तियों और मुहावरों की तलाश में द्विभाषिक मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश सहायक सिद्ध होते हैं। ऐसे एक-भाषिक कोश भी बहुत उपयोगी होते हैं। जिनमें मुहावरे/लोकोक्ति के साथ ही उनके अर्थ तथा प्रयोग भी दिए गए रहते हैं जिनसे उनके आशय आपके सामने स्पष्ट हो जाते हैं। इनकी सहायता से आपका अनुवाद अधिक प्रामाणिक हो जाता है।

सहायक कोश :

1. **मुहावरा तथा लोकोक्ति कोश,** डॉ. हरदेव बाहरी तथा डॉ. श्यामलाकांत वर्मा, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।
2. **विचारमूलक विश्व लोकोक्ति कोश** -- *Thesaurus of Universal Proverbs,* ओ.पी. गाबा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
3. **अंग्रेजी–हिन्दी मुहावरा लोकोक्ति कोश,** भोलानाथ तिवारी तथा द्विजेन्द्र नाथ, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. ***Oxford Dictionary of Current Idiomatic English, A.P.*** Cowie, **R.** Makin and R. **McCaig.** Oxford University **Press,** Oxford.

10.4.10 थिसॉरस

"थिसॉरस" तथा पर्याय कोश, भाषिक कोशों में अत्यंत महत्वपूर्ण कहे जा सकते हैं। "थिसॉरस" (Thesaurus) लैटिन शब्द है जिसका शब्दार्थ है "खज़ाना" या "कोशागार"। ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्सनरी में इसके और भी अर्थ दिए गए हैं, जिनमें से एक है -- शब्दकोश या विश्वकोश जैसा ज्ञान भंडार। दूसरा अर्थ **8** -- **'A collection of concepts or words arranged according to sense'**— अर्थात् "अवधारणाओं/संकल्पनाओं अथवा शब्दों का आशय के अनुसार विन्यस्त संग्रह"। अमेरिका में इसका प्रयोग पर्याय तथा विपर्याय कोश के अर्थ में भी होता है। रॉजे के प्रसिद्ध "थिसॉरस" का उद्देश्य है-- साहित्यिक अभिव्यक्ति को सहज तथा प्रभावी बनाने के लिए उपयुक्त शब्दों तथा मुहावरों का सुझाव। इसके लिए अवधारणाओं के अनुसार शब्दों को वर्गीकृत किया गया है और एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने वाले अनेक शब्दों को साथ-साथ न देकर केवल उनके विभिन्न प्रयोग समझाए गए हैं बल्कि उनकी सूक्ष्म अर्थच्छायाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच का अंतर भी समझाया गया है। हर शब्द की सूक्ष्म ध्वनि का परिचय देते हुए इसमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द कैसे भिन्न-भिन्न अर्थ संदर्भों का वहन करते हैं और विशेष स्थिति में क्यों इनमें से कोई विशेष विकल्प ही अधिक उपयुक्त होता है।

कोई लेखक रचना के क्रम में एक कठिनाई का अनुभव अवश्य करता है। वह है दिमाग में आशय स्पष्ट होते हुए भी उसके उपयुक्त शब्द का न मिलना। शब्दकोश ऐसे में अपर्याप्त सिद्ध होता है क्योंकि एक उपयुक्त शब्द की खातिर पूरे ग्रंथ को छान मारना संभव नहीं होता। "थिसॉरस" में वह संबद्ध अवधारणा से जुड़े शब्दों पर विचार करके सही शब्द चुन सकता है। एक शब्द के कई विकल्प उपलब्ध होने के कारण वह आवश्यकतानुसार भिन्न शब्दों का प्रयोग करते हुए दोहराव से भी बच सकता है। अनुवादक को भी "थिसॉरस" के प्रयोग से ये सुविधाएँ मिल सकती हैं। यदि "थिसॉरस" की भाषा अनुवाद में लक्ष्य भाषा हो तो उसमें वह विशेष अवधारणाओं के अंतर्गत आने वाले शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त तथा सटीक शब्द का चुनाव कर सकता है। यदि "थिसॉरस" की भाषा अनुवाद में स्रोत भाषा है तो किसी शब्द का सही और परिशुद्ध अर्थ समझने में उसे इससे सहायता मिलती है। स्रोत भाषा के शब्द का अर्थ स्पष्ट होने पर उसके लिए अधिक सटीक अनुवाद करना संभव होता है।

"थिसॉरस" में मात्र प्रचलित और मानक शब्दों का ही नहीं चालू भाषा की शब्दावली, आद्याक्षर से बने शब्दों (Acronym) और चर्चाधीन शब्दों से बने मुहावरों का भी विवरण रहता है। इस प्रकार यह मौलिक तथा अनुवाद, दोनों ही प्रकार के लेखन कर्म में बहुत उपयोगी रहता है।

सहायक कोश :

Roget's International Thesaurus, Oxford & India Book House Publishing Co. Pvt. Ltd., New Delhi.

10.4.11 पर्याय कोश

पर्याय कोश भी "थिसॉरस" से मिलते-जुलते ही होते है। इनमें प्राय: वर्णक्रम से संग्रहीत शब्दों के विभिन्न पर्यायों या प्राय: समानार्थक शब्दों का उल्लेख होता है और साथ ही उनके बीच में अर्थ और प्रयोग के उस सूक्ष्म अंतर को भी स्पष्ट कर दिया जाता है जिसके कारण किसी विशेष प्रसंग में कोई खास पर्याय ही अधिक उपयुक्त होता है। उदाहरण के लिए "कोमल", "मुलायम : सुकुमार", "मृदुल", "नरम" एक-सा ही अर्थ देते हुए प्रतीत होने पर भी एक ही अर्थ नहीं देते। सुमित्रानंदन पंत ने "पल्लव" की भूमिका में "लहर" के विभिन्न पर्यायवाचियों — "वीचि", "ऊर्मि", "तरंग" आदि का उल्लेख करते हुए उनके अंतर को स्पष्ट किया था। अनुवादक के लिए भाषा के इन सूक्ष्म संकेतों को समझना बहुत आवश्यक है।

पर्यायवाची या समानार्थक प्रतीत होने वाले कई शब्दों में सामाजिक या सांस्कृतिक संदर्भ का अंतर होता है और एक निश्चित पदक्रम होता है। यह पदक्रम आसानी से बदला नहीं जाता। बदलने पर भाषा में संगति नहीं रहती। उदाहरण के लिए हम "जलपान" के स्थान पर "पानीपान" या "चरण स्पर्श" के स्थान पर "पैर स्पर्श" नहीं कह सकते। इसी प्रकार जिस परिवेश या संदर्भ में "तुम्हारे पिता" कहा जाता है, उसमें "तुम्हारे बाप" नहीं कहा जा सकता। अनुवादक को इन बातों का ज्ञान होना चाहिए तभी उसके लिए किसी प्रसंग में उपयुक्त भाषा का प्रयोग संभव होगा। वह स्रोत भाषा में किसी विशेष शब्द के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से भली-भाँति परिचित होने के बाद लक्ष्य भाषा में भी ऐसे शब्द का प्रयोग करने की कोशिश कर सकता है जिसकी अर्थच्छाया स्रोत भाषा के शब्द के समान हो। पर्याय कोशों में प्राय: अधिक प्रचलित शब्द को मुख्य आधार मानकर अन्य शब्दों को उसके पर्याय के रूप में लिखा जाता है। शब्दों की व्याकरणिक कोटि का भी उसमें उल्लेख रहता है। अधिक विस्तृत पर्याय कोशों में शब्दों के विभिन्न प्रयोग तथा उनसे बनने वाले मुहावरों का भी समावेश होता है। कुछ हिन्दी पर्याय कोशों में मूल हिन्दी शब्दों के अतिरिक्त हाल में आगत ऐसे विदेशी शब्दों (टेंशन, टैरिफ, डायरेक्ट आदि) को भी समाविष्ट कर लिया गया है जो आम बोलचाल में काफी प्रयुक्त होने लगे हैं।

विपर्याय कोश में शब्दों के विलोम या विपर्याय दिए जाते हैं। ये भी कुछ स्थितियों में अनुवाद में सहायक होते हैं क्योंकि किसी खास प्रसंग में उपयुक्त शब्द का सुझाव इनसे भी मिलता है। कभी-कभी एक ही कोश में पर्याय तथा विपर्याय, दोनों प्रकार के शब्द सम्मिलित कर लिए जाते हैं।

सहायक कोश :

1. **मानक हिन्दी पर्याय कोश**, डॉ. हरदेव बाहरी, विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली।
2. **हिन्दी पर्यायवाची कोश**, डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
3. **नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश** - हिन्दी अंग्रेजी, डॉ. बदरीनाथ कपूर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

10.4.12 उच्चारण कोश

उच्चारण कोश वे कोश होते हैं जिनमें प्राय: अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों (Internatioal Phonetic Symbols) के माध्यम से शब्दों का सही उच्चारण दिया जाता है। आप सोच सकते हैं कि अनुवाद-- मुख्य रूप से लिखित अनुवाद--में वर्तनी का महत्व होता है। उच्चारण का प्रश्न उसमें उठता ही कहाँ है ? इसके अतिरिक्त, स्रोत भाषा के शब्दों के उच्चारण की बात अगर उठाई जाए, तो वे अनूदित हो जाते हैं, अनुवाद में उनके उच्चारण का सवाल ही नहीं उठता। फिर शब्दकोशों में तो आम तौर पर उच्चारण दे ही दिए जाते हैं। आपका ऐसा सोचना सामान्य शब्दों के संदर्भ में सही हो सकता है, पर नामों के क्षेत्र में उच्चारण की समस्या आती ही है,

विशेषकर अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद के क्रम में। एक तो अंग्रेजी की वर्तनी ऐसी होती है कि उसके आधार पर कोई निर्विकल्प उच्चारण तय नहीं किया जा सकता। दूसरे उसके लेखन में अनेक नाम अन्य विदेशी भाषाओं-फ़्रेंच, जर्मन आदि-- से आए हुए हैं जिनके उच्चारण और भी अलग हैं! ऐसे में हिन्दी में उन नामों को सही-सही लिखना और भी कठिन है। उदाहरण के लिए वर्तनी के अनुसार **Roget, Montpellier, Dumas, Bads** और **Chevrolet** का उच्चारण क्रमशः रोजेट/रोगेट, मॉण्टपेलियर, डुमास, बाच और चेव्रोलेट अधिक तर्कसंगत लगेगा, किन्तु इनके वास्तविक उच्चारण हैं क्रमशः "रॉजे", "मोंपेलिए", "ड्यूमा", "बाख" और "शेवरले"। अतः इनका लिप्यंतरण इनके सही उच्चारण के अनुसार ही होना चाहिए। अनुवाद में व्यक्ति नामों के अतिरिक्त कई बार ग्रंथों, संस्थाओं, स्थानों आदि के नाम उद्धृत करने की भी आवश्यकता पड़ती है। मौखिक अनुवाद में भी इनके सही उच्चारण की जरूरत होती है। सही उच्चारण जानने के लिए उच्चारण कोश का प्रयोग करें। ग्रंथ के आरंभ में विभिन्न ध्वनियों के संकेतों की तालिका रहती ही है ताकि पढ़ने वालों को इन संकेतों तथा इनसे द्योतित होने वाली ध्वनि का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके। इन ग्रंथों की भूमिकाएँ भी आपको पढ़ लेनी चाहिए।

अन्य भाषा भाषियों को सही उच्चारण का ज्ञान कराने वाले कोश अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों में ही उपलब्ध हैं।

सहायक कोश :

1. *Everyman's English Pronouncing Dictionary by* **Daniel Jones, ed. A.C. Gimoson, The English Language Book Society.**
2. **हिन्दी उच्चारण कोश,** डॉ. भोलानाथ तिवारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

10.4.13 नाम कोश

नाम कोश, विषय कोश तथा उच्चारण कोश के बीच कहीं आते हैं। अनुवाद के दौरान आपके सामने कई बार ऐसे व्यक्तियों तथा स्थानों के नाम आते हैं, जिन्हें लेकर आपके सामने मुख्यतः दो प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं--परिचय संबंधी और उच्चारण संबंधी।

व्यक्ति या स्थान के नाम से उसके बारे में कुछ पता नहीं चलता। यहाँ आप फिर प्रश्न उठा सकते हैं कि अनुवाद में नाम तो ज्यों का त्यों दिया जाता है, व्यक्ति या स्थान के बारे में जानकारी की क्या आवश्यकता है ? इसके कई उत्तर हो सकते हैं।

कई बार नाम से पता नहीं चलता कि उल्लिखित व्यक्ति पुरुष है या महिला। अंग्रेजी में क्रिया के रूप से भी यह पता नहीं चलता। पृष्ठभूमि का ज्ञान न होने से अनुवादक के सामने कुछ इस प्रकार की समस्या आ सकती है कि **"Terry Egletoh says......."** का अनुवाद वह "टेरी ईगलटन कहते हैं........" करें या "**.......**कहती हैं......." करें। कुछ जगह "**..........** का कहना है" जैसे गोलमोल प्रयोगों से काम चला लिया जा सकता है किंतु हर जगह यह संभव नहीं है। इसलिए कई बार अनुवादक बड़े हास्यास्पद ढंग से पुरुषों के लिए स्त्रीलिंग और स्त्रियों के लिए पुल्लिंग के प्रयोग कर बैठते हैं।

यदि उल्लिखित व्यक्ति या स्थान के बारे में आपको सामान्य जानकारी हो तो पूरे अनुवाद में आपको एक परिप्रेक्ष्य मिल जाता है और आप उसके अनुसार बात को प्रस्तुत करते हैं। उल्लिखित व्यक्ति दार्शनिक है, कवि, राजनेता या खिलाड़ी है, इसका अनुवाद की विषय-वस्तु पर प्रभाव पड़ता है और प्रस्तुति की भंगिमा पर भी। व्यक्ति संबंधी जानकारी आपको अनुवाद में और भी कई प्रकार के खतरों से बचाती है। कुछ वर्ष पूर्व एक अंग्रेजी पत्रिका में हिन्दी साहित्य संबंधी लेख में एक उद्धरण ऐसा था जिससे स.ही. वात्स्यायन और अज्ञेय के एक नहीं, दो अलग-अलग व्यक्ति होने का आभास मिलता था। एक अन्य स्थान पर समुचित जानकारी के अभाव में "अज्ञेय" और "कामसूत्र" के प्रणेता को अभिन्न मान लिया गया था। नाम से संबद्ध कोश उपलब्ध रहने और उनकी सहायता लेने पर इस प्रकार की भयंकर भूलें नहीं होतीं।

इसी प्रकार स्थान के नाम को लेकर भी आपके सामने कई दुविधाएँ हो सकती हैं, मसलन जिस भौगोलिक नाम का उल्लेख है वह नदी है, पर्वत है, नहर है, शहर या गाँव है, वह किस देश-प्रदेश में स्थित है यह जाने बिना उससे संबद्ध अनुवाद कठिन होता है।

नामों को लेकर दूसरी कठिनाई उनके उच्चारण की है। इस विषय में उच्चारण कोश के संदर्भ में बात हो चुकी है। कई नामों का उच्चारण आपको उच्चारण कोश में मिल जाता है। पर जो कोश विशेषकर नामों के लिए ही होते हैं उनमें अधिक नाम और अधिक जानकारी के साथ आते हैं। यही इन कोशों का महत्व है। इनमें अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों में यथावश्यक व्यक्ति या स्थान का नाम दिया हुआ रहता है। जिससे उस नाम का उच्चारण आपके सामने बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। इनके अलावा उच्चारण को स्पष्ट करने के लिए अन्य भी कई प्रतीकों का सहारा लिया जाता है और कोश के आरंभ में ही इन प्रतीकों के बारे में पूरी जानकारी दी जाती है। उदाहरण के लिए Webster's Biographical Dictionary से इस जानकारी का कुछ अंश देख सकते हैं। व्यक्ति के जीवन, वंश, शिक्षा, कृतित्व आदि से संबंधित और स्थान की प्रकृति, क्षेत्र, इतिहास तथा अन्य विशेषताओं से संबंधित जानकारी भी इसमें रहती है। यह सारी जानकारी किसी भी अध्येता के लिए उपयोगी होती है और अनुवादक के लिए भी इसका विशेष महत्व होता है।

उदाहरण के लिए Webster's के New Biographical Dictionary का निम्नलिखित उद्धरण देखिए :

Goe-je]gü-yə\, Jan de, ***in full*** Michael Jan de. 1836-1909. Dutch scholar. Professor at Leiden (1866-1906); edited and translated many Arabic works, esp. Description *de l'Afrique et de l'Espagne* (with **R.P.** Dozy, 1866) after idrisi; also wrote Mèmories d'histoire et de gèographie orientales (1866).

Goer-de-ler\ 'goer-də-lər\, Carl-Friedrich. 1884-1945. German politician. Second mayor of Konigsberg (1922-30); majyor of Leipzig (1930-37); federal commissioner for price control (1931-32, 1934-35); dismissed from Leipzig post by Nazi party; joined resis-tance; active in planning attempt to assassinate Hitler (1944), to be followed by coup; arrested (1944), executed by Gestapo.

Goe-the\'gœ -tə, ***Angl*** 'ga (r)-t , ***also*** 'gɔ(r)-te\, Johann Wolfgang von. 1749-1832, German poet. Licensed to practice law (1771); strongly influenced by Herder; contrib-uted to ***Sturm and Drang*** movement with tragedy ***Götz von Rerlichingen*** (1773). whose success established Shakespearean form of drama on German stage; published ***Die Leiden des jungen Werthers*** (1774), a romantic love story inspired by a chaste affair. On invitation from Duke Charles Augustus of Saxe-Weimar, settled in Weiman (1775). then the literary and intellectual center of Germany; became a leader in the life at Weimar and an associate of Wieland Herder, and later of Schiller.

सहायक कोश :

1. ***Webster's New Biographical Dictionaly,*** Marrian–Webster INC, Publishers, Massaclumsetts.
2. ***Webster's Geographical Dictionaly,***
3. ***Concise Oxford Dictionaly of English Place Names,*** 'Eilert Ekwall, Oxford, Clarendon Press.

10.4.14 साहित्य कोश

साहित्य कोश में एक या अधिक भाषाओं के साहित्य, साहित्यकारों, विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा धाराओं और साहित्यिक रचनाओं के विषय में जानकारी दी जाती है। जब आप साहित्यिक अनुवाद करते हैं तो संबद्ध विषय के प्रति आपकी अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए अन्यथा कई बार बड़ी हास्यास्पद भूलें हो सकती हैं। उदाहरण के लिए **Romanticism** का अनुवाद यदि आप "रोमानवाद" कर देते हैं तो इसमें इस शब्द से संबद्ध अधिकतर अवधारणाएँ छूट जाएँगी। आप इसके विषय में पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि इससे अभिहित रोमान का स्वरूप सामान्य प्रचलित धारणा से भिन्न है। इसीलिए इसके लिए हिन्दी में "स्वच्छंदतावाद" नाम का प्रयोग होता है (हालाँकि यह नाम भी पूरी तरह पर्याप्त नहीं है)। कई बार किसी शब्द के लिए आपको लक्ष्य भाषा में उपयुक्त प्रतिशब्द नहीं मिलता। नई अवधारणाओं के संदर्भ में प्राय: ऐसा होता है। तब आपको अपनी तरफ से शब्द गढ़ना पड़ेगा। इसके लिए भी अवधारणाओं और संदर्भों का स्पष्ट होना आपके लिए आवश्यक है। साहित्य कोश इसमें सहायक होते हैं।

सहायक कोश :

1. **भारतीय साहित्य कोश,** संपा. डा. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
2. *Dictionary of World Literary terms,* Joseph T. Shipley, George Allen & Unwin, London.
3. **साहित्यिक पारिभाषिक शब्दकोश,** डा. महेन्द्र चतुर्वेदी तथा डा. तारकनाथ बाली, बुक्स एण्ड बुक्स, दिल्ली।
4. **हिन्दी साहित्य कोश** भाग 1 और 2 ज्ञानमंडल लिमिटेड, बनारस।

10.4.15 विश्वकोश

विश्वकोश PI Encyclopaedia में विश्व के अनेक विषयों--धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान आदि--से संबद्ध जानकारी दी जाती है जिसे विषय के अधिकारी विद्वानों से लिखवाया जाता है। शीर्षकों को इसमें विषयानुसार न रखकर वर्णक्रम से रखा जाता है ताकि अध्येता किसी भी शब्द को आसानी से ढूँढ़ सके--यह किस विषय से संबद्ध शब्द है, यह पता न होने पर भी। विश्वकोश का महत्व भी साहित्य कोश के समान ही है--विषयों तथा अवधारणाओं के बारे में समुचित जानकारी देना, जो अनुवाद कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। किसी भी पुस्तकालय में आपको अनेक खंडों में प्रकाशित अंग्रेजी के अनेक विश्वकोश मिल जाएँगे, जैसे Encyclopaedia Brittanica, American Encyclopaedia, Collin's Encyclopaedia आदि। हिन्दी में भी डॉ नगेन्द्रनाथ वसु द्वारा प्रस्तुत "हिन्दी विश्व विश्वकोश" पचीस खंडों में उपलब्ध है।

10.4.16 पुराण एवं मिथक कोश

"पुराण एवं मिथक कोश" किसी संस्कृति से संबद्ध पुराण, पुराकथाओं, मिथक, पौराणिक एवं मिथकीय चरित्रों एवं घटनाओं का परिचय देते हैं। पुराण संबंधी साहित्य के संदर्भ में तो यह जानकारी आवश्यक होती ही है।, सर्जनात्मक साहित्य में भी इस जानकारी का बड़ा महत्व होता है। किसी भी भाषा के साहित्य में अपनी संस्कृति से जुड़े अनेक संदर्भ तथा बिंब होते हैं जिनकी समझ सही अनुवाद के लिए आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि किसी अंग्रेजी वाक्य में कहा जाए--This is his Achille's heel--7h क्या इसका अनुवाद "यह उसकी एकिलीज वाली एड़ी है" होगा ? यदि आपको यह पता रहे कि ट्रॉय युद्ध के अन्यतम वीर और अजेय योद्धा एकिलीज के शरीर में एक मात्र कमजोर स्थल उसकी एड़ी था जहाँ तीर मारकर उसे पराजित किया जा सकता था तो आपको सही अनुवाद--"यह उसकी (घातक) कमजोरी %"--करने if कोई असुविधा नहीं होगी। इसी प्रकार का Herculean effort सही अनुवाद ."& प्रयत्न" आप तभी कर सकेंगे जब आपको पता हो कि महाशक्तिशाली हरक्यूलिस ने अनेक असाध्य कार्य सिद्ध किए थे। हिन्दी में ही देखिए, यदि किसी व्यक्ति को "नारद मुनि" या "विभीषण" कहा जाता है तो अनुवाद में ये ही नाम रखे जाएंगे या इनसे अभिहित गुण-दोष? "वे तो पूरे नारद मुनि हैं"--का अनुवाद यदि He is an absolute Narad Muni कर दिया जाए तो भारतीय संस्कृति और पुराकथाओं से अनभिज्ञ व्यक्ति इसका क्या आशय समझेगा? ऐसे में अनुवाद में यह स्पष्ट करना होगा कि उन्हें लोगों के परस्पर लड़ाने-भिड़ाने में मजा आता है। अत: इसका उपयुक्त अनुवाद होगा--He enjoys/taken pleasure in setting people against each other.

इस प्रकार के संदर्भों को समझने के लिए पुराण एवं मिथक कोशों की सहायता लेना आवश्यक हो जाता है। यदि आप हिन्दी भाषी भारतीय हैं, तब भी आपको कई बार हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद के क्रम में भारतीय पुराकथाओं आदि संबंधी संदर्भों को स्पष्ट समझने की आवश्यकता हो सकती है। ऐसे में भी इस प्रकार के कोश उपयोगी हो सकते हैं।

सहायक कोश

1. *Puranic Encyclopaedia.* Veltam Mani, Motilal Banarsidass, Delhi.
2. **पौराणिक कोश,** राणाप्रसाद शर्मा, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी।
3. **भारतीय मिथक कोश,** डा. उषा पुरी विद्यावाचस्पति, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
4. **ग्रीस पुराण कथा कोश,** कमल नसीम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

बोध प्रश्न—1

1. सही वाक्यों पर (✔) तथा गलत वाक्यों पर (×) चिह्न लगाएँ :

   (i) अनुवादक केवल अपनी जानकारी के आधार पर ही सटीक अनुवाद कर सकता है।

   (ii) संपूर्ण अर्थग्रहण तथा समुचित प्रस्तुति के लिए अनुवादक को विभिन्न प्रकार के कोशों का सहारा लेना चाहिए।

   (iii) अनुवाद में सहायता के लिए द्विभाषिक कोश ही पर्याप्त हैं।

   (iv) शब्दकोश का एकमात्र कार्य है, किसी भाषा के शब्दों को संग्रहीत करके उनका अर्थ देना।

   (v) लोकोक्तियों में अपने भाषा-क्षेत्र की संस्कृति का सार तत्व अभिव्यक्त होता है, अत: उनका अनुवाद संभव नहीं है।

   (vi) "थिसॉरस" लेखक या अनुवादक के सामने संदर्भानुसार शब्दों के उपयुक्त तथा सटीक विकल्प रखता है।

   (vii) अनुवादक का स्रोत भाषा के शब्दों का सही उच्चारण जानने की जरूरत नहीं है क्योंकि इसका कार्य केवल लेखन से संबद्ध होता है।

   (viii) अनूद्य सामग्री के सांस्कृतिक तथा पौराणिक संदर्भ को जानने के लिए पुराण तथा मिथक कोश उपयोगी होते हैं।

   (ix) अनुवादक का कार्य केवल शब्दार्थ के ज्ञान तथा प्रस्तुति से चल जाता है, अत: विषय का ज्ञान उसके लिए आवश्यक नहीं है।

   (x) पर्यायवाची शब्द एक-दूसरे के स्थान पर अनवार्यत: प्रयुक्त नहीं हो सकते।

2. अनुवाद में स्रोत भाषा का कोश किस प्रकार सहायक होता है ?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

3. अच्छे शब्दकोश में शब्द के अर्थ के अतिरिक्त और किस प्रकार की जानकारी दी जाती है ?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

4. अनुवाद में उच्चारण कोश की आवश्यकता किन प्रसंगों में पड़ती है ?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

10.5 सारांश

कोशों के अन्य भी कई प्रकार हैं जो विभिन्न संदर्भों में आपके ज्ञान को बढ़ाते हैं और इस प्रकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आपके लेखन तथा अनुवाद कौशल में भी वृद्धि करते हैं। इस इकाई में कुछ ऐसे कोशों का उल्लेख किया गया है जिनका उपयोग अनुवादक के लिए लगभग

अपरिहार्य है। अनुवाद प्रक्रिया के दो स्तर होते हैं--समझना और समझाना या प्रस्तुत करना। अनुवादक के लिए स्रोत भाषा के शब्दों के अर्थ तथा अभिव्यक्तियों को समझना बहुत आवश्यक है। कथन से संबद्ध अवधारणाएँ तथा संकल्पनाएँ भी उसके सामने पूरी तरह स्पष्ट होनी चाहिए। दूसरी ओर उसका अभिव्यक्ति पक्ष भी सबल होना चाहिए ताकि वह मूल तथ्य को, उसके आशय तथा प्रभाव को यथासंभव सुरक्षित रखते हुए, लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत कर सकें। इसके लिए भाषा पर तो उसका अधिकार होना ही चाहिए, उसकी समझ भी स्पष्ट होनी चाहिए। हमने देखा कि भिन्न-भिन्न प्रकार के कोश अनुवाद की प्रक्रिया के दोनों ही स्तरों पर किस प्रकार सहायक होते हैं।

अलग-अलग प्रकार के कोशों की प्रकृति तथा उपयोगिता का परिचय देते हुए उस श्रेणी के कुछ उपलब्ध कोशों का सुझाव भी यहाँ साथ ही साथ दे दिया गया है ताकि हर ग्रंथ का उपयोग-संदर्भ आपके सामने स्पष्ट रहे। इन श्रेणियों के अन्य अच्छे कोश भी उपलब्ध हैं किंतु सभी ग्रंथों का उल्लेख एक पाठ की सीमा में संभव नहीं है। इनके महत्व से परिचित होकर आप स्वयं अन्य ग्रंथों का उपयोग कर सकते हैं।

इस इकाई में आपने "कोश" शब्द का अर्थ समझते हुए अनुवाद कार्य में कोशों की उपयोगिता का अध्ययन किया। आपने यह भी देखा कि कुछ कोश भाषा, अर्थात् शब्दों के अर्थ, प्रयोग, विशिष्ट प्रयुक्तियों तथा संदर्भों से संबद्ध शब्दावली, विशिष्ट अभिव्यक्ति आदि के स्तर पर सहायक होते हैं और कुछ कोश संदर्भ, विषय तथा अवधारणाओं की समझ में। अनुवादक को अर्थग्रहण तथा अर्थप्रेषण में इन सभी बातों की आवश्यकता होती है।

10.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न—1

1. (i) × (ii) ✔ (iii) x (iv) x (v) ×
   (vi) ✔ (vii) x (viii) ✔ (ix) x (x) ✔

2. अनूद्य सामग्री में किसी अपरिचित, अप्रचलित या अल्प-प्रचलित शब्द का अर्थ जानने के लिए अनुवादक को स्रोत भाषा के कोश की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त अनुवाद पुनरीक्षण में भी इसका उपयोग होता है। जहाँ स्रोत भाषा के दिए हुए शब्द के लक्ष्य भाषा में कई विकल्प हों वहाँ सही शब्द के चयन के लिए स्रोत भाषा में फिर से उन विकल्पों के प्रतिशब्दों को देखा जा सकता है और जिस विकल्प का प्रतिशब्द स्रोत भाषा में अर्थ की दृष्टि से सटीक हो, उसका प्रयोग अनुवाद में किया जा सकता है। इस प्रक्रिया में द्विभाषिक कोश की आवश्यकता भी होती है किंतु स्रोत भाषा के शब्द की अर्थ संबंधी सटीकता के निश्चय के लिए स्रोत भाषा का शब्दकोश उपयोगी होता है।

3. शब्दकोश का प्रारंभिक कार्य शब्दार्थ की जानकारी देना है। अच्छे शब्दकोश में इसके अतिरिक्त शब्दों की व्याकरणिक कोटि तथा लिंग आदि, उनके भिन्न अर्थ, प्रयोग-संदर्भ उनसे बनने वाले अन्य शब्द तथा मुहावरे तथा शब्दों का मूल स्रोत भी दिया जाता है। कई स्थानों पर उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ तथा प्रयोग को भी स्पष्ट किया जाता है। अंग्रेजी जैसी भाषाओं के शब्दकोश में शब्द का उच्चारण भी स्पष्ट किया जाता है।

4. अनुवाद में अन्य सब शब्दों का तो भाषांतर हो जाता है किंतु किसी व्यक्ति, संस्था, स्थान आदि के नाम, अर्थात् व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को ज्यों का त्यों देना पड़ता है। इसलिए उनके सही उच्चारण की जानकारी आवश्यक होती है ताकि उनका यथासंभव सही-सही लिप्यंतरण किया जा सके। सही उच्चारण की जानकारी उच्चारण कोश के माध्यम से हो सकती है।

इकाई 11 कोशों का उपयोग–I

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 संकेत प्रणाली तथा संकेतों की विशेषताएँ

  11.2.1 संकेत प्रणाली

  11.2.2 संकेत चिन्हों की कोटियाँ

11.3 शब्दकोश देखना

  11.3.1 वर्णक्रम

  11.3.2 व्याकरणिक कोटि

  11.3.3 अन्य जानकारी

  11.3.4 कोश में शब्द ढूँढ़ना

11.4 सारांश

11.5 शब्दावली

11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने विभिन्न प्रकार के कोशों की प्रकृति, प्रकार्य तथा अनुवाद कार्य में उनकी उपयोगिता के विषय में जानकारी प्राप्त की। अपने अनुवाद अभ्यास अध्ययन के क्रम में आपने सामान्य रूप से कोशों की सहायता भी ली होगी और देखा होगा कि हर प्रकार के कोश की अपनी एक पद्धति है और सामग्री प्रस्तुत करने की एक व्यवस्था है जो अध्येता के कार्य को अधिकाधिक सरल बनाती है। इस व्यवस्था को आप भली-भाँति समझ लें तो कोशों का आप और अधिक आसानी से और अधिक उपयोग कर सकेंगे। इस इकाई में विभिन्न प्रकार के कोशों की संरचना और उनके उपयोग के तरीकों पर प्रकाश डाला जा रहा है। इसके अध्ययन के बाद आप :

- सभी प्रकार के कोशों में प्रयुक्त कोड प्रणाली से परिचित हो सकेंगे,
- कोशों में प्रयुक्त संकेत-चिन्हों, संक्षिप्तियों आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे,
- हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषिक कोशों में प्रयुक्त वर्णक्रम व्यवस्था को समझ सकेंगे, और
- इस समस्त जानकारी से कोशों का उपयोग आपके लिए अधिक सरल हो जाएगा और कम समय-सापेक्ष भी।

11.1 प्रस्तावना

पठन-पाठन तथा लेखन के अनेक क्षेत्रों में व्यक्ति को अनेक प्रकार की जानकारी की आवश्यकता पड़ती है जो इसे कई तरह के कोशों से प्राप्त होती है। एकभाषिक, द्विभाषिक या बहुभाषिक शब्दकोश शब्दों के सही और सटीक अर्थ जानने में उसकी सहायता करते हैं। "थिसॉरस" किसी विषय या प्रसंग से संबद्ध अनेक समानार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों को साथ-साथ रखकर उनकी सूक्ष्म अर्थच्छायाओं तथा उनके बीच के सूक्ष्म अंतर को भी स्पष्ट करते हैं जिससे सटीक शब्द-चयन अधिक आसान हो जाता है। उच्चारण कोश, विषय कोश, विश्वकोश आदि भी अध्येता तथा अनुवादक को अनेक प्रकार की जानकारी देकर उसकी सहायता करते हैं। इकाई-10 में इन विभिन्न प्रकार के कोशों का परिचय आपको मिला और आपने देखा के अनुवाद कर्म में ये किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। किंतु इनका पूरा-पूरा उपयोग कर पाने के लिए आपको इनकी संरचना तथा पद्धति को और गहराई से समझना होगा। तभी आप अपेक्षित जानकारी को इनमें शीघ्रता और आसानी से ढूँढ़ पाएँगे और इनका पूरा लाभ उठा पाएँगे।

आइए, हम सामान्य रूप से किसी भी कोश के और मुख्य रूप से शब्दकोशों के संदर्भ में महत्वपूर्ण तत्व--संकेत प्रणाली के अध्ययन से शुरूआत करें।

11.2 संकेत प्रणाली तथा संकेतों की विशेषताएँ

कोशों में शब्द या विषय के बारे में प्रमुख सूचना के अतिरिक्त अनेक प्रकार की प्रासंगिक सूचना भी विभिन्न प्रकार के संकेतों के माध्यम से दी जाती है। इसलिए कोशों के समुचित उपयोग के लिए पहले उनकी संकेत प्रणाली को समझना आवश्यक है।

11.2.1 संकेत प्रणाली

कोश में शब्दों का वर्णक्रमानुसार संग्रह किया जाता है और विभिन्न संदर्भों के अनुसार उनके एक या अधिक अर्थ भी दिए जाते हैं। यहाँ यह बात आपके ध्यान में रहनी चाहिए कि शब्दों का अर्थ उनकी व्याकरणिक कोटि, प्रकृति तथा संदर्भ से नियंत्रित होता है। अतः दिए हुए संदर्भ में किसी शब्द का सही अर्थ जानने के लिए जरूरी है कि आपको उसके विषय में अन्य जानकारी भी हो। अच्छे कोश में किसी शब्द प्रविष्टि के विभिन्न अर्थों के अतिरिक्त उसकी व्याकरणिक कोटि (वह संज्ञा शब्द हो तो उसका लिंग, वचन भी), शब्द का स्रोत तथा विभिन्न प्रयोग भी दिए जाते हैं। कहीं-कहीं उपयुक्त उद्धरणों के माध्यम से शब्द के अर्थ को और अधिक स्पष्ट भी कर दिया जाता है।

शब्द के साथ इतनी जानकारी विस्तार से देने से अध्येता का ध्यान भटक सकता है, और अर्थबोध में उलझन हो सकती है। अतः शब्दकोश के आरंभ में ही कुछ कोड तथा संकेत तालिकाएँ दे दी जाती हैं जिनमें विभिन्न सूचनाओं के लिए संक्षिप्त संकेत निर्दिष्ट कर दिए जाते हैं। एक-दो उदाहरणों के माध्यम से देखिए शब्द के साथ यह पूरी जानकारी किस तरह दी जाती है।

उदाहरण-1

> **अज**- वि. (सं.) जिसका जन्म न हो। अजन्मा। स्वयंभू। संज्ञा पुं. 1. ब्रह्मा। 2. विष्णु। 3. कामदेव। 5. सूर्यवंशीय एक राजा जो दशरथ के पिता थे। 6. बकरा। 7. भेंड़। 8. माया। शक्ति।
> पु क्रि.वि. (सं. अद्य) अब। अभी तक (यह शब्द "हूँ" के साथ आता है)।
>
> -- (हिन्दी शब्द सागर)

यहाँ "अज" शब्द को प्रारंभ में विशेषण के रूप में लिया गया है अतः इसके बाद विशेषण का संकेत चिन्ह "वि." लगाया गया है। तत्पश्चात् कोष्ठक में "सं." इस बात का प्रतीक है कि इस शब्द का स्रोत संस्कत भाषा है। इसके बाद विशेषण के तौर पर इसके तीन अर्थ दिए गए हैं। इसी का समध्वनिक एक संज्ञा शब्द भी है। प्रविष्टि की दूसरी पंक्ति में यह दिखलाते हुए यह संकेत भी किया गया है कि यह पुल्लिंग (पुं.) शब्द है। संज्ञा के तौर पर इसके अनेक अर्थ बतलाने के बाद प्रविष्टि के अंतिम हिस्से में यह बताया गया है कि पुरानी भाषा (पु.) में यह क्रिया विशेषण (क्रि.वि.) के रूप में भी प्रयुक्त होता है जहाँ इसका विकास संस्कत शब्द "अद्य" से हुआ और इसका प्रयोग "हूँ" के साथ होता है ("अजहूँ)।

इस प्रकार इस शब्द से संबद्ध पूरी जानकारी यहाँ दे दी गई है। आपके सामने कहीं यह शब्द आता है तो आप उसके संदर्भ के अनुसार उसका अर्थ समझ सकते हैं। एक और उदाहरण लीजिए :

उदाहरण-2

> **पाटला**-संज्ञा स्त्री. (सं.) 1. पाडर का वृक्ष। उदा०-**संसार महु पुरुष त्रिविध पाटल, रसाल, पनस समा।** 'मानस'। 2. लाल लोध। 3. दुर्गा का एक रूप। 4. गुलाब। उदा०-**बंधूको बिंबो, कमल तिल जू, घाटला और चँवेली। चंपा कस्मीरो, घरिहि बिघ, हयौं फूलिहै एक बेली।** --छंदार्णव।
>
> -- (हिन्दी शब्द सागर)

इस उदाहरण में देखिए, अन्य जानकारी के साथ पहले अर्थ को स्पष्ट करने के लिए "मानस" से और चौथे अर्थ को स्पष्ट करने के लिए "छंदार्णव" से उदाहरण भी दे दिए गए हैं।

अब एक उदाहरण अंग्रेजी से भी देखिए :

उदाहरण-3

> **December, di-semher, n., Formerly the tenth, now the twelfth month of the year.—adj. Decem-berish, Decem-berly, wintry, cold— n. Decem'-brist, one of those who took part in the Russian conspira of December, 1825 [L. December-decem, ten]**
>
> **— [Chamber's Twentieth century Dictionary]**

देखिए, यहाँ एक सामान्य से अतिपरिचित शब्द के साथ कितनी सूचना दी गई है। पहले इसका उच्चारण समझाकर, फिर इसकी व्याकरणिक कोटि—संज्ञा (n.) का संकेत किया गया है। फिर यह बतलाया गया है कि पहले यह वर्ष का दसवाँ महीना था मगर अब बारहवाँ महीना है। फिर इसके – इससे ही बने हुए – विशेषण रूप और उनके अर्थ दिए गए हैं। इसके बाद इससे बने हुए एक और संज्ञा शब्द और उसका ऐतिहासिक संदर्भ दिया गया है। अंत में बतलाया गया है कि यह शब्द अंग्रेज़ी में लैटिन से आया है जहाँ decem का अर्थ "दस" होता है।

यह तमाम जानकारी कुछ विशेष संकेतों या कूट चिन्हों के माध्यम से आपके सामने आई है। इसी से आप समझ सकते हैं कि कोश में संकेत चिन्हों का कितना महत्व है और शब्दकोश में शब्दों के अर्थ को समझने के लिए इनकी जानकारी कितनी जरूरी है। सभी शब्दकोशों के आरंभ में कोश में प्रयुक्त संकेतों की तालिका दी जाती है। उदाहरण के लिए नीचे उद्धृत की हुई तालिका-I देखें। "अं."/ "अ."/ "बँग." आदि संकेत यह दिखलाने के लिए हैं कि संबद्ध शब्द का स्रोत अंग्रेजी/अरबी/बँगला भाषा है। शब्द के साथ उप. लगा हो तो अध्येता समझ सकता है कि वह उपसर्ग है। "क्रि.अ.", "क्रि.स.", "प्रे. रूप" जैसे संकेत क्रिया शब्द की प्रकृति का द्योतन करते हैं। "जा.मं.", "प्रिय." आदि संकेत बतलाते हैं कि शब्द के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उद्धरण कहाँ (क्रमश: "जानकी मंगल" और "प्रिय प्रवास") से लिया गया है। इन संकेतों के माध्यम से शब्द की श्रेणी, प्रकृति, प्रकार्य, संदर्भ, स्रोत, प्रयोग आदि के विषय में अधिक से अधिक जानकारी दे दी जाती है। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दकोश से उदाहरण के लिए तालिका-2 देखिए। शब्द की व्याकरणिक कोटि तथा प्रकृति, स्वरूप, विषय-संदर्भ, स्रोत, उद्धरण संदर्भ आदि अनेक विषयों के संकेत उसके बारे में दी गई जानकारी को समझना अधिक आसान तो बनाते ही है, साथ ही यह भी दिखलाते हैं कि शब्द के बारे में कितनी दृष्टियों से विचार करके कितनी जानकारी दी जा रही है।

शब्दकोशों में-- मुख्यत: अंग्रेजी शब्दकोशों में आपको उच्चारण संकेत भी मिलेंगे ताकि शब्द को आप लिपि तथा ध्वनि, दोनों, ही स्तरों पर जान सकें। आप जानते हैं कि अंग्रेजी में एक ही वर्ण प्रसंगानुसार विभिन्न ध्वनियों के लिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी शब्द Put ("पुट") और but ("बट") का उदाहरण प्रसिद्ध ही है जहाँ लगभग एक ही स्थिति में आने पर भी स्वर वर्ण u दो अलग-अलग ध्वनियों के लिए प्रयुक्त होता है। अत: वर्तनी से उच्चारण का निर्णय कठिन है। तालिका-3 देखिए। अंग्रेजी के प्रथम वर्ण a के ही विभिन्न उच्चारणों के लिए चार अलग-अलग ध्वनि संकेतों का प्रयोग किया गया है। ग्रंथों की पूरी तालिकाओं के कुछ अंश आपकी बेहतर समझ के लिए उदाहरण के रूप में यहाँ दिए गए हैं। उच्चारण संबंधी तालिकाओं में पहले कॉलम में भाषा में आने वाली ध्वनियों के संकेत हैं जो अंग्रेजी की वर्णमाला से मेल खाते हुए भी उसके मात्र पारंपरिक वर्ण नहीं हैं। आगे के कॉलम में इन संकेतों के सही उच्चारण का परिचय देने के लिए भाषा के बहुप्रचलित शब्द दिए गए हैं जिनके आधार पर आप जान सकें कि शब्दकोश में जहाँ भी ये संकेत आएँगे, उनका उच्चारण क्या होगा। तालिकाओं के अंतिम कॉलम में इन उदाहरणों के ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण के साथ ही (-) चिह्न के माध्यम से शब्द के अक्षरों का विभाजन भी दिखला दिया गया है। जिसकी जानकारी अंग्रेजी के सही उच्चारण के लिए बहुत आवश्यक है। इसलिए इन उच्चारण संकेतों का समुचित ज्ञान शब्दकोश के किसी भी अध्येता के लिए बहुत जरूरी है। इस बात पर ध्यान दें कि शब्दों का ध्वन्यात्मक लिप्यंतरण रोमन लिपि में नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों में हुआ है।

तालिका—1

संकेत सूची

अं.	=	अंग्रेजी	देश.	=	देशज
अ.	=	अरबी	दोहा.	=	दोहावली
अनु.	=	अनुकरणबोधक	नंददास.	=	नंददास ग्रंथावली
अप.	=	अपभ्रंश	पं.	=	पंजाबी भाषा
अ.मा.	=	अर्धमागधी	पा.	=	पाली भाषा
अल्पा.	=	अल्पार्थक	पा. मं.	=	पार्वती मंगल
अव.	=	अवधी	पुं.	=	पुल्लिंग
अव्य.	=	अव्यय	पुर्त.	=	पुर्तगाली भाषा
इब्रा.	=	इब्रानी	पृ. रासो	=	पृथ्वीराज रासो
उ.	=	उदाहरण	प्र.	=	प्रयोग
उच्चा.	=	उच्चारण सुविधा के	प्रत्य.	=	प्रत्यय
लिये			प्रा.	=	प्राकृत भाषा
उड़ि.	=	उड़िया	प्रिय.	=	प्रियप्रवास
उप.	=	उपसर्ग	प्रे. रूप	=	प्रेरणार्थक रूप
एक व.	=	एकवचन	फा.	=	फारसी
कविता.	=	कवितावली	बँग.	=	बँगला भाषा
कबीर.	=	कबीर ग्रंथावली	बहु. व.	=	बहुवचन
कर्ता	=	कर्ता कारक	बरवै.	=	बरवै रामायण
केशव.	=	केशव ग्रंथावली	बिहारी.	=	बिहारी रत्नाकर
कोंक.	=	कोंकणी	भाव.	=	भाववाचक संज्ञा
क्रि.	=	क्रिया	भूषण.	=	भूषण ग्रंथावली
क्रि. अ.	=	क्रिया अकर्मक	मानस	=	रामचरितमानस
क्रि. वि.	=	क्रियाविशेषण	मि.	=	मिलाओ
क्रि. स.	=	क्रिया सकर्मक	मुसल.	=	मुसलमान
क्व.	=	क्वचित् प्रयोग	मुहा.	=	मुहावरा
गीता.	=	गीतावली	मो.वि.	=	मोनियर विलियम्स
गुज.	=	गुजराती भाषा	(संस्कृत-		
घनानंद.	=	घनानंदकवित्त			इंग्लिश डिक्शनरी)
चीनी	=	चीनी भाषा	यू.	=	यूनानी भाषा
जा. मं.	=	जानकीमंगल	यौ.	=	यौगिक
जापानी	=	जापानी भाषा	रानी केतकी.	=	रानी केतकी की कहानी
ज्या.	=	ज्यामिति	रामलला.	=	रामलला नहछू
ज्यो.	=	ज्योतिष	लश.	=	लशकरी भाषा
ti.	=	डिंगल	लै.	=	लैटिन
तर्क.	=	तर्कशास्त्र	वा.	=	वाचस्पत्य कोश
ता.	=	तामिल	वि.	=	विशेषण
तु.	=	तुर्की	विनय.	=	विनयपत्रिका
दे.	=	देखो	वै.	=	वैदिक

-- **'संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर'** से

List of Abbreviations used in this Dictionary

abbrev. .... abbreviation
abl. .... ablative
acc. .... according
accus. .... accusative
adj(s) .... adjective(s)
adb(s). .... adverb(s)
acro . ... acronautics
agri. .... agriculture
alg. .... algebra
anat. .... anatomy
alch. .... alchemy
anc. .... ancient(ly)
ant. .... antiquities
anthrop....... anthropology
aor. .... aorist
app. .... apparently
approx. .... approximately
arch. .... archaic
archaeol. .... archaeology
archit. .... architecture
arith. .... arithmetic
astrol. .... astrology
astron. .... astronomy
at. numb. ... atomic number
attrib. .... attributive(ly)
augm. .... augmentative

B. .... Bible
biol. .... biology
book-k........ book-keeping
bot. .... botany

c. .... about
cent. .... century
cf. .... compare
chem. .... chemistry
cog. .... cognate
coll. .... colloquial(ly)
collec. .... collective(ly)
comp. ....comparative. composition
conj(s). .... conjunction(s)
conn. .... connected. connexion
contr. .... contracted, contraction
cook. .... cookery
corr. .... corruption
crystal. .... crystallography

dat. .... dative
demons. ..... demonstrative
der. .... derived, derivation

Dict. .... Dictionary
dim. .... diminutive
dub. .... doubtful

econ. .... economics
e.g. ....for example
elect. .... electricity
entom. .... entomology
erron. .... erroneous(ly)
esp. .... especially
ety. .... etymology

facet. .... facetiously
fam............. familiar. family
fem. .... feminine
fig. .... figurative(ly)
fl. .... floruit
fol. .... followed, following
fort. .... fortification
freq. .... frequentative
fut. .... future

gen. .... genitive
gener. .... generally
geog. .... geography
geol. .... geology
geom. .... geometry
ger. .... gerundive
gram. .... grammar

her. .... heraldry
hist. .... history
hort. .... horticulture
hyperb. .... hyperbolically

i.e. .... that is
illit. .... illiterate
imit. .... imitative
imper. .... imperative
impers. .... impersonal(ly)
incl. .... including
indic. .... indicative
infin. ....infinitive
inten(s) ...... intensive
interj(s) ...... interjection(s)
interrog. ..... interrogative(ly)
irreg. .... irregular(ly)

lit. .... literal(ly)
log. .... logic

mach. .... machinery
masc. .... masculine

mech. .... mechanics
med. .... medicine
metaph. ...... metaphysics
meteor. .... meteorology
mil. .... military
Milt. .... Milton
min. .... mineralogy
mod. .... modern
mus. .... music
myth. .... mythology

n(s). .... noun(s)
nat. hist. .... natural history
naul. .... nautical
neg. .... negative
neut. .... neuter
nom. .... nominative
n.pl. .... noun plural
n. sing. .... noun singular
N.T. .... New Testament
North. .... Northern
obs. .... obsolete
opp. .... opposed, opposite
opt. .... optics
org. .... organic
orig. .... original(ly)
O.S. .... Old Style
O.T. .... Old Testament

p., part. ...... participle
p. adj. .... participial adjective
paint. .... painting
palacog. ..... palacography
pa.p. .... past participle
pass. .... passive
pa.t. .... past tense
path. .... pathology
perf. .... perfect
perh. .... perhaps
pers. .... person(al)
petr. .... petrology
pfx. .... prefix
phil(os). ..... philosophy
philol. .... philology
phon. .... phonetics
phot. .... photography
phys. .... physics
physiol. .... physiology
pl. .... plural
poet. .... poetical
pol. econ.... political economy
pop. .... popular(ly)
poss. .... possessive.

Pr. Bk.	Book of Common Prayer
pt.p.	present participle
prep(s).	preposition(s)
pres.	present
pet.	preterite
pint.	printing
pev.	privative
pob.	probably
pron(s)	pronoun(s)
pron.	pronounced, pronunciation
prop.	properly
pros.	prosody
prov.	provincial
psych..........	psychology
q.v.	which see
R.C.	Roman Catholic
redup.	reduplication
refl(ex).	reflexive
rel.	related, relative
rhet.	rhethoric
R.V.	Revised Version
sculp.	sculpture
Shak.	Shakespeare
sig.	signifying

—*Chamber's* *Twentieth Century Dictionary)*

Detailed Chart of Pronunciation

Respelling is a rough method of showing pronunciation compared with the use of phonetic symbols, but the following table will be useful for reference in cases of doubt.

Vowels and Diphthongs in Accented Syllables

			Sound	Examples	Pronunciation
ā	as in	(1)	**fate**	name, aid. rein	***hām, ād, rān***
		(2)	bare	tare, wear, hair, heir	***tār, wār, hār,*** *dr*
ä	„		far	harm, heart, palm, toilette	***härm, härt, päm, twä-let***
à	„		castle (**long** or short)	ask, bath	***àsk, bàth***
a	„		sat	bad, have	*bad, hav*
è	„	(1)	me	**lean,** keel, **dene,** chief, **seize**	***ien, kel,*** *den, chef,* ***sez***
		(2)	tear	gear. sheer, here, bier	*ger, skr,* ***lier, ber***
c	„		**pet**	**red, thread, said, bury**	*red,* ***thred,*** *sed, ber'i*
ə	„		her	herd, heard. **thirst**	*hard, hard,* ***therst***
i	„	(1)	mine	side, shy, dye, height	***sid,*** *shi, di, hit*
		(2)	sire	hire. **byre**	***hir, bir***
i	„		bid	**pin, busy, hymn**	*pin,* ***biz'i,*** *him*
ò	„	(1)	mote	bone, mad, **foe.** low, dough	***bōn, rōd,*** *iō, W,* ***dō***
		(2)	more	fore, **soar, floor**	***fōr, sōr, fōr***
o	„	(1)	**got**	***shot, shone***	*shot, shun*
		(2)	son	*form*	*form*
aw	„	(a)	pause;	haul, lawn, **fall, bought;**	***hawl,*** *lam,* ***fawl, bawt***
		(b)	swarthy	**swarm**	***swawrm***
oo	„	(1)	moo?	fool, sou	***fōōl, sōō***
		(2)	**poor**	boor, tour	***bōōr, tōōr***
OO	„		**foot**	**good,** full. would	*good, fool, wood*
u	„	(1)	mute	tune, due, newt, view	***tun,*** *du,* ***nut,*** *vu*
	„	(2)	**pure**	endure	*en-dw'*
(y) oo	„	(1)	super (u or 00)	supreme	***s(y)ōō-prim'***
		(2)	lure	lurid	***l(y)ōō-rid***
ow	„	(1)	house	mount, **frown**	*mount, frown*
		(2)	hour	**scur**	***sowr***
oi	„		**boy**	toy, buoy. soil.	***toi,*** *boi, soil*

Vowels in Unaccenred Syllables

			Sound	Examples	Pronunciation
,	as in	(a)	silver	beggar. adviser, sailor power	***beg'ər, ad-viz'ər, sāl'ər, pow'ər*** (or ***pow'r)***
		(b)	absent	element, presence	***el'ə-mənt, prez'əns***
		(c)	infant	tenant	***ten'ənt***
		(d)	bearable	arable, amiable	***ar'ə-bl, dm'i-ə-bl***
		(e)	**away**	abeam. accuse	***ə-bem', ə-kuz'***
		(f)	squadron	cauldron. **telephonist**	***kawl' drən, ti-lef'ə-nist***
		(g)	**tomorrow**	tobacco	***tə-bak'ō***
		(h)	autumn	quantum	***kwan'təm***
		(i)	**faithful**	grateful	***gradt'fəl***
		(j)	adventure	**tenture,** figure	***ten'yər, fig'ər***
		(k)	nation	mention, station	***men'shən, std'shən***
		(l)	anxious	precious	*pre'****shəs***
		(m)	bargain	curtain, villain	***kur'tən, vil'ən***
		(n)	menace	solace	***sol'əs*** (or ***sol'is)***
	„	(a)	civil	anvil, evil	*an'vil,* ***e'vil*** *(or e'vl)*
		(b)	blessed (adj.)	beloved (adj.)	***bi-luv'id***
		(c)	packet	basket	***bas'kit***
		(d)	terrace	solace	***sol'is*** (or ***sol'əs)***
		(e)	desolate	delicate	***del'i-kit***
		(f)	cottage	manage, **marriage**	***man'ij, mar'ij***
		(g)	**petty**	**silly,** pretty	***sil'i, prit'i***
		(h)	catastrophe	apostrophe	***ə-pos'trə-fi***
		(i)	become	bequest, **depart, pedestrian,** regard, seclude	***bi-kwest', di-pārt',*** *pi-des'* ***tri-ən, ri-gārd', si-klōōd'***
No vowel		(a)	medal	penal, devil, evil	***pe'nl,*** *dev'l, g'vl (or g'vil)*
		(b)	**burdon**	arson	*dr'sn*
		(c)	special	initial	***in-ish'l***
		(d)	flower	power	***pow'r*** (or ***pow'ər)***

Apostropte (a) Used to mark such pronunciations as *t'h* (where the sound is two separate consonants)

(b) Used in French words such as timbre (*tan'-br'*)

Constant

		Sound	Examples	Pronunciation
ch	as in	church	much, match, lunch	*much, much, lunch (or lunch)*
d	,,	dog	ado, dew	***e-dōō', du***
dh	,,	then	father	***fä'dher***
f	,,	fade	faint, phase, rough	***fānt, fāz, ruf***
g	,,	game	gold, guard, ghastly	*gold, gard, **gast'li***
gh	,,	example	exact	***igz-akt'***
h	,,	home	happy	*hap'i*
hh	,,	loch	coronach, leprechaun	***kor'ə-ndhh, lep'rə-hhawn***
j	,,	judge	jack, gentle, ledge, region	*jak, **jeu'tl**, lej, **re'jən***
k	,,	king	keep, cat, chorus	*kep, kat, **kor'əs***
ks	,,	exclaim	expand, lax	***eks-pand', laks***
kw	,,	queen	quite, coiffeur	***kwit, kwa-fər***
ng	,,	sing	fling, single	*fling, sing'gl*
ngk	,,	monkey	precinct, adjunct	*pre'**singkt**, aj'ungkt*
n'	,,	avant (Fr.)	monseigneur	*mon'**-sen-yər***
s	,,	sad	salt, city, circuit, scene, mass	***sawlt**, sit'i, **sər'kit,sen**, mas*
sh	,,	ship	shine, machine, sure, lunch, Asiatic	*shin, ma-shen', **shōōr**, **lunsh** (or lunch), ash-i-at'ik (or d-zhi-at'ik)*
th	,,	thin	three	*thre*
y	,,	yes	young, bastion, question	*yung, **bast'yən, kwest'yən***
z	,,	zebra	zoo, was, roads	*zōō, waz, **rodz***
zh	,,	pleasure	azure, measure, conge, Asiatic	*azh'ər (or a'zhur), mezh'ər, kon'-zha, d-zhi-at'ik (or ash-i-at'ik)*

Chamber's Twentieth Century Dictionary

अंग्रेजी उच्चारण में बलाघात का भी बहुत महत्व है एक ही वर्तनी वाले शब्द भी बलाघात के अंतर से अलग-अलग आशय या अर्थ देने लगते हैं। उदाहरण के लिए एक शब्द लीजिए -- *present* I इसमें दो अक्षर *(syllables)* हैं *pres-ent* I इनमें यदि पहले अक्षर पर बलाघात होता है *(pres-ent)* तो यह संज्ञा शब्द होगा और इसका अर्थ होगा--"उपहार", और यदि दूसरे अक्षर पर बलाघात हुआ (pres'-ent) तो यह क्रिया शब्द होगा जिसका अर्थ होगा--"प्रस्तुत करना"। इसलिए अंग्रेजी शब्दकोशों में उच्चारण और अक्षर विभाजन के साथ ही बलाघात का चिह्न (') भी रहता है। तालिका-3 के अध्ययन से ये बातें आपके आगे स्पष्ट हो जाएँगी। आप अन्य शब्दकोश लेकर भी इस विषय में अध्ययन करें। यह इसलिए भी आवश्यक है कि सामान्य रूप से कुछ संकेत चिह्न तो सभी कोशों के लिए मानक हो गए हैं, पर कभी-कभी कुछ कोशकार अपने कुछ विशिष्ट चिह्नों का भी प्रयोग करते हैं या सामान्यतः प्रचलित चिह्नों का सामान्य से अलग हटे हुए किसी अर्थ में प्रयोग कर लेते हैं। अतः किसी भी शब्दकोश का उपयोग करने से पहले उसकी संकेत प्रणाली का अध्ययन बहुत आवश्यक है।

11.2.2 संकेत चिन्हों की कोटियाँ

पिछले उपभाग में कोशों में प्रयुक्त सामान्य संकेत प्रणाली का उल्लेख करते हुए इस बात की ओर भी ध्यान दिलाया गया है कि विभिन्न कोशों में संकेत चिह्न या उनसे संकेतित अर्थ कुछ अलग भी हो सकते हैं। इसलिए हर कोश में संकेत चिह्नों का अध्ययन आवश्यक है। यह अध्ययन तब आपके लिए अधिक सरल हो जाएगा जब आप यह स्पष्ट रूप से समझ लें कि ये संकेत चिह्न कितने प्रकार के होते हैं और किन-किन संदर्भों से जुड़े हुए होते हैं।

कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों को मोटे तौर पर तीन वर्गों में रखा जा सकता है --

(1) मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न,
(2) संक्षिप्तियों पर आधारित संकेत चिह्न; और
(3) विशिष्ट संकेत चिह्न।

(1) मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिन्ह

शब्दकोशों का अध्ययन करें तो आप देखेंगे कि उनमें सारे वर्ण और शब्द एक समान, एक-सी आकृति, आकार और रंग के नहीं होते। कुछ **"बोल्ड"** (अधिक मोटी रेखाओं में और अधिक काले) होते है, कुछ **इटैलिक्स** में (तिरछे), तो कुछ **कैपिटल** वर्णों में लिखे होते हैं। इस विविधता के पीछे कोशाकार का निश्चित अभिप्राय होता है। मुद्रण की हर शैली का अपना विशिष्ट संदर्भ और आशय होता है। उदाहरण के लिए "बोल्ड" (मोटे तथा काले) अक्षरों का प्रयोग प्राय: हर कोश में शब्द प्रविष्टि के लिए होता है, चाहे वह प्रविष्टि मुख्य हो या गौण। मोटे अक्षरों में छपे होने के कारण स्वाभाविक रूप से ही उस शब्द की ओर ध्यान आकर्षित होता है और यह पता चल जाता है कि यही वह शब्द है जिसके विषय में अर्थ आदि सारी सूचना आगे अपेक्षाकृत बारीक अक्षरों में दी गई है।

इटैलिक्स या तिरछे अक्षरों का प्रयोग अमूमन रोमन लिपि के कोशों में ही होता है और अलग-अलग कोशों में इसे अलग-अलग कार्यों के लिए व्यवहृत किया जाता है। चैम्बर्स शब्दकोश में इसका प्रयोग प्रविष्टि के बाद उसके उच्चारण के निर्देश के लिए किया गया है तो लांगमैन, हॉर्नबी और कोलिन्स शब्दकोशों में दृष्टान्त वाक्यों के लिए। कामिल बुल्के के अंग्रेजी-हिन्दी कोश में इटैलिक्स का प्रयोग मुख्य अंग्रेजी प्रविष्टि के बाद दिए गए सभी अर्थ संकेतों के लिए हुआ है। आप किसी भी शब्दकोश के उपयोग के पहले उसकी भूमिका तथा संकेत सूची को देखकर सुनिश्चित कर लें कि उसमें इटैलिक्स का प्रयोग किस संदर्भ में हुआ है।

कैपिटल अक्षरों का प्रयोग भी रोमन लिपि में ही होता है और इटैलिक्स की ही भाँति इन्हें भी कोशकार अलग-अलग प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त करते हैं। लांगमैन के शब्दकोश में इसका प्रयोग यह दिखलाने के लिए हुआ है कि प्रविष्टि में दिया गया शब्द अपने से बड़े एक वर्ग का सदस्य या उपवर्ग है, जैसे :

Jacket - GARMENT

यहाँ कैपिटल वर्णों के प्रयोग से यह समझाया गया है कि **Garment** (वस्त्र) एक बड़ा वर्ग है जिसके अंतर्गत **Jacket** (जैकेट) भी आता है। **Concise Oxford Dictionary** में कैपिटल वर्णों का प्रयोग यह बताने के लिए हुआ है कि यह मुख्य प्रविष्टि से व्युत्पन्न शब्द बनाने वाला कोई प्रत्यय या उपसर्ग है, जैसे : **Fuzzy - Fuzziness**

इसी प्रकार अन्य शब्दकोशों में कोशकारों ने इनका प्रयोग अपनी आवश्यकतानुसार किया है।

(2) संक्षिप्तयों पर आधारित संकेत चिन्ह

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, कोश में प्रविष्टि संबंधी पूरी जानकारी को विस्तार से देना न संभव है न उपयुक्त क्योंकि, एक तो यह बहुत स्थान-सापेक्ष है और दूसरे, इतने विस्तृत घटाटोप में स्वयं शब्द प्रविष्टि दब जाती है। इसलिए अधिकतर जानकारी के लिए शब्द के संक्षिप्त रूप का प्रयोग होता है। संकेत सूची की तालिका 1 तथा 2 के अध्ययन से संक्षिप्त की अवधारणा तथा उपयोग आपके सामने स्पष्ट हो गए होंगे। सामान्यत: सभी कोशों में अपनी भाषा के अनुसार एक-सी ही संक्षिप्तियों का प्रयोग होता है जैसे "उदा." (उदाहरण), "दे." (देखें), "प्रे." (प्रेरणार्थक), वि. (विशेषण), **adj., (adjective), 'coll.' (colloquial), 'fr.' (from), 'prep.' (preposition)** आदि। किन्तु कुछ कोशों में अपनी आवश्यकतानुसार कोशकार कुछ विशेष संक्षिप्त रूपों का प्रयोग भी कर लेते हैं। अत: कोश का उपयोग करने के पहले आपके लिए उसमें प्रयुक्त संक्षिप्तियों की जानकारी जरूरी है जो कोश के आरंभ में दी गई तालिकाओं से आसानी से मिल सकती है।

(3) विशेष संकेत चिन्ह

शब्दकोशों में कई बार शब्द-संक्षिप्त के स्थान पर कुछ विशेष संकेत चिन्हों का प्रयोग भी किया जाता है जिनसे अत्यंत संक्षेप में ही अध्येता तक अभीष्ट सूचना पहुँच जाती है। सामान्य कोष्ठक (()) या कोणीय (<>), कोष्ठक, डैश (-), तारक (*) आदि इसी प्रकार के चिह्न हैं। इनमें से कुछ चिह्न तो प्राय: मानक हो चले हैं किंतु कुछ चिन्हों का प्रयोग अलग-अलग कोशकार अलग-अलग अर्थ में करते हैं। उदाहरण के लिए तारक (*) का प्रयोग कामिल बुल्के के अंग्रेजी-हिन्दी कोश में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों का द्योतन करता है तो कालिका प्रसाद के "वृहत्

हिन्दी कोश'' में पद्य में प्रयुक्त शब्दों का। पद्य में ही प्रयुक्त शब्दों (तथा पुरानी हिन्दी के शब्दों) के लिए ''हिन्दी शब्दसागर'' में एक अलग ही चिह्न (पु.) का प्रयोग किया गया है। विभिन्न प्रकार के कोष्ठकों (( ), [ ], / /, < >,) का प्रयोग भी कोशकारों में अलग-अलग उद्देश्य से किया है। यहाँ आपको इनके अतिरिक्त भी कुछ सामान्य चिह्नों का परिचय दिया जा रहा है पर किसी भी कोश के उपयोग के पहले आपके लिए उचित होगा कि कोश की संकेत तालिका में देखकर समझ लें कि उसमें किन चिह्नों का प्रयोग किस उद्देश्य से किया गया है।

~ – इस चिह्न (लहरिल डैश) का प्रयोग सामान्यत: उन शब्दों या शब्दांशों के पहले होता है जो मूल प्रविष्टि में जुड़कर कोई नया शब्द बनाते हैं। उदाहरण के लिए :

उदाहरण —4

> 1. **(Family)** परिवार, घराना, **2. (lineage)** वंश, कुटुम्ब, कुल, **3. (race)** जाति, **4. (class)** वर्ग, कुल, परिवार, **joint ~** संयुक्त परिवार, **–allowance** परिवार भत्ता, **–custom** कुलाचार, **man,** गृहस्थ, **~ members.** परिवार सदस्य, कुटुम्बी, **~ name.** कुल-नाम, वंश-नाम, **~ planning,** परिवार नियोजन, **~ tree,** वंश-वृक्ष, वंशावली*, **~ wage,** परिवार-मजदूरी*।
>
> --**(हिन्दी–अंग्रेजी कोश, कामिल बुल्के)**

यहाँ देखिए, मूल प्रविष्टि है -- **Family** । अन्य शब्द इसके आगे **(Joint Family)** या पीछे **(Family custom)** जुड़कर एक नया पद बना रहे हैं। इस शब्द-संयोग में जिस जगह मूल प्रविष्टि **(Family)** को आना चाहिए, वहाँ इसे बार-बार न दोहराकर केवल इस चिह्न (~) के द्वारा संकेतित कर दिया गया है। अन्य भी कई कोशों में इस चिह्न का प्रयोग प्राय: इसी उद्देश्य से हुआ है।

= – गणित की ही भाँति कोशों में भी इस चिह्न का प्रयोग समान, समतुल्य या पर्यायवाची शब्दों के लिए होता है, जैसे :
खालसा - वि. (अ. खालिस = शुद्ध).....

– इसका प्रयोग विलोम शब्द के लिए होता है।

< इस चिह्न का प्रयोग उस शब्द के पहले होता है जिससे प्रविष्टि शब्द की व्युत्पत्ति हुई हो।

~ – ''हिन्दी शब्दसागर'' में इसका प्रयोग धातु का संकेत देने के लिए हुआ है।

⥣ – इस चिह्न का प्रयोग पर्यायवाची नहीं बल्कि मिलते-जुलते अर्थ को व्यक्त करने के लिए होता है। **Collins** के **Cobuild** नामक कोश में इसका प्रयोग का उदाहरण देखिए - **delicate ⥣ beautiful; Costume ⥣ clothing**

? प्रश्न चिह्न का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ शब्द की व्युत्पत्ति में संदेह हो।

इनके अतिरिक्त अन्य भी कई चिह्न †, ‡, +, ◊ § आदि हैं जिनका उपयोग कोशकारों ने अपने-अपने तरीके से किया है। इन सभी चिह्नों का उद्देश्य एक ही है - कम से कम स्थान में अधिक से अधिक सूचनाओं का संयोजन।

संकेत प्रणाली की सामान्य जानकारी के बाद हम अब भाषिक कोशों की चर्चा करते हुए देखेंगे कि उनमें प्रविष्टियों की व्यवस्था कैसी होती है और वांछित शब्दों को उनमें कैसे जल्दी से जल्दी ढूँढ़ा जा सकता है।

बोध प्रश्न—1

क) शब्दकोशों में संकेत प्रणाली से आप क्या समझते हैं? इसकी उपयोगिता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सही के आगे (✔) का तथा गलत के आगे (×) का चिह्न लगाइए :

1. संकेत चिह्नों के प्रयोग से कोश में स्थान की बचत होती है। ( )
2. हर कोश में संकेत चिह्न एक-सा ही अर्थ देते हैं। ( )
3. संकेत चिह्नों के बिना भी शब्दों का अर्थ आसानी से समझा जा सकता है। ( )
4. अंग्रेजी के शब्दकोशों में उच्चारण संकेत नहीं होते। ( )
5. कैपिटल अक्षरों का प्रयोग हिन्दी शब्दकोशों में भी होता है। ( )
6. "बोल्ड" अक्षरों का प्रयोग हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के कोशों में होता है। ( )
7. संकेत चिह्न का अर्थ है, संकेतक शब्दों के संक्षिप्त रूप। ( )
8. बलाघात के अंतर से अंग्रेजी शब्दों का अर्थ बदल जाता है। ( )

ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. कोशों में प्रयुक्त संकेत चिह्नों की मुख्य रूप से तीन कोटियाँ होती हैं : मुद्रण युक्तियों पर आधारित संकेत चिह्न, विशिष्ट संकेत चिह्न और .... पर आधारित संकेत चिह्न।
(शब्दों/संख्याओं/संक्षिप्तियों)
2. पर्याय या समानार्थी शब्द के द्योतन के लिए .... चिह्न का प्रयोग होता है।
(* / = / ≠)
3. मुद्रण से संबंधित तीन प्रमुख युक्तियों का प्रयोग अंग्रेजी कोशों में मिलता है : बोल्ड, कैपिटल वर्ण और .... । (इटेलिक्स/शब्द संक्षेप/विशिष्ट संकेत चिह्न)
4. .... संकेत चिह्न संबद्ध शब्द संयोगों में प्रविष्टि शब्द का द्योतन करता है।
(+ / ~ / ‖)
5. अंग्रेजी शब्दों का सही उच्चारण बताने के लिए .... का प्रयोग किया जाता है।
(अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों/रोमनलिपि/इटैलिक्स)
6. "बोल्ड" अक्षरों का अर्थ है .... ।
(कैपिटल वर्ण/तिरछे अक्षर/मोटी रेखाओं में काले अक्षर)

घ) दी हुई सामग्री के आधार पर इन संक्षिप्तियों के पूरे रूप लिखिए :

अं	....	n.	....
क्रि.	....	B.	....
दे.	....	arith.	....
सर्व.	....	e.g.	....
प्रत्य.	....	nom.	....
प्रे. रूप	....	prep(s)	....
मुहा.	....	em.	....

11.3 शब्दकोश देखना

शब्दकोश का संबंध भाषा की लघुतम सार्थक स्वतंत्र इकाई - शब्द - से होता है। किसी भी भाषा के सामान्य शब्दकोश में उस भाषा के शब्दों का अर्थ सहित संग्रह होता है और साथ ही उन शब्दों के संबंध में व्याकरणिक, संदर्भगत तथा प्रयोग संबंधी जानकारी भी होती है। इस जानकारी का पूरा लाभ उठा पाने के लिए आपको शब्दकोश में दिए हुए कोड तथा संकेतों को ठीक से समझना आना चाहिए, यह हम पिछले भाग में देख ही चुके हैं। किसी शब्द को देखने के लिए आपको कोश में उसके सही स्थान का ज्ञान भी होना चाहिए ताकि उसे ढूँढ़ने में आपको व्यर्थ में अतिरिक्त समय नष्ट न करना पड़े। ये व्यवस्थाएँ हर भाषा के शब्दकोश में होती हैं। हम यहाँ हिन्दी तथा अंग्रेजी शब्दकोश देखने के तरीकों पर बात करेंगे। इस संदर्भ में सबसे पहले वर्णक्रम पर दृष्टिपात करना उचित होगा।

11.3.1 वर्णक्रम

कोशों में भाषा के वर्णों को जिस क्रम में रखा जाता है उसका अध्ययन हम वर्णक्रम के अंतर्गत

करेंगे। कोशों में प्रयुक्त सामान्य प्रविधि पर हम इकट्ठी बात करेंगे किंतु वर्णक्रम के संदर्भ में हम हिन्दी तथा अंग्रेजी को अलग-अलग लेंगे।

(i) **हिन्दी वर्णक्रम** : आप सोच सकते हैं कि हर भाषा के शब्दकोश में अगर प्राय: एक सी ही जानकारी होती है तो हिन्दी तथा अंग्रेजी शब्दकोश पर अलग-अलग बात करने की क्या जरूरत है? यह जरूरत दो मुख्य कारणों से उभरी है। पहला कारण आंतरिक है। एक तो इन भाषाओं की ध्वनियाँ समान नहीं है अत: शब्दकोश में ध्वनि संकेतों की एक ही व्यवस्था से दोनों का काम नहीं चल सकता। इसी से जुड़ी है इन भाषाओं की भिन्न-भिन्न वर्ण व्यवस्था। इनमें न केवल वर्णों की संख्या भिन्न है बल्कि वर्तनी में उनका संयोजन भी अलग है। अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी जाती है जो रेखीय है, अर्थात् जिसमें पूरे-पूरे स्वर तथा व्यंजन वर्ण एक के बाद एक लिखे जाते हैं। लैटिन या ग्रीक से आगत शब्दों में जहाँ स्वरों में संध्यक्षरों (diphthangs) का प्रयोग होता भी है, वहाँ भी आज इसके दोनों स्वर क्रम के अनुसार अलग-अलग स्पष्ट लिखे जाते हैं-- अर्थात् परंपरानुसार **coesar** लिखा जानेवाला शब्द अब **caesar** लिखा जाता है।

इसके विपरीत हिन्दी की लिपि नागरी मूलत: चक्रीय लिपि है। इसमें स्वतंत्र स्वर तो अलग लिखे जाते हैं (जैसे-**अपना, इस, उस, एक, और** आदि में) किंतु व्यंजनों के साथ संयुक्त होकर वे मात्रा के रूप में आते हैं। ये मात्राएँ व्यंजन वर्ण की बाईं-ओर भी हो सकती है (**किधर, बिल** आदि में), दाईं ओर भी (जैसे-गान, गीत आदि में) ऊपर भी हो सकती हैं (जैसे **बेल, पैर** आदि में) और नीचे भी (जैसे-**कुछ, दूर** आदि में)।

हिन्दी में व्यंजन भी संयुक्त रूप में आते हैं और इस क्रम में प्राय: अर्ध व्यंजन पहले और पूर्ण व्यंजन बाद में रेखीय क्रम में लिखे जाते हैं (जैसे-पत्थर में त् + थ = त्थ)। किंतु अनुस्वारयुक्त वर्णों में इसका व्यतिक्रम भी होता है (जैसे च + न् + द + न = चंदन)। जहाँ ङ, ण्, न्, म् आदि के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग होता है वहाँ अनुस्वार उस व्यंजन वर्ण के साथ नहीं आता जिससे वह जुड़ा है, बल्कि उससे पहले वाले व्यंजन वर्ण के ऊपर आता है, जैसा कि आप कोष्ठक में दिए हुए उदाहरण में देख सकते हैं। ट, ड, द आदि के साथ भी कई संयुक्त व्यंजन रेखीय क्रम में न आकर इनके नीचे लगते हैं (जैसे-अट्टाहास, मुट्ठी, बुड्ढा, बुद्ध आदि में)। "र" की स्थिति भी संयुक्त व्यंजनों में अनोखी है। संयुक्त अक्षरों में यह जहाँ पहला होने के नाते अधूरा वर्ण होता है, यह द्वितीय अर्थात् पूर्ण व्यंजन की शिरोरेखा के ऊपर लगता है (जैसे-र् + म = र्म)। संयुक्त अक्षर के अंतिम वर्ण के रूप में जहाँ यह पूर्ण होता हैं, वहाँ भी यह अन्य व्यंजनों की भाँति अपने सामान्य चिन्ह (र) के अनुसार न आकर अन्य चिह्नों--(क् + 7 = **a;,** द् + र = द्र आदि) या (ट् + र = ट्र, **3** + र = **3** आदि) के माध्यम से व्यक्त होता है।

इनके अतिरिक्त नागरी लिपि में तीन वर्ण ऐसे हैं जिनका उच्चारण हिन्दी में संयुक्त वर्ण के रूप में ही होता है। ये हैं--**क्ष** (क् + ष), **त्र** (त् + र) तथा **ज्ञ** (ज् + ञ)। अध्येता के सामने यह समस्या आती है कि इन्हें वर्णमाला का स्वतंत्र वर्ण मानकर इनसे आरंभ होने वाले शब्दों को वर्णक्रमानुसार शब्दकोश के अंत में ढूँढ़ा जाए या क्रमश: **क, त** तथा **क, ज** का संयुक्त रूप मानकर इनसे आरंभ होने वाले शब्दों के अंतर्गत ही ढूँढ़ा जाए।

हिन्दी की ध्वनियाँ **ड़** तथा **ढ़** ड तथा ढ का उत्क्षिप्त रूप है। ये शब्द के आरंभ में तो नहीं आती, किंतु जहाँ ये शब्द के मध्य या अंत में आती है वहाँ इनसे युक्त शब्द को वर्णों की क्रमिकता में किन-किन ध्वनियों से संयुक्त शब्द के बीच में ढूँढ़ना होगा, यह प्रश्न भी उठ सकता है।

विदेशी भाषाओं के प्रभाव से हिन्दी में आ, क, ख, ग, ज, फ आदि ध्वनियाँ आ गई हैं। वर्णमाला में प्राय: इन्हें अंत में दिया जाता है।

अब शब्दकोश में संदर्भ में सामान्य वर्णक्रम को लेकर तो कोई समस्या नहीं हैं, परंतु मात्राओं, संयुक्त वर्णों (क्ष, त्र, ज्ञ), संयुक्त अक्षरों और आगत ध्वनियों के कारण समस्या हो सकती है कि किस शब्द को कोश में कहाँ ढूँढ़ा जाए।

इतना आपके सामने अवश्य स्पष्ट है कि शब्दकोश में शब्द वर्णक्रम में आते है। हिन्दी शब्दकोश में ये प्रथम वर्ण "अ" से आरंभ होकर वर्णमाला के अंतिम वर्ण तक जाते हैं। हिन्दी में इसीलिए वर्णक्रम को अकारादि क्रम भी कहा जाता है। तो शब्दकोश में सबसे पहले "अ" से

आरम्भ होने वाले शब्द आएँगे, फिर "आ" से, फिर क्रमशः परवर्ती स्वर और व्यंजन वर्णों से। पर "अ" से आरंभ होने वाले शब्द भी अनेक हैं। इन्हें किस क्रम में रखा जाएगा? इस स्थिति में शब्द के दूसरे वर्ण को देखा जाएगा। वह शब्द पहले आएगा जिसका दूसरा वर्ण क्रम में पहले आता है। उदाहरण के लिए "अब", "अकल", "असर", "अटकल" और "अव्यय" में क्रम इस प्रकार होगा :

अकल
अटकल
अब
अव्यय
असर

देखिए, इनमें पहला वर्ण तो एक ही है, पर दूसरे **वर्ण में "a;", "ट" से पहले आता 3,** "ट" "ब" से पहले **और** फिर क्रमशः "व" **और** "स" वर्ण आते हैं। इसलिए शब्दों का क्रम भी इसी प्रकार रहेगा। अब, यदि शब्द के पहले और दूसरे वर्ण भी समान हो तो उनका क्रम तीसरे वर्ण के क्रम **के** अनुसार **तय** होगा। उदाहरण के लिए **"अजर"**, "अजय", **"अजगर"** और "अजन" में क्रम इस प्रकार होगा :

अजगर
अजन
अजय
अजर

इन शब्दों के प्रथम दो वर्ण समान हैं किंतु वर्णमाला में "ग", "न" "य" और "र" अपने-अपने स्थान पर क्रमशः इसी क्रम में आते हैं। शब्द कितने ही वर्णों का हो कोश में उसकी स्थिति इसी प्रकार पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे और आगे के वर्णों के क्रम के अनुसार चलती है।

अब हम **मात्रयुक्त और संयुक्त अक्षरों** पर विचार करते हैं हिन्दी में मात्राओं का क्रम भी स्वर वर्णों के अनुसार निश्चित होता है, जैसा हम पारंपरिक बारहखड़ी में देखते हैं। स्वर वर्ण हैं :

-- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः मात्रायुक्त व्यंजन वर्ण होंगे :

-- क, का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ, कं, कः

परंतु आगे बढ़ने के पहले आप हिन्दी शब्दकोशों की एक परंपरा पर ध्यान दें। पारंपरिक वर्णमाला के स्वर वर्णों में "औ" के बाद **"Jill** तथा "अः" आते हैं **किंतु शब्दकोशों में सबसे पहले चंद्र बिंदु तथा अनुस्वारयुक्त शब्द आते हैं फिर विसर्गयुक्त और तब तक चिन्हों से रहित और अन्य मात्राओं से युक्त शब्द।** उदाहरण के लिए "हिन्दी शब्दसागर" देखिए (संक्षिप्त, **सप्तम** संस्करण, पृ. 13)। अनुस्वार तथा चंद्रबिंदु युक्त वर्णों वाले शब्दों से आरंभ होने वाली शृंखला अंतिम वर्ण "ह" तक पहुँच गई है ("अंहुडी" में) तब जाकर गैर अनुनासिक वर्ण से आरंभ होने वाले शब्दों का क्रम आरंभ हुआ है। शब्दकोश में भी पहला शब्द "अ" से आरंभ न होकर "अं" से आरंभ (**"अंक"**) हुआ है।

इसी प्रकार इसी संस्करण का पृ. 484 देखिए। "दुः" से आरंभ होने वाले शब्द जब वर्णक्रम के अंत तक ("दुःस्वप्न") पहुँच गए हैं तब कहीं गैर-अनुनासिक और विसर्गरहित ध्वनि से आरंभ होने वाले शब्दों की बारी आती है। आप शब्दकोशों में इस तरह के अन्य उदाहरण भी ढूढ़ें।

तो इस परंपरा के अनुसार हिन्दी शब्दकोश में स्वर वर्णों का क्रम होता है : **अ** (अं/अँ, अ, अ), **आ** (आँ/आं आँ, आ), **इ** (इं/इँ, इ), **ई** (ईं, ई), **उ** (उं, उँ, उ), **ऊ** (ऊँ-ऊ), **ऋ** (ऋं, ऋ), **ए** (एं - ए), **ऐ** (ऐं - ऐ), **ओ** (ओं, ओ), **औ** (औं, औ)।

और मात्रायुक्त व्यंजनों का क्रम होगा :

कँ/कं, कः, क, कां, काँ, का, किं, कि, कीं, की, कुं, कुँ, कु, कूँ, कू, कृं, कृ, कें, के, कैं, कै, कों, को, कौं, कौ।

ध्यान दीजिए कि मात्रा युक्त वर्णों में भी अनुनासिक (ं), अनुस्वार (ँ) और विसर्ग (:) से

युक्त प्रथमाक्षर वाले शब्द पहले आएँगे - जैसे - कौं/कां, का:, का-। अर्थात् स्वर जिस क्रम में आगे या पीछे आते हैं, उनकी मात्रा से युक्त व्यंजन भी उसी क्रम में आएँगें।

इसे ध्यान में रखते हुए देखें कि "कुल", "कृपा", "कँउधा", "कद", "कायाल", "कील", "केला" आदि शब्द किस क्रम में आएँगे :

केंउधा
कंद
कद
काल
कील
कुल
कृपा
केला

यदि पहला और दूसरा वर्ण समान हुआ और पहले वर्ण की मात्रा भी समान हुई तो शब्द का क्रम दूसरे वर्ण की मात्रा से निर्धारित होगा। उदाहरण के लिए "कम", "कमेरा", "कमाल", "कमी", "कमिटी" का क्रम होगा :

कम
कमाल
कमिटी
कमी
कमेरा

मात्रा की दृष्टि से पहले और दूसरे वर्ण समान हुए तो शब्द का क्रम तीसरे वर्ण और उसकी मात्रा से निर्धारित होगा। उदाहरण के लिए यह शृंखला देखिए :

कमजात	कमर
कमजोर	कमरख
कमठ	कमल
कमठी	कमला
कमती	कमलेश
कमनीय	कमसिन

ध्यान दीजिए, इस क्रम का निर्धारण प्राथमिक स्तर पर वर्ण के अनुसार होता है और फिर मात्रा के अनुसार। "कमजोर", "क्रमठ" के पहले इसीलिए आता है कि "ज" का स्थान वर्णमाला में "ठ" के पहले है। इसलिए "ज" (तथा अन्य मध्यवर्ती व्यंजनों) के मात्रारहित तथा मात्रायुक्त रूपों के बाद कहीं "ठ" का स्थान आता है।

व्यंजन वर्णों में स्वरों का संयोग होने से मात्राएँ बनती हैं और दो व्यंजन वर्णों के संयोग से संयुक्त व्यंजन बनते हैं। वर्णमाला में स्वर के बाद व्यंजन आते हैं। उसी प्रकार शब्दकोश में दिए हुए वर्ण के साथ वर्णक्रम में ही स्वरों के बाद व्यंजन का संयोग होता है। उदाहरण के लिए--"कँ/कं, क:, क, का -- कौ के बाद क्रमश: "क्क--क्का" आदि ध्वनियाँ आंएँगी। फिर "क्ख--क्खा" ध्वनियाँ आएँगी। इसी प्रकार पूरी वर्णमाला के अंत तक यह क्रम चलता जाएगा।

अब तक के उदाहरणों में आपने देख लिया है कि कोश में वर्णक्रमानुसार संकलित शब्दों के वर्णों में परिवर्तन दाहिनी ओर के उस वर्ण से आरंभ होता है जिसके पहले के एक या अधिक वर्ण पहले वाले शब्द के समान हो। उदाहरण के लिए "कमठ", "कमर", "कमल" आदि पहले दो वर्ण समान हैं। परिवर्तन तीसरे वर्ण में हो रहा है। जब तक अंतिम वर्ण के परिवर्तन द्वारा होने वाली सारी शाब्दिक संभावनाएँ चुक नहीं जातीं तब तक उपांत्य वर्ण सहित सारे पहले वर्ण अपने वर्तमान रूप में ही आते रहेंगे। जब अंत्य वर्ण में क्रमवार मात्रा तथा व्यंजन-संयोग के द्वारा सभी सार्थक शब्द बन चुकें तब यही प्रक्रिया इससे पहले वाले वर्ण के साथ आरंभ होती है। यहाँ यह प्रक्रिया पूरी हो चुकने पर यही प्रक्रिया उससे बाईं ओर के वर्ण के साथ आरंभ होती है। यह क्रम चलता रहता है। उदाहरण के लिए नीचे दिए हुए शब्दों की शृंखला देखिए :

सकट	सकान	सक्कय	सगा	स्कंद
सकत	सकाम	सक्का	सत्कार	स्काउट
सकता	सकारना	सक्रारि	सह्याद्रि	स्तुति
सकती	सकारे	सक्रिय	सैंहिं	स्थल
सकना	सकुच	सखा	साँक	स्थाई
सकपकाना	सकेत	सखुन	साग	स्पर्श
सकल	सकोरा	सख्ती	सौहृद	स्पंदन

ये शब्द शब्दकोश में स्थान-स्थान पर, मगर इसी क्रम में आते हैं। पहली पंक्ति में देखिए, प्रथम दो अक्षर तब तक समान चलते हैं जब तक तीसरे अक्षर में समस्त संभावित परिवर्तन न हो जाएँ। यहाँ भी आप देखिए कि तीसरे अक्षर में भी एक के बाद दूसरा वर्ण तभी आ रहा है जब उससे मात्रा/व्यंजन संयोग, द्वारा बनने वाले सब शब्द आ चुकें। इसीलिए "सकत-सकती" के बाद ही "सकना" शब्द आता है और "सक्रिय" के बाद ही "सखा"। जहाँ उपांत्य वर्ण में परिवर्तन आरंभ होता है वहाँ भी जहाँ ये वर्ण एक सी मात्रा से युक्त होते हैं (दे. "सकान", "सकारे") वहाँ कोश में शब्द का क्रम अगले वर्ण की स्थिति से तय हुआ है। अर्थात् "सकान", "सकाम" से पहले इसलिए आया है कि वर्णमाला में "न" की स्थिति "म" से पहले है। अगली पंक्तियों में भी हम इस स्थिति को और आगे तक देखते हैं जहाँ तक कि दूसरे अक्षर में मात्रा/व्यंजन संयोग की सारी संभावनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। तब कहीं जाकर प्रथम अक्षर में परिवर्तन आरंभ होता है।

कुछ विशिष्ट वर्णों का स्थान :

आशा है कि हिन्दी शब्दकोश में वर्णक्रम के अनुसार आने वाले शब्दों का क्रम अब आपके सामने स्पष्ट हो गया होगा। अब कुछ ऐसे वर्णों पर विचार किया जाए जिनकी स्थिति आज किसी न किसी कारण से वर्णक्रम में अनिश्चित-सी प्रतीत होती है। पारंपरिक वर्णमाला के अंतिम तीन वर्णों-- "क्ष", "त्र" तथा "ज्ञ" का उल्लेख किया जा चुका है। आइए पहले इन पर विचार करें।

"क्ष" उच्चारण के अनुसार "क्" तथा "ष" ध्वनियों से मिलकर बना हुआ संयुक्त वर्ण माना जाता है। हिंदी वर्णमाला में ("श" तथा) "ष" का स्थान "व" के बाद है अत: "क्ष" भी "क्" तथा "व" से मिलकर बने हुए संयुक्त व्यंजन "क्व" के बाद आता है -- शब्दारंभ में भी (जैसे "क्वासि" और "क्वैला" के बाद "क्षंतव्य") और शब्द के मध्य या अंत में भी (जैसे "पक्व" के बाद "पक्ष")।

"त्र" स्पष्ट ही "त्" तथा "र" से मिलाकर बना हुआ संयुक्त व्यंजन है। अत: इसका स्थान "त" के अंतर्गत ही "त्" तथा "य" के संयुक्त रूप ("त्य") के बाद है। शब्द के आदि (जैसे त्यौहार के बाद "त्रय") मध्य तथा अंत में भी यही क्रम W है (जैसे "सत्य" के बाद "सत्र")।

"ज्ञ" का उत्तर भारतीय उच्चारण सामान्य रूप से "ग्य" है। लेकिन यह संयुक्त व्यंजन "ग्" तथा "य" का संयोग नहीं है, बल्कि "ज्" तथा "ञ" के संयोग से बना हुआ है। इसीलिए संयुक्त व्यंजन के रूप में इसे "ज" के अंतर्गत रखा जाता है। कोश में "जौहरी" के बाद "ज्ञपित" और "ज्ञान" आते हैं।

"श्र" भी श् तथा "र" से मिलाकर बना हुआ संयुक्त व्यंजन है। अत: इसका स्थान "श्य" के बाद आता है। अर्थात् "श्रम" का स्थान कोश में "श्याम" के बाद ही कहीं होगा।

"ड़" — **"ढ़"** शब्दारंभ में नहीं आते। शब्दों 3 मध्य या अंत में वर्णक्रम में "a" के बाद "ड़" और फिर "ड" आता है (उदाहरण के लिए - "पठ", "पड़" - "पड") इसी प्रकार "ढ़" की स्थिति "ड" तथा "ढ" के बीच होती है। अर्थात् शब्दकोश में इनका क्रम इस प्रकार होगा:

- ट - ठ - ड़ - ड - ढ़ - ढ

विदेशी भाषाओं से आगत ध्वनियों के प्रतीक वर्णों -- "क", "a", "ग", "ज", "फ"-- को या तो बिना नुक्ते के लिखा जाता है जैसे "कैद", "खैर", "गम" आदि या नुक्ते के साथ

("क़ैद", "ख़ैर" और "ग़म")। नुक्ते के साथ भी क्रमशः "क", "ख", "ग", "ज" तथा "फ" के सामान्य रूप में ही उनका निर्वाह किया जाता है।

आपने देखा कि शब्दकोश में स्वरों तथा व्यंजनों का क्रम वर्णमाला के अनुसार ही होगा। जिन व्यंजनों को लेकर उलझन की संभावना थी, उनके स्थान को भी पिछले विवेचन में स्पष्ट कर दिया गया है। यहाँ सारे वर्णों के संपूर्ण क्रम का ब्यौरा देना संभव नहीं है। अब तक हुई चर्चा के आलोक में आप विभिन्न शब्दकोशों का अध्ययन करें। यहाँ प्रथम व्यंजन "क" से आरंभ होने वाले कुछ शब्दों को आगे क्रमानुसार दिया जा रहा है। इनमें वर्णक्रम के निर्वाह पर ध्यान दीजिए --

कँकड़ीला	कच्चू	कुआँ
कंकण	कच्छ	कुकर
कंकन	कज्जाक	कुहु
कंकाल	कटक	कूँख
कंकाली	कटौती	कूक
कँखवारी	कट्टर	कूह
कँगना	कठ	कृकर
कंगाल	कठौता	कृसोदरि
कंघी	कड़क	केंचली
कंचन	कड़वा	केंद्रीय
कंचुक	कढ़ना	केउ
कंज	कथा	कैंकर्य
कंजूस	कहूँ	कैंड़ा
कंटक	कोई	कैकस
कँटीला	कोंकर	कोंकण
कंठ	कोंख	कोंहड़ौरी
कंठी	कांस्य	कोआ
कंडी	काई	कोही
कंद	काक	कौंच
कंधारी	काहू	कौंहर
कँपकँपी	किंकर	कौआ
कंपित	किंशुक	कौहर
कंबल	किआरी	क्या
कँसताल	किहि	क्रंदन
कई	कींगरी	क्रौंच
ककड़ी	कीक	क्लीन
ककोरना	कीसा	क्वाथ
कक्का	कुँअर	क्षण
कक्ष	कुँवारा	क्षैरिक
कच		

(ii) **अंग्रेजी वर्णक्रम :** अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी जाती है। रेखीय लिपि होने के कारण शब्दकोश में इसके वर्णक्रम का निर्वाह अपेक्षाकृत सरल है। कोश में प्रविष्टियाँ प्रथम वर्ण **a** से आरंभ होकर अंतिम वर्ण **z** तक जाती हैं। हर शब्द में वर्णों का क्रम हिन्दी की तरह ही रहता है। शब्दों में क्रमशः दाहिनी से बाईं ओर आते हुए वर्णक्रमानुसार परिवर्तन होता रहता है। अर्थात् जब अंतिम वर्ण के परिवर्तन द्वारा सभी संभावित शब्द बन जाते हैं तो उससे बाईं ओर के वर्ण में परिवर्तन होता है और इसी प्रकार यह क्रम चलता रहता है जब तक कि सारी संभावनाएँ पूरी नहीं हो जातीं। एक काल्पनिक तालिका से इस बात को समझने की चेष्टा करें :

(क)	aa - a	(ख)	ab - a	(ग)	ac - a
	a a - b		ab - b		ac - b
	a a - c		ab - c		ac - c
	से लेकर		से लेकर		से लेकर
	aa - z		ab - z		ac - z

यहाँ समझाने में आसानी के लिए केवल तीन वर्णों वाले शब्दों की संभावनाओं को लिया गया है। कॉलम (क) में दिखलाया गया है कि शब्दकोश में किसी वर्ण से आरंभ होने वाले शब्दों के क्रम में पहले वे शब्द आएँगे जिनके आरंभिक एक या अधिक वर्ण समान हों और वर्णक्रम में ऊपर आते हों। वर्णों के परिवर्तन से शब्द बदलते हैं किंतु यह परिवर्तन पहले शब्द के अंतिम वर्ण में दिखाई देगा। कॉलम (ख) में वह स्थिति दिखलाई गई है जिसमें अंतिम वर्ण के परिवर्तन से बनने वाले सभी शब्द आ चुके हैं। इस दशा में शब्द के उपांत्य वर्ण में परिवर्तन होता है और इस परिवर्तित स्थिति के साथ फिर अंतिम वर्णों में परिवर्तन का पूरा चक्र चलता है। हर प्रकार के वर्ण संयोग के साथ यह चक्र चलता रहता है जब तक कि हम इस प्रकार के संयोगों के अंतिम चरण तक नहीं पहुँच जाते। वह चरण होगा :

az - a
az - b
az - c
  से लेकर
az - z

यह स्पष्ट रहे कि ये उदाहरण अमूर्त हैं। शब्दों में वर्णों के ये सारे संयोग मिलना संभव नहीं है।

यदि हम **a** या **b** या **c** से आरंभ होने वाले शब्दों को ले रहे हैं तो प्रथम वर्ण हर शब्द में **a/** b/c ही रहेगा। रोमन और देवनागरी लिपि का अंतर यहाँ स्पष्ट है। देवनागरी में प्रथम वर्ण भी मात्रा तथा व्यंजन संयोग के कारण अनेक रूपों में आता है।

ऊपर दी गई तालिका में अमूर्त उदाहरण द्वारा बात को समझाने की चेष्टा की गई है। आइए, कुछ शब्दों के उदाहरण से इस बात को और स्पष्ट रूप से समझने की चेष्टा करें। नीचे **c** से आरंभ होने वाले कुछ शब्द दिए जा रहे हैं जो शब्दकोश में इसी क्रम से आते हैं :

cab	cape	ceanothus	chewink
cad	car	cease	chi
cafe	care	cebus	chypre
cage	case	ceylonese	cibation
cake	cat	cha	clabber
came	cave	chabazite	clayslcr
can	caw	chay	coach
cane	cay	che	crab
cap	cazigne	cheap	cub

इस तालिका में पहले दो कॉलम देखिए। इनमें **c** से आरंभ होने वाले वे शब्द हैं जिनमें दूसरा वर्ण **a** है--वर्णमाला का प्रथम वर्ण। इसके बाद वाले वर्ण क्रमानुसार बदलते गए हैं। यहाँ तक कि दूसरे कॉलम के अंतिम शब्द में **ca** के बाद वर्णमाला का अंतिम वर्ण **z** आया है जिसके बाद और परिवर्तन की संभावना नहीं है। इसलिए अब अगले शब्द से दूसरे वर्ण में परिवर्तन आ जाता है--अब दूसरा वर्ण **a** के स्थान पर **e** है, क्योंकि मध्यवर्ती वर्णों में से कोई अंग्रेजी में **c** के बाद दूसरे स्थान पर आकर शब्दारंभ (*c, *cc, *cd) नहीं करता। यह क्रम **cea** से आरंभ होनेवाले शब्द **cey** तक पहुँचता है जिसके साथ **ce** से आरंभ होने वाले शब्द समाप्त हो तो जाते हैं और **c** के साथ अगला वर्ण **h** लगना आरंभ हो जाता है। यह क्रम आगे चलता रहता है और तब तक चलता रहेगा जब तक **cz** से आरंभ होनेवाले तमाम शब्द समाप्त नहीं हो जाते। चैम्बर्स शब्दकोश में **czech** तथा इसके पेटे में आनेवाले शब्दों के साथ यह क्रम समाप्त होता है और रोमन वर्णमाला के अगले वर्ण **d** से आरंभ होनेवाले शब्द शुरू हो जाते हैं।

11.3.2 व्याकरणिक कोटि

किसी भी शब्द का अर्थ दिए हुए संदर्भ में उसकी व्याकरणिक कोटि से निर्धारित होता है। उदाहरण के लिए एक शब्द लीजिए --"कल"। "हिन्दी शब्दसागर" में इसकी प्रविष्टि इस प्रकार है :

उदाहरण-5

कल - संज्ञा स्त्री॰ [सं.] 1. अव्यक्त मधुर ध्वनि, जैसे-कोयल कूक। मर्मर ध्वनि।

सुरीली आवाज़। 2. मात्रा। कला (छंद: शास्त्र)। संज्ञा पुं. 1. बल। वीर्य।
2. साल वृक्ष। वि. 1. सुंदर। मनोहर। 2. मधुर। सरस। कोमल.... संज्ञा स्त्री.
[सं. कल्प] 1. आराम। सुख। 2. आरोग्य। तंदुरुस्ती। 3. तुष्टि। चैन। क्रि. वि.
[सं. कल्य:] 1. आगामी दूसरा दिन। आनेवाला दिन। 2. भविष्य में। 3. गया
दिन। बीता हुआ दिन। संज्ञा स्त्री. [सं. कला ?] 1. ओर। कल पहलू।
2. अंग। अवयव। पुरजा। 3. युक्ति। ढंग। पेंचों और पुरजों से बनी हुई वस्तु
जिससे काम लिया जाए। यंत्र।.....
वि. [हिं. "काला" शब्द का संक्षिप्त रूप] (यौगिक में) जैसे ---कलमुँहा।

इस उदाहरण में प्रस्तुत प्रसंग में अनावश्यक कुछ अंश छोड़ दिए गए हैं। पर आप देखिए कि यह शब्द संज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण तीनों कोटियों में आता है और कहीं यह स्त्रीलिंग में है और कहीं पुल्लिंग में। स्रोत की दृष्टि से कहीं यह संस्कृत से तत्सम रूप में आ रहा है, कहीं तद्भव रूप में तथा कहीं हिन्दी से ही आ रहा है। वास्तव में ये भिन्न-भिन्न स्रोतों तथा प्रकृति वाले भिन्न-भिन्न शब्द हैं जो समध्वनिक होने के कारण एक ही प्रतीत होते हैं और कोश में एक ही स्थान पर एक साथ दिए जाते हैं। **अनुवाद करते समय आपके सामने यह पूरी तरह स्पष्ट रहना चाहिए कि किसी शब्द की व्याकरणिक कोटि और प्रकृति क्या है।** अन्यथा आपसे बड़ी हास्यास्पद भूलें हो सकती हैं। नीचे तीन वाक्य और उनके अनुवाद देखिए। तीनों में "कल" के प्रतिशब्द के विकल्प दिए गए हैं।

--- आम्रकुंज कोकिल के **कल**कंठ से गुंजायमान था।
--- The mango grove was resounding with the sweet/ease*/yesterday* call of cuckoo
--- उसे कभी भी **कल** नहीं पड़ता।
--- He never feels at ease/sweet*/yesterday*
--- मोहन **कल** आया था
--- Mohan had come yesterday/sweet*/ease*

इनमें से हर वाक्य में "कल" का एक ही विकल्प प्रयुक्त हो सकता है (उदाहरण में अनुपयुक्त विकल्पों को तारांकित कर दिया गया है)। उपयुक्त अर्थ देने वाले विकल्प का अर्थ शब्द की व्याकरणिक कोटि से ही निर्धारित हो सकता है। अंग्रेजी में **present** शब्द का उल्लेख पहले किया जा चुका है जो संज्ञा भी हो सकता है और क्रिया भी। "कल" की ही भाँति इसमें भी शब्द का अर्थ उसकी व्याकरणिक कोटि पर निर्भर करता है। आप अनुवाद करते समय इस बात पर अवश्य ध्यान दें कि जिस शब्द का आपको अनुवाद करना है वह व्याकरणिक दृष्टि से किस कोटि में आता है। हो सकता है स्रोत भाषा में उसके समध्वनिक अन्य शब्द भी हों जैसा आपने "कल" के संदर्भ में देखा। किंतु इस बात का ध्यान रखें के सामान्य स्थिति में संज्ञा शब्द का अनुवाद संज्ञा में तथा विशेषण में और अन्य शब्द कोटियों का अनुवाद भी उनकी ही कोटि में होगा। यदि आप कोश देखने में इस बात का ध्यान रखें और दिए हुए विकल्पों में से सही कोटि चुन लें तो अनुवाद में उपयुक्त प्रतिशब्द चुनने में आपको आसानी होगी।

अनुवाद के क्रम में कभी हम किसी शब्द के बहुप्रचलित अर्थ को लेकर ही उलझन में पड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए **green** शब्द को लीजिए। सामान्य रूप से यह विशेषण है और शब्दकोश में भी प्राथमिक रूप से यह विशेषण के तौर पर ही रखा जाता है। पर नीचे के वाक्यों में इसके अर्थ पर गौर कीजिए :

— **Green is my** favourite colour
— **The Green was swarming with** people
— **Greens** are **good** for health.

पहले वाक्य में यह शब्द विशेषण ही है और इसी रूप में इसका अनुवाद भी होगा :

-- **हरा** (रंग) मेरा प्रिय रंग है।

पर दूसरे और तीसरे वाक्य का अनुवाद हम इस प्रकार नहीं कर सकते :

-- * **हरा** लोगों से भरा था/ * **हरे** पर भीड़ उमड़ रही थी।
-- * **हरे** स्वास्थ्य के लिए अच्छे होते हैं।

वास्तव में इन दोनों वाक्यों में **green(s)** संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है-- दूसरे वाक्य में

(हरे-भरे) मैदान के अर्थ में और तीसरे वाक्य में (हरी) शाक-भाजी के अर्थ में। इसे ध्यान में रखते हुए आपको **Green(s)** का समानार्थक संज्ञा शब्दों में अनुवाद करना होगा :

-- (हरा-भरा) मैदान लोगों से भरा था/ (हरे-भरे) मैदान में भीड़ उमड़ रही थी।
-- हरी शाक-भाजी स्वास्थ्य के लिए अच्छी होती है।

11.3.3 अन्य जानकारी

शब्दकोश में हर शब्द प्रविष्टि के साथ व्याकरणिक कोटि तथा अर्थ के अतिरिक्त और भी बहुत सी जानकारी रहती है जो विभिन्न संदर्भों में उपयोगी सिद्ध होती है। शब्दों के स्रोत और इतिहास संबंधी जानकारी अपने आप में भी रोचक अध्ययन का विषय है। किंतु अनुवाद के लिए और भी आवश्यक है शब्दों के प्रयोग संदर्भ तथा दी हुई शब्द प्रविष्टि से जुड़े हुए अन्य शब्द।

i) **प्रयोग संदर्भ** : प्रयोग संदर्भों का एक पक्ष शब्दों की व्याकरणिक कोटि से जुड़ा है, जैसा कि हम देख चुके हैं। दिए हुए संदर्भ में कोई शब्द संज्ञा के रूप में प्रयुक्त हुआ है या विशेषण या क्रिया के रूप में उसी से निर्धारित होता है कि उसका अर्थ क्या है और अनुवाद में उसके लिए कैसा और कौन-सा प्रतिशब्द लिया जाएगा।

प्रयोग संदर्भ का दूसरा प्रमुख पक्ष बहुअर्थी शब्दों से जुड़ता है। इनमें शब्द की व्याकरणिक कोटि एक होने के बावजूद संदर्भ तथा विषय के अनुसार उसके अनेक विभिन्न अर्थ होते हैं। एक उदाहरण लीजिए :

उदाहरण-6

कर्ण संज्ञा पु. [सं.] कान। श्रवणेंद्रिय। 2. कुंती का सबसे बड़ा पुत्र जो बहुत दानी प्रसिद्ध है। 3. वृत्त की मध्य रेखा। छंद शास्त्र में दो मात्राओं वाले वर्णों का (दीर्घ स्वर) एक बार-साथ आना। हगण।
मु० हा० "कर्ण का पहरा = प्रभात काल। दान-पुण्य का समय। 5. नाव की पतवार। 6. समकोण। त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा।

--(हिन्दी शब्द सागर)

अब देखिए, यहाँ अनुवाद में "कर्ण" का प्रतिशब्द इस बात से निर्धारित होगा कि उसके प्रयोग का संदर्भ क्या है। शरीर विज्ञान के संदर्भ में इसका अनुवाद स्पष्ट रूप से **ear** ही होगा। कुंती पुत्र के लिए अंग्रेजी में भी Karna लिखा जाएगा क्योंकि यह व्यक्ति का नाम है। छंदशास्त्र के संदर्भ में भी इसी प्रकार इस शब्द का लिप्यंतरण ही करना होगा क्योंकि यह नाम है और साथ ही अंग्रेजी में इस प्रकार का कोई छंद नहीं है जिसके नाम का प्रयोग अनुवाद में किया जा सके। "वृत्त की मध्यरेखा", "समकोण" और "त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा" ज्यामिति से जुड़ी हुई संकल्पनाएँ हैं जिनके लिए क्रमश: **diameter, right angle** तथा **hypotenuse** का प्रयोग होगा। "नाव की पतवार" के अंग्रेजी प्रतिशब्द **helm** या **rudder** होंगे।

इसी प्रकार अंग्रेजी का शब्द course लीजिए। केवल संज्ञा के रूप में भी इसके संदर्भानुसार अनेक भिन्न अर्थ होंगे। इसका एक अर्थ होगा "मार्ग"। घुड़दौड़ या गॉल्फ के खेल के संदर्भ में इसका प्रतिशब्द होगा "मैदान"। जल की धारा nit course कहलाती X, यात्रा भी। शिक्षा के संदर्भ में इसका अनुवाद "पाठ्यक्रम" होगा तो चिकित्सा के संदर्भ में "औषधियों का क्रम"। इस प्रकार एक 341 एक ही प्रतीत होने वाला-- शब्द संदर्भ के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ देता है। कई बार शब्दकोशों में भी इस बात का उल्लेख रहता है कि प्रविष्ट शब्द का अमुक अर्थ किस संदर्भ से जुड़ा है।

जब आप शब्दकोश देखें तो यह अपेक्षा न करें कि आपको शब्द के साथ सीधे-सीधे निर्विकल्प अर्थ मिल जाएगा और आप अनुवाद में उसे लगा लेंगे। आप गौर से शब्द के सभी अर्थों तथा प्रयोगों को देखें और निर्णय करें कि प्रस्तुत संदर्भ में कौन-सा अर्थ — और उसका वहन करने वाला प्रतिशब्द उपयुक्त होगा। शब्दकोश अनेक विकल्प आपके सामने रख देता है। उसका लाभ उठाने के लिए आप में भी शब्दकोश को भली-भाँति देखकर उपयुक्त शब्द चुन सकने का कौशल अपेक्षित है।

ii) **संबद्ध शब्द तथा मुहावरे** : शब्दकोश में शब्दों के अर्थ ही नहीं उनसे बनने वाले तथा संबंद्ध अन्य शब्द तथा मुहावरे भी दिए जाते हैं। ऐसी जानकारी मात्र एक भाषिक ही नहीं है द्विभाषिक कोश में भी होती है। यह सामान्यतः शब्द के विभिन्न अर्थों के बाद दी जाती है। अनुवादक के लिए इस जानकारी का भी बड़ा महत्व होता है-- मात्र अर्थबोधन की दृष्टि से ही नहीं, प्रयोगों के विकल्प के चुनाव की दृष्टि से भी।

उदाहरण के लिए देखें, पारंपरिक शब्दकोशों में यदि "गति" शब्द को लिया गया है तो उसी के अंतर्गत इससे जुड़कर बनने वाले शब्दों--"गतिभंग", "गतिभेद", "गतिरोध", "गति विज्ञान", "गतिशील", "गतिहीन" आदि का उल्लेख भी शब्द के अर्थ के बाद कर दिया गया है। (दे. बृहत् हिन्दी कोश, कालिका प्रसाद तथा अन्य संपा.)।

अंग्रेजी शब्दकोश देखें। उनमें भी इसी प्रकार के उदाहरण मिलेंगे। यदि प्रविष्टि शब्द **auction** है तो उसकी व्याकरणिक कोटि, अर्थ आदि स्पष्ट करने के बाद उससे जुडे **auctionary, auction-eer, auction bridge** ही नहीं बल्कि **Dutch auction** % शब्द @ % गए जिनमें ‰ शब्द आरंभ में न आकर अंत में आता है (दे. **Chamber's Twentieth Century Dictionary**)।

इससे शब्द का अर्थ ही नहीं, उसका पूर्ण विस्तार भी आपके सामने आता है और अनुवाद में शब्द के संदर्भ और उसके विकल्प भी आपके सामने खुलते हैं।

बड़े शब्दकोशों में **प्रविष्ट शब्द के साथ जुड़े मुहावरे कहावतों का भी समावेश होता है।** उदाहरण के लिए हिन्दी में देखिए, "आँख" के अंतर्गत कितने मुहावरों कहावतों का प्रयोग होता है--आँख आना, आँख उठना, आँख उलझ ज़ाना, आँख का अंधा नाम नयनसुख, आँख का तारा, आँख की पुतली, आँख खुलना, आँख चुराना, आँख दिखाना, आँखों पर परदा पड़ना, आँखें फेरना, आँखें बिछाना, आँख मारना, आँखों में रात काटना, आँख लगना आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी में भी आपको बेशुमार उदाहरण मिलेंगे। जैसे, **act** के साथ **act of God, act of grace, act on, act up to** आदि, या **run** के साथ **run in the family, run off, run on, run short, run through, run to seed** आदि। द्विभाषिक कोशों में भी इस तरह के उदाहरण आपको मिलेंगे। उदाहरण के लिए कामिल बुल्के के "अंग्रेजी-हिन्दी कोश" में ही **run** के अंतर्गत देख लीजिए। आपको अंग्रेजी में **run** से जुड़े अनेक मुहावरे और हिन्दी में उनके आशय का परिचय मिलेगा। हिंदी-अंग्रेजी कोशों में भी आपको इस प्रकार के उदाहरण मिल जाएँगे।

आप सोच सकते हैं कि सामान्य-सी लगने वाली इस बात पर यहाँ इतना बल क्यों दिया जा रहा है। आप अवश्य जानते होंगे कि मुहावरों में शब्द आमतौर पर अपने सामान्य अर्थ में प्रयुक्त नहीं होते। "वह शर्म से पानी-पानी हो गया" के अनुवाद में "पानी" के बदले **water** शब्द का व्यवहार नहीं होगा। इसलिए इनके अनुवाद में शब्दार्थ नहीं, मुहावरे के आशय को समझना जरूरी होता है। एक ही शब्द अलग-अलग मुहावरे में अलग-अलग आशय में भी प्रयुक्त हो सकता है। उदाहरण के लिए "समझ का फेर", "निन्यानबे का फेर", "हेर-फेर" और "किस्मत का फेर" में "फेर" शब्द ही प्रयुक्त हुआ है, मगर भिन्न-भिन्न अर्थ में। शब्दकोश इस भिन्ता को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं। अनुवाद के क्रम में कोई ऐसा शब्द आता है तो उसके अर्थ को अंत तक देखें और अगर दिए गए हों तो उनसे जुड़े हुए मुहावरों को भी देखें। अन्यथा, आप यदि शब्दानुवाद करके ही संतुष्ट हो गए तो बड़ी हास्यास्पद भूलें भी हो सकती हैं। उदाहरण के लिए:

— This trait runs in his family
 का शब्दानुवाद आप इस प्रकार कर बैंठेंगे :

-- यह प्रकृति उसके परिवार में दौड़ती है।

जबकि मुहावरे का अर्थ देखेंगे तो यही अनुवाद होगा :

-- यह उसकी खानदानी विशेषता/प्रकृति है।

लीजिए। कई कोशों में (उदाहरण के लिए "हिन्दी शब्दसागर" और **Chamber's Twentieth Century Dictionary** में) शब्द-संयोगों और मुहावरों में प्रविष्ट शब्द दुहराया जाता है। किन्तु कई अन्य कोशों में शब्द-प्रविष्ट को बार-बार दुहराने के स्थान पर उसकी जगह डैश (-) या लहरिल डैश (~) का चिह्न दे दिया जाता है। उदाहरण के लिए देखें :

उदाहरण-7

खोज स्त्री. खोजने की क्रिया, तलाश, अन्वेषण, शोध, निशान, चिह्न, पहिये की लीक, पर चिह्न। -बत्ती- स्त्री. तेज रोशनी फेंकने वाला वह आला जिससे छिपे हुए या भागते हुए व्यक्तियों, चोरों, हिंसक पशुओं, विमानों आदि का पता लगाया जाये, दे. "अन्वेशक प्रकाश"। -मिटा- वि.पु. जिसका नामोनिशान न रह गया हो, एक गाली। मु.-- खबर लेना-हाल पूछना, पता लेना। मारना-लीक या पदचिह्न मिटा देना (पहचान में आने लायक न रहने देना)। --मिटाना-- नाम निशान मिटा देना, लीक, पद चिह्न मिटाना।

--(बृहत् हिन्दी कोश, संपा. कालिका प्रसाद तथा अन्य)

एक और उदाहरण लें :

उदाहरण-8

तकदीर (takdeer) f. fate, lot, luck. **- के खेल** fortune's games –, खुलना- **उसकी तकदीर खुल गई** His luck was in I **फूटना - उसकी तकदीर फूट गई** His luck was out ~ **का** धनी/सिकन्दर Fortune's **Favourite,** extremely lucky man.

--(हिन्दी-अंग्रेजी कोश, डॉ. ब्रजमोहन तथा अन्य संपा.)

इस उदाहरण में देखिए-"खोज" के अंतर्गत "खोजबत्ती", "खोज खबर लेना" आदि प्रयोगों में "खोज" के स्थान पर डैश का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार "तकदीर" के अंतर्गत इससे जुड़कर बने मुहावरों में इस प्रविष्टि के स्थान पर लहरिल डैश का प्रयोग किया गया है।

iii) अन्य भाषिक अभिव्यक्तियाँ : किसी भी भाषा में विशिष्ट प्रसंगों में कुछ ऐसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग भी होता है जो अन्य प्राचीन या आधुनिक भाषाओं से ली गई हो, उदाहरण के लिए हिन्दी में "अत्र कुशलं तत्रास्तु" या "शुभस्य शीघ्रम्" (संस्कृत) या बंगला में "कुछ परवा नेह" (हिन्दी) जैसे प्रयोग। अंग्रेजी में भी लैटिन, ग्रीक तथा कई आधुनिक यूरोपीय भाषाओं की बहुत सी अभिव्यक्तियों का प्रयोग होता, जैसे **adhoc** (लैटिन-तदर्थ), **agent provocateur** (फ्रेंच - लोगों से सहानुभूति दिखलाते हुए उन्हें गलत काम के लिए उकसाने वाला) **aur evoir** (फ्रेंच - विदा, फिर मिलने तक) **bona fides** (लैटिन-नेकनीयती, विश्वस्तता), **che sarà sarà** (इटैलियन - जो होना है सो होगा), **Coup de grâce** (फ्रेंच - अंतिम आघात), **de facto** (लैटिन - वास्तव में), **ex parte** (लैटिन - एकतरफा), **hoi polloi** (ग्रीक-निचले वर्ग/गँवारों की भीड़), **bidem** (लैटिन-वहीं) **in toto** (लैटिन पूर्णतः) **kaputt** (जर्मन - बरबाद, ध्वस्त), **magnum opus** (लैटिन-महान कृति), **real politik** (जर्मन- व्यावहारिक राजनीति), **sine die** (लैटिन-अनिश्चित काल तक के लिए) आदि। इनमें कुछ संक्षिप्त या बहु-प्रचलित शब्दों या अभिव्यक्तियों को छोड़कर अन्य अधिकतर अभिव्यक्तियाँ शब्दकोश के मुख्य भाग में नहीं रहती। इन्हें आमतौर पर वर्णक्रम की तमाम प्रविष्टियाँ समाप्त होने के बाद शब्दकोश के अंत में दी जाती है। अंग्रेजी से अनुवाद के दौरान ऐसी अभिव्यक्तियाँ मिलने पर शब्दकोश के अंत में देखें। कई कोशों में ये वर्णक्रमानुसार दी जाती है और इनका स्रोत तथा सरल भाषा में इनका अर्थ भी दिया हुआ रहता है। अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते हुए अंग्रेजी के शब्दकोश में आपको ऐसी अन्यभाषिक अभिव्यक्तियों का अंग्रेजी में ही अर्थ मिलेगा। किंतु सरल भाषा में अर्थ स्पष्ट होने के बाद आपके लिए प्रामाणिक अनुवाद करना आसान होगा। इनमें कई अभिव्यक्तियों के लिए हिन्दी में भी अभिव्यक्तियाँ रूढ़ हो गई हैं, जैसे **ad hoc** के लिए "तदर्थ"।

iv) संक्षिप्तियाँ : कोशकार द्वारा सूचना देने के लिए जिस प्रकार संक्षिप्तियों का प्रयोग होता है, उसका उल्लेख किया जा चुका है। भाषा प्रयोग में भी विविध विषयों में संक्षिप्तियों का प्रयोग होता रहता है जिनमें पूरे शब्द या शब्द-समूह के स्थान पर हर शब्द के आद्यक्षर से बने हुए

शब्द, या संकेताक्षरों का प्रयोग होता है। इनमें से बहुतों का तो हम बोलचाल में भी प्रयोग करते है, जैसे - a.m. (ante meridiem पूर्वाह्न), B.A. (Bachelor of Arts - स्नातक), P.O. (post office डाकघर) आदि। ऐसे अन्य भी अनेक प्रयोग होते हैं जिनकी जानकारी हमें दैनिक बोलचाल के क्रम में नहीं होती। कई अच्छे शब्दकोशों के अंत में ऐसे संक्षिप्त रूपों तथा उनकी पूरी अभिव्यक्ति की सूची भी रहती है। अनुवाद में जहाँ भी स्रोत भाषा में ऐसी संक्षिप्तियाँ आएँ, आप शब्दकोश के अंत में सूची देखकर उनका आशय समझ सकते हैं। कई बार एक ही परिवर्णी या संक्षिप्त शब्द एकाधिक शब्दों/अभिव्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे **A.A.** (**Automobile Association/Anti-aircraft**), anal (**Analysis/analogy**), **dict** (**dictator/** dictionary), H.R. (House **Representatives/Home** Rule) आदि। ऐसी स्थिति में आपको संदर्भ से ही इन संक्षिप्तियों का अर्थ समझना और समझाना होगा।

इन सारी सूचनाओं के अतिरिक्त कई शब्दकोशों में विभिन्न विषयों से संबद्ध अन्य सूचनाएँ भी होती हैं। जैसे, Concise Oxford English Dictionary में नौ परिशिष्टों में विश्व के देश, देशवासियों के अभिधान तथा संबद्ध विशेषण, रासायनिक तत्वों, नाप-तौल के पैमानों, इंग्लैंड की काउंटियों तथा संयुक्त राज्य अमेरिका के राज्यों के नाम, ग्रीक तथा रूसी वर्णमाला, बाइबिल के अध्यायों के शीर्षक आदि से संबद्ध जानकारी दी गई है। इसी प्रकार Chamber's Twentieth Century Dictionary में भी कोश के अंत में संगीत संबंधी चिह्न तथा संक्षिप्तियाँ, गणित में प्रयुक्त चिह्नों की अर्थ सहित सूची, यूरोपीय प्राचीन ग्रंथों तथा बाइबिल में प्रयुक्त नामों के उच्चारणों की सूची, अंग्रेजी ईसाई नामों के उच्चारण तथा अर्थ सहित सूची, औपचारिक संबोधनों के संदर्भ और सूची, कुछ अमेरिकी उच्चारणों तथा वर्तनी की सूची, ग्रीक तथा रूसी वर्णमाला, तथा मीट्रिक प्रणाली की सूची भी दी गई है। विविध प्रसंगों में अनुवाद करते समय ये आपके काम आ सकती हैं। यह उपयोगिता वहाँ और भी बढ़ जाती है जहाँ प्रविष्टियों के अर्थ तथा उच्चारण भी दे दिए गए हों। इनमें से अधिकतर सूचियाँ वर्णक्रमानुसार होती है जिससे शब्द/अभिव्यक्ति को ढूँढ़ना आसान हो जाता है।

इस सारी चर्चा से आप समझ गए होंगे कि शब्दकोश निरी शब्दार्थ - सूची ही नहीं होते। उनमें अनेक तथा बहुआयामी सूचनाएँ शामिल रहती हैं जो अध्येता तथा अनुवादक की अनेक तरह से सहायता करती हैं। इनका पूरा उपयोग कर पाने के लिए आपको शब्दकोश ठीक से देखना आना चाहिए। यह उचित होगा कि आप जो भी कोश देखें उसे आद्योपांत उलट-पलटकर देख लें कि उसमें किस-किस प्रकार की जानकारी दी गई है। समय-समय पर यह जानकारी आपके लिए बहुत सहायक सिद्ध होगी।

11.3.4 कोश में शब्द ढूँढ़ना

ऊपर वर्णक्रम आदि से संबद्ध जो चर्चा हो चुकी है उसके आलोक में शब्दकोश में शब्द की तलाश आसानी से की जा सकती है। इसे और आसान बनाने के लिए शब्दकोशों में एक तरीका अपनाया जाता है जिसकी वजह से आप ज्यादा पृष्ठ उलट-पलटकर समय नष्ट करने से बच जाते हैं। शब्दकोश में कोई शब्द ढूँढ़ने के लिए पहले पृष्ठों का शिरोभाग देखिए। जब आप कोश खोलेंगे तो बाएँ पृष्ठ के ऊपरी बाएँ कोने में आपको इन दो पृष्ठों में आने वाली प्रथम शब्द प्रविष्ट मिलेगी और दाहिने पृष्ठ के ऊपरी दाहिने कोने में इन दो पृष्ठों में आनेवाली अंतिम शब्द प्रविष्टि। मान लीजिए बाएँ पृष्ठ में ऊपर "गया" शब्द है और दाहिने पृष्ठ में ऊपर "गरेरी"। आपको अब पूरे पृष्ठों के शब्द देखने की जरूरत नहीं है। आपके सामने तुरंत स्पष्ट हो जाएगा कि इन पृष्ठों में कौन से वर्णों वाले शब्द आए हैं। यदि आपको "गति" शब्द देखना है तो --"त" चूँकि "य" के पहले आता है -- आप पिछले पृष्ठों की ओर लौटेंगे। यदि आप "गला" देखना चाहते हैं तो आगे के पृष्ठ पलटेंगे क्योंकि वर्णक्रम में "ल" का स्थान "र" के बाद है और इस पृष्ठ में अंतिम शब्द "गरेरी" है।

अंग्रेजी शब्दकोशों में भी शब्द ढूँढ़ने का तरीका यही है। उदाहरण के लिए आप यदि **e** से आरंभ होने वाला कोई शब्द ढूँढ़ रहे हैं तो शब्दकोश में **e** वाला भाग खोलिए। जो पृष्ठ आपने खोला है उसमें बाएँ पृष्ठ के बाएँ शीर्ष पर शब्द है **example** और दाहिने पृष्ठ के दाहिने शीर्ष पर शब्द है **execute**। यदि आपको **exchange** शब्द ढूँढ़ना है तो वह इन्हीं पृष्ठों में मिल जाएगा क्योंकि **exc-** का संयोग **exa-** के बाद और **exe-** के पहले आता है। किंतु यदि आप **ever** शब्द ढूँढ़ रहे हैं तो आपको पिछले पृष्ठों पर जाना होगा। **ev-** से आरंभ होने वाले शब्द ex- की अपेक्षा पहले आएँगे क्योंकि वर्णमाला में v का स्थान x से पहले है।

सामान्यत: शब्दकोश के हर पृष्ठ पर ऊपर बाईं ओर पृष्ठ की प्रथम प्रविष्टि और दाहिनी ओर पृष्ठ की अंतिम प्रविष्टि दी जाती है किंतु कुछ कोशों में बाएँ पृष्ठ पर केवल प्रथम और दाहिने पृष्ठ पर केवल अंतिम प्रविष्टि दी गई है। यहाँ संकेत के रूप में इसी स्थिति का उल्लेख किया गया है क्योंकि यह सूचना तो हर शब्दकोश में होती ही है।

इस उप-भाग में हमने सामान्य रूप से शब्दकोशों के बारे में चर्चा की है जो एकभाषिक तथा द्विभाषिक, दोनों ही प्रकार के कोशों से दिए गए हैं।

बोध प्रश्न–2

क) शब्दकोशों के संदर्भ में वर्णक्रम से आप क्या समझते हैं? हिन्दी तथा अंग्रेजी वर्णक्रम में अंतर क्यों हैं ?

....

....

....

....

....

ख) निम्नलिखित वाक्यों में से सही के आगे (✔) का तथा गलत के आगे (×) का चिह्न लगाइए :

1. शब्दकोश का एक मात्र उपयोग है शब्दों के अर्थ बतलाना ( )
2. हिन्दी में "ड़" तथा ढ़ ध्वनियाँ शब्दों के आरंभ में नहीं आतीं। ( )
3. हिन्दी रोमन लिपि में लिखी जाती है। ( )
4. "ज्ञ" जिन दो व्यंजनों के संयोग से बना $, वे हैं "ग" तथा "य"। ( )
5. संयुक्त अक्षरों में अर्ध व्यंजन पहले आता है और पूर्ण व्यंजन बाद में। ( )
6. शब्दकोश में "अ" का स्थान "औ" के बाद है। ( )
7. मात्रायुक्त अक्षर व्यंजन के साथ स्वर के संयोग से बनता है और संयुक्त अक्षर दो या अधिक व्यंजनों के संयोग से। ( )
8. कई बार एक ही शब्द एकाधिक व्याकरणिक कोटियों में आता है। ( )
9. मुहावरों का आसानी से शब्दानुवाद हो सकता है। ( )
10. शब्द ढूँढ़ने के लिए सहायक सारी जानकारी कोश के आरंभ में ही दे जाती है। ( )

ग) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : ( )

1. हिन्दी .... लिपि में लिखी जाती है। (रेखीय/चक्रीय/रोमन)
2. अंग्रेजी में शब्दारंभ में **ca** के बाद अगला वर्ण संयोग .... है। (cb-/cd-/ce-)
3. हिन्दी में अकारादि क्रम का अर्थ है ....। (मात्रा युक्त व्यंजन/रूपों का क्रम/"अ" *it* आरंभ होकर वर्णमाला के अनुसार चलने वाला क्रम)
4. "व्रत" में अर्ध व्यंजन है .... । (व/र/त)
5. "ज्ञ" के दो घटक हैं .... । /य्+ / ज्+ञ्)
6. अंग्रेजी में ad hoc शब्द .... भाषा से आया है। (लैटिन/फ्रैंच/ग्रीक)
7. हिन्दी शब्दकोश के वर्णानुक्रम में अंतिम वर्ण .... है। (ह/ज्ञ/ढ़)
8. उच्चारण कोश में उच्चारण समझाने के लिए .... का प्रयोग किया जाता है। (रोमन लिपि/अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों/विशिष्ट संकेतों)
9. अनुक्रमणिका कोश के .... में रहती है। (आरंभ/मध्य/अंत)

घ) निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश की दृष्टि से उपयुक्त वर्णक्रम में रखें :

i) पृष्ठ, पंक्ति, परिवार, पराग, पराँठा, परिजन, पुकार, पैदल, प्रेम, प्याला।

....

....

ii) आनंद, कवि, जूता, क्षत्रिय, आँगन, कंगन, त्रिमूर्ति, ज्ञान, सुकृत, सुकेशिनी।

....

....

iii) सू, स्प, स्न, सैं, सृ, सा, स्ट, सो, स्व, सः।

....

....

iv) **explosive,** explode, **explore,**
explanation, **exploit,** **exploration,**
explosion, exploratory, exploitage,
expletive

....

....

....

....

11.4 सारांश

अनुवाद करने के लिए अनुवादक जिन साधनों की सहायता ले सकता है उनमें कोशों का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। कोश भाषिक, अर्थात् भाषा से संबद्ध भी हो सकते हैं और भाषिकेतर अर्थात् विषय आदि से संबद्ध भी। किंतु किसी भी प्रकार का कोश तभी पूरी तरह उपयोगी सिद्ध हो सकेगा जब अनुवादक उसकी प्रकृति को समझे और उसका उपयोग करना जाने। कोशों के समुचित उपयोग के लिए अनुवादक के लिए उनकी संकेत प्रणाली को समझना जरूरी है जिसके माध्यम से कोशकार अनेक प्रकार की सूचनाएँ संप्रेषित करता है। ये संकेत मुद्रण युक्तियों के माध्यम से भी दिए जा सकते हैं, संक्षिप्तियों के माध्यम से भी और कुछ विशिष्ट चिह्नों के माध्यम से भी ।

कोश में किसी शब्द को ढूँढ़ने के लिए उसमें प्रविष्टियों का क्रम जानना बहुत आवश्यक है। आम तौर पर लगभग सभी प्रकार के कोशों में प्रविष्टियाँ कोश की भाषा के वर्णक्रम के अनुसार दी जाती हैं। हिन्दी तथा अंग्रेजी -- या किसी भी संबद्ध भाषा के वर्णक्रम की विशेषताओं को जानना-समझना अनुवादक के लिए जरूरी है ताकि वह कोश में प्रविष्टि को जल्दी और सरलता से ढूँढ़ सके। शब्दों के अर्थ को पूरी तरह जानने के लिए उसे शब्द की व्याकरणिक कोटि, प्रयोग संदर्भ आदि की जानकारी भी होनी चाहिए जो कोश में दी ही जाती है। शब्दकोश में निरी शब्द प्रविष्टियों के अतिरिक्त और भी बहुत सी जानकारी होती है। अध्येता यदि उनके बारे में जाने और सजग रहे तो कोश का अधिक से अधिक लाभ उठा सकता है। अनुवाद में भी यह जानकारी बहुत सहायक हो सकती है। अन्य भी सभी प्रकार के कोशों की सरंचना तथा सामग्री का ज्ञान रहे तो अध्येता अनुवादक अपने कार्य में उनकी पूरी सहायता ले सकता है। इसके लिए उसे हर कोश के आरंभ में कोश की प्रकृति, उसे देखने के तरीके के संबंध में निर्देश तथा संकेत प्रणाली संबंधी सामग्री का भली प्रकार अध्ययन कर लेना चाहिए।

11.5 शब्दावली

अंत्य (वर्ण)	--	शब्द in अंतिम (d l
अनुक्रमणिका	--	अकारादि क्रम से दी गई शब्द सूची
उपांत्य (वर्ण)	--	शब्द के अंतिम वर्ण से पहले वाला वर्ण
पर्याय	--	समानार्थक शब्द
पर्यायमाला	--	पर्यायों की शृंखला
प्रविष्टि	--	कोश में जिस विषय में जानकारी दी गई हो उसका शीर्षक
मात्रा	--	व्यंजन वर्ण में लगाई जाने वाली स्वर सूचक रेखाएँ
लिप्यंतरण	--	एक भाषा के शब्द को किसी दूसरी भाषा की लिपि में ज्यों कों त्यों उतार देना।
वर्ण	--	अक्षर
वर्णक्रमानुसार	--	अक्षरों को वर्णमाला वाले ही क्रंम में लिखना
श्रेणीकरण	--	श्रेणी-विभाजन करना, वर्गीकरण
संयुक्त अक्षर	--	वह अक्षर जिसमें एक से अधिक व्यंजन वर्णों का संयोग हो।

11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

क) शब्दकोशों में शब्द के अर्थ के अतिरिक्त भी उसकी व्याकरणिक कोटि, स्रोत, प्रयोग संदर्भों आदि के बारे में सूचना दी जाती है। अन्य प्रकार के कोशों में भी ऐसी सूचना रहती है जो उनकी बेहतर समझ में सहायक होती है। मुख्य कथन से अतिरिक्त इस सूचना को संकेतों के माध्यम से इसलिए प्रस्तुत किया जाता है कि यह मुख्य कथन पर हावी होकर उसे पृष्ठभूमि में न धकेल दे। ये संकेत मुद्रण में अक्षरों के रंग, आकार या आकृति के परिवर्तन के द्वारा या उनके संक्षिप्त रूपों द्वारा दिए जा सकते हैं। उनके लिए कई विशिष्ट चिह्नों का प्रयोग भी होता है।
संकेत प्रणाली की मुख्य उपयोगिता यही नहीं है कि यह अध्येता को बहुत सारी अतिरिक्त जानकारी देती है, बल्कि यह भी है कि इससे स्थान और अध्येता के श्रम की बहुत बचत होती है और इतनी जानकारी देते हुए भी यह मुख्य कथन के ग्रहण में बाधा उत्पन्न नहीं करती।

ख) 1. (✔) 2. (×) 3. (×) 4. (×)
5. (×) 6. (✔) 7. (×) 8. (✔)

ग) 1. संक्षिप्तियों 2 = , 3. इटेलिक्स 4 ~ ,
5. अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों 6. मोटी रेखाओं में काले अक्षर

घ)

अं.	=	अंग्रेजी	n	=	noun
क्रि.	=	क्रिया	B	=	Bible
.	=	देखो	arith.	=	arithmatic
सर्व.	=	सर्वनाम	e.g.	=	for example
प्रत्य.	=	प्रत्यय	nom.	=	nominative
प्रे. रूप	=	प्रेरणार्थक रूप	prep(s)	=	preposition(s)
मुहा.	=	मुहावरा	fem	=	Feminine

बोध प्रश्न–2

क) शब्दकोशों में वर्णक्रम का आशय उस क्रम से है जिसमें भाषा की वर्णमाला के विभिन्न वर्णों से आरंभ होने वाले शब्द, कोश में दिए जाते हैं। सुविधा और परंपरा की खातिर कुछ परिवर्तनों को छोड़कर यह क्रम वही होता है जो भाषा की वर्णमाला में वर्णों का होता है।
हिन्दी तथा अंग्रजी के वर्णक्रम में अंतर का मुख्य कारण तो दोनों की भिन्न ध्वनियाँ और इसलिए भिन्न-भिन्न वर्णमालाएँ हैं। इसके अतिरिक्त लिपि की प्रकृति की दृष्टि से भी दोनों भाषाएँ भिन्न हैं। अंग्रेजी रोमन में लिखी जाती है जो रेखीय लिपि है। इसलिए शब्दकोश में इसके वर्ण सहज भाव से एक के बाद एक आते जाते हैं। इसके विपरीत हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है जो चक्रीय है। इसमें विभिन्न स्वरों तथा व्यंजनों के संयोग से शब्द का प्रथम अक्षर अनेक रूप लेता है। कोश में वर्णक्रम निश्चित करने में इस रूप का बहुत महत्व होता है। हिन्दी में संयुक्त अक्षरों के अतिरिक्त संयुक्त वर्ण भी कोशों के वर्णक्रम को प्रभावित करते हैं।

ख) 1. (×) 2. (✔) 3. (×) 4. (×) 5. (✔) 6. (×) 7. (✔) 8. (✔)
9. (×) 10. (×)

ग) 1. चक्रीय, 2. ce 3. "अ" से आरंभ होकर वर्णमाला के अनुसार चलनेवाला क्रम, 4. व, 5. ज्+ञ, 6. लैटिन, 7. ह, 8. अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों, *9.* अंत।

घ) i) पंक्ति, पराँठा, पराग, परिजन, परिवार, पुकार, पृष्ठ, पैदल, प्याला, प्रेम।

ii) आँगन, आनंद, कंगन, कवि, क्षत्रिय, जूता, ज्ञान, त्रिमूर्ति, सुकृत, सुकेशिनी।

iii) सं., सः, सा, सू, सृ, सो, स्ट, स्प, स्त्र, स्व।

iv) explanation, expletive, explode,
exploit, exploitage, exploration,
exploratory, explore, explosion
explosive.

इकाई 12 कोशों का उपयोग–II

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य
12.1 प्रस्तावना
12.2 "थिसॉरस" का उपयोग
12.3 पर्याय कोश का उपयोग
12.4 अन्य भाषिक कोशों का उपयोग
12.5 उच्चारण कोश का उपयोग
12.6 विषय कोश, परिभाषा कोश तथा विश्वकोश का उपयोग
12.7 साहित्य कोश का उपयोग
12.8 पुराण तथा मिथक कोश का उपयोग
12.9 कब कौन-सा कोश देखें
12.10 सारांश
12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- थिसॉरस तथा अन्य कोशों में प्रविष्टियों के संयोजन में अंतर समझ सकेंगे,
- थिसॉरस का अनुवाद तथा अन्य संदर्भों में उपयोग कर सकेंगे,
- पर्याय कोश तथा लोकोक्ति-मुहावरा कोश आदि देख सकेंगे और अनुवाद कार्य में उनका उपयोग कर सकेंगे, और
- विषय कोश, परिभाषा कोश, साहित्य कोश आदि का उपयोग कर सकेंगे।

12.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने शब्दकोश के उपयोग के बारे में पढ़ा है। आपको पता चल गया है कि कोश का उपयोग सही ढंग से करने के लिए आपको कोड अथवा संकेत चिह्नों के बारे में मालूम होना चाहिए। आपने संकेत प्रणाली के बारे में पढ़ा है तथा विभिन्न प्रकार के संकेत चिह्नों की जानकारी हासिल की है। अब आप शब्दकोश देखना सीख चुके हैं। आप यह जान गए हैं कि कोश देखने के लिए वर्णक्रम सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है। चाहे शब्दकोश हो या किसी अन्य प्रकार का कोश, वर्णक्रम के आधार पर ही आप उसे देख सकेंगे। वर्णक्रम के अलावा सही अर्थ ढूँढ़ने के लिए आपको शब्द की व्याकरणिक कोटि, प्रयोग संदर्भ तथा उससे जुड़ी भाषिक अभिव्यक्ति की जानकारी भी शब्दकोश में मिलती है -- यह बात आपने पिछली इकाई में पढ़ी है।

प्रस्तुत इकाई (इकाई 12) भी कोश के उपयोग से ही संबंधित है। इस इकाई में आप अन्य प्रकार के कोशों के उपयोग के बारे में पढ़ेंगे। इसमें भाषिक तथा भाषिकेतर दोनों तरह के कोशों को लिया गया है। जहाँ तक कोश में प्रविष्टि खोजने का प्रश्न है, सभी कोशों में प्रविष्टियाँ वर्णक्रमानुसार दी जाती हैं। लेकिन प्रविष्टियों से संबद्ध जानकारी का कोशीकरण, संयोजन और नियमन कोश के स्वरूप एवं उद्देश्य पर निर्भर होता है। इस दृष्टि से प्रस्तुत इकाई शब्दकोश से इतर अन्य कोशों के उपयोग में आपकी सहायक होगी।

12.2 "थिसॉरस" का उपयोग

यह भाषिक कोश भी शब्दकोशों का ही एक प्रकार होते हैं पर कुछ भिन्न तरह के :

रस" शब्दों का कोश होते हुए भी इसका उद्देश्य और संरचना भिन्न होती है। लैटिन में "थिसॉरस" का अर्थ 8 "खजाना"। Oxford English Dictionary में इसका एक अर्थ है शब्दकोश या विश्वकोश जैसा ज्ञान भंडार। दूसरा अर्थ है **"A collection of concepts or words arranged according to sense"** अर्थात् "अवधारणाओं या शब्दों के आशय के अनुसार विन्यस्त "संग्रह"। यही रॉजें (Roget) के प्रसिद्ध "थिसॉरस" का भी आधार है। सामान्य शब्दकोश में किसी भी विषय या अवधारणा से संबद्ध शब्द वर्णक्रमानुसार संगृहीत कर दिए जाते हैं। किंतु "थिसॉरस" शब्द संग्रहों का एक विशिष्ट पैटर्न है। इसमें शब्दों को अवधारणाओं के अनुसार वर्गीकृत किया गया है अर्थात् विशिष्ट अवधारणाओं से जुड़े शब्दों को एक साथ संगृहीत कर दिया गया है। एक जैसा अर्थ देते हुए प्रतीत होने वाले अनेक शब्दों को साथ-साथ देकर इसमें न केवल उनके विभिन्न प्रयोग समझाए गए हैं बल्कि उनकी सूक्ष्म अर्थच्छायाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच का अंतर और उनके विभिन्न अर्थ संदर्भ भी स्पष्ट किए गए हैं। "थिसॉरस" की प्रकृति तथा उपयोगिता का परिचय आपको इकाई-10 में मिल ही चुका है। यहाँ इसके विन्यास के बारे में बात की जा रही है जिसे समझकर आप इसका उपयोग अधिक आसानी से कर सकेंगे।

रॉजे के "थिसॉरस" में मूलत: एक हजार श्रेणियों के शब्द थे मगर आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ उसमें चालीस और श्रेणियाँ जोड़ ली गई है। ये श्रेणियाँ मोटे तौर पर छ: वर्गों के अंतर्गत आती हैं-- **Abstract relations, Space, Matter, Intellect, Volition** और **Affection** । इन वर्गों के अंतर्गत आनेवाली अनेक अवधारणाएँ, उनके अर्थ, पर्याय, विपर्याय उन अवधारणाओं से उनके मुहावरे, प्रयोग, अन्य शब्दों तथा अवधारणाओं से उनके संबंध सभी एक निश्चित विन्यास के अनुसार "थिसॉरस" में मिलते हैं। वास्तव में "थिसॉरस" को आप एक वृक्ष समूह के रूप में देख सकते हैं जिसमें प्रमुख अवधारणाएँ वृक्षों के तने हैं जिनसे अनेक शाखाएँ-प्रशाखाएँ फूटती हैं। यह स्थिति अपने आप में बड़ी उलझनभरी लग सकती है किंतु "थिसॉरस" में शब्दों को किस प्रकार ढूँढ़ा जाए इसके समुचित निर्देश दिए रहते हैं। आप इसकी भूमिका अवश्य पढ़ें। इसकी अनुक्रमणिका भी इतनी सुव्यवस्थित है कि उपयुक्त शब्द को ढूँढ़ निकालना बहुत सहज हो जाता है।

पहले रॉजे के "थिसॉरस" की विषय सूची देखिए (तालिका-1)। इसमें बाईं ओर के बड़े आकार के कैपिटल अक्षरों में वे वर्ग दिए गए हैं जिनके अंतर्गत विभिन्न अवधारणाओं को लिया गया है। फिर पृष्ठ के मध्य भाग में छोटे आकार के कैपिटल अक्षरों में "सेक्शन" या अनुभाग के अंतर्गत उन अवधारणाओं को नामांकित किया गया है जो इस प्रमुख वर्ग से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए यहाँ पहला वर्ग है **Abstract Relations** । जिसके अंतर्गत आठ अवधारणाओं **(Existence-Causation)** को लिया गया है। सबसे दाहिनी ओर संख्याएँ दी गई हैं जो बतलाती हैं कि हर अनुभाग के अंतर्गत कितनी उप-अवधारणाओं की श्रेणियाँ आ रही हैं। इसे और ठीक से समझने के लिए तालिका-2 देखें। **Abstract Relations** के अंतर्गत पहला भाग था **Existcnce** । अब **Existcnce** के अंतर्गत चार प्रकार की अवधारणाओं को लिया गया है-- **Abstract Concrete Formal** और **Modal** । इनमें से हर उपवर्ग के अंतर्गत दो-दो श्रेणी की अवधारणाओं पर विचार किया गया है जो परस्पर विलोम 8 -- जैसे, **Existencc** और **inexistence** । जहाँ-जहाँ विलोम और विपर्याय की गुंजाइश है कोशकार ने उन्हें दिया है किंतु जहाँ इनकी गुंजाइश नहीं है वहाँ अकेली श्रेणी भी दी गई है। ध्यान दीजिए, यहाँ हर श्रेणी की निश्चित क्रम संख्या है।

तालिका-1

Plan of Classification

		Sect.		Nos.
I.	ABSTRACT RELATIONS	1.	Existence . .	1 to 8
		2	Relation . .	9–24
		3.	Quantity . .	25—57
		4.	Order . .	58-83
		5.	Number . .	84—105
		6.	Time. .	106139
		7.	Change . .	140—152
		8.	Causation . ,	153—179
II.	SPACE	1.	Generally . .	180—191
		2	Dimensions.	192—239
		3.	Form . . .	240—263
		4.	Motion . .	264—315

III.	MATTER	1.	Generally	. .	316—320
		2	Inorganic	. .	321—356
		3.	Organic	. .	357—449
N.	INTELLECT	1.	Formation of Ideas	.	450-515
		2.	Communication of Ideas	.	516—599
\	VOLITION	1.	Individual	. .	600—736
		2.	Intersocial	. .	737—819
VI.	AFFECTIONS	1.	Generally	. .	820—826
		2.	Personal	. .	827—887
		3.	Sympathetic	.	888—921
		4.	Moral	. .	922—975
		5.	Religious	. .	976—1000

(From Thesaurus of English, words and Phrases)

तालिका-2

TABULAR SYNOPSIS OF CATEGORIES

Class I. Abstract Relations

I. EXISTENCE

1°.	Abstract	1.	Existence	2.	Inexistence
2".	**Concrete**	3.	Substantiality.	4.	Unsubstantiality
			Internal		*External*
3°.	**Formal**	5.	Intrinsicality.	6.	Extrinsicality.
			Absolute.		*Relative.*
4".	**Modal**	7.	'State.	8.	Circumstance.

II. RELATION

		9.	Relation.	10.	Irrelation.
		11.	Consanguinity.		
1°.	Absolute	12.	Reciprocality.		
		13.	Identity.	14.	Contrariety.
				15.	Difference.
2°.	Continuous.	16.	Uniformity.		
		17.	Similarity,	18.	Dissimilarity.
3".	Partial	19.	Imitation.	20.	Non-limitation. Variation
4".	General	21.	Copy.	22.	Prototype
		23.	Agreement.	24.	Disagreement

III. QUANTITY

			Absolute		*Relative*
1°.	Simple	25.	Quantity.	26.	Degree.
		27	Equality.	28.	Inequality.
		29.	Mean.	30.	Compensation
			By comparison with a Standard		
2°.	Comparative	31.	Greatness.	32.	Smallness.
			By *comparison with a similur Object*		
		33.	Superiority.	33.	Inferiority.
					Changes in Quantity.
		5.	Increase.	36.	Decrease.
		3 7 .	Addition.	38.	Non-addition. Subduction.
		39.	Adjunct.	40.	Remainder.
3°.	Conjunctive	41,	Mixture.	42.	Simpleness.
		43.	Junction.	44.	Disjunction.
		45.	Vinculum.		
		46.	Coherence.	47.	Incoherence.
		48.	Combination.	49	Decomposition.

विषय सूची की इन दो तालिकाओं के माध्यम से आपने देखा कि "थिसॉरस" में किस प्रकार अवधारणाओं का विभाजन, उपविभाजन और श्रेणीकरण हुआ है। आपके मन में प्रश्न उठ सकता है कि यहाँ न तो स्पष्ट वर्णक्रम है न पृष्ठ संख्या। इस दशा में उपयुक्त शब्द की तलाश कैसे हो सकती है? इसमें कोई कठिनाई नहीं है। हर श्रेणी की क्रम संख्या दी ही हुई है। आप पृष्ठ पलटकर सही क्रम संख्या पर देखिए, उस अवधारणा से संबद्ध सारी सामग्री मिल जाएगी। परन्तु यदि आप किसी विशेष क्षेत्र या से अवधारणा के संबद्ध शब्दों की तलाश में नहीं है, बल्कि किसी विशेष शब्द का अर्थ, पर्याय या प्रयोग जानना चाहें तो समस्या हो सकती है। जरूरी नहीं है कि आपको इस बात की जानकारी हो कि वह शब्द किस अवधारणा के अंतर्गत आएगा। ऐसे में पूरी विषय सूची छानना बेहद समय-सापेक्ष होगा। किंतु इस समस्या को अनुक्रमणिका के द्वारा हल कर दिया गया है। "थिसॉरस" के उत्तरार्ध में दी गई अनुक्रमणिका में ग्रंथ में विवेचित सारे शब्द वर्णक्रमानुसार दिए गए हैं (देखिए तालिका-3)। शब्दों के साथ ही संदर्भ के लिए उनके मुख्य पर्याय तथा उनकी क्रम संख्या भी दी गई है ताकि "थिसॉरस" में उन्हें आसानी से ढूँढ़ा जा सके। उदाहरण के लिए यदि आप **Aberrant** का उपयुक्त अर्थ या पर्याय जानना चाहते हैं तो अनुक्रमणिका के अनुसार विभिन्न संदर्भों में इसके पर्यायों **divergent, erroneous** या **exceptional** को देख सकते हैं। इनमें से **divergent** क्रम संख्या 279 तथा 291 पर तथा अन्य दो शब्द क्रमशः क्रम संख्या 495 और 83 पर मिलेंगे। अतः शब्दों को देखने-ढूँढ़ने की प्रक्रिया बहुत सरल हो जाती है। जब आप "थिसॉरस" में शब्दों के पर्याय देखते हैं तो कई पर्यायों के साथ भी आपको कोई अन्य क्रम संख्या दिखाई देती है। यह इस बात की परिचायक है कि यह शब्द किसी अन्य संदर्भ में या किसी अन्य श्रेणी में भी प्रयुक्त होता है जो उस क्रमसंख्या के अंतर्गत है।

तालिका-3

INDEX

N.B.—The number refer to the headings. under which the words occur. The headings, too, are given in Italics, not to explain the meaning of the words, but to assist in the required reference. Words borrowed lrom another language have an asterisk perlixed to them.

Abbreviations. Fr. French; L. Latin; It. Itallian; Ger. German; Gr. Greek; Sp. Spanish; Port. Portugucsc; R. Russian; Arab. Arable; Ch. Chinese.

A

Ai, *superiority*, 33.
Aback, rear, 235
Abacus, numeration, 85
Abaft, rear, 235.
Abalienate, *transfer*, 783.
Abandon, a purpose, 624
property, 782.
**Abandon, (Fr.). artlessness*. 703.
Abandoned, forsaken, 893.
vicious, 945.
Abandonment, purpose, 624.
properly, 782.
Abase, depress, 308, 874.
degrade, 879.
Abasement, *servilisty*, 886.
Abash, daunt, 860.
humiliate, 879, *shame*, 874.
Abashed, modesty, 884.
Abate, *lessen*, 36.
a price, 813
* *A batons* rompus *(Fr.)*, *disorder*, 59.
irregularity, 139.
Abattis, *defence*, 717.
**Abattoir* (Fr.), *killing*, 361
Abbacy, churdhdom, 995.
*Abbe *(Fr.)*.*clergy*, 996.
Abbess, *clergy*, 996
Abbcy, temple, 1000.
Abbot, *ciergy*, 996.
Abbreviate, *shortin*, 201, 595. *style* 572
Abdicate, *resignation*, 757
Abduct, take, 789.
steal, 791
Abduction. *taking*, 789.
Abecedarian, *learner*, 541.
Abecedary, *letter*, *561*
Aberrant, *divergent*, 279, 291
erroneous, 495.
exceptional, 83.
Aberration, *divergence*, 291.
deviation, 279
mental, 503.
Abet, *aid*, 707.
**Ab* extre (L.), *exterior*, 220.
Abeyance, *expectation*, 507.
exinction, 2
suspense, 141.
Abhor, hate, 898.
dislike. 867.
Abide, continue, 143.
permanence, 142
diuturnity, 110
endure, 821
dwell, 186.
expect, 507.
Abide by, resolution, 604
Abigail. servant, 746.
Ability, *power*, 157.
skill, 698.
*Ab imo pectore (L.), *affection*, 820
*Ab incunabulis *(L.) beginning*, 66.
*Ab initio *(L.) beginning*, *66*.
Abject, *servile*, 886
vile, 874, 940.
Abjure, *renounce*, 607.
resign, 757
deny, 536.
Ablation, *subduction*, 38.
taking, 789.
Ablaze, *heat*, 382. *light*, 420
Able, *skilful*, 157, 698.
Able-bodied, *strength*, 159
Ablepsy, *blindness*, *342*.
Solution, Cleanness. 652

(From Thesaurus of English words and Phrases)

हालाँकि अनुवाद में "थिसॉरस" की उपयोगिता का पहले उल्लेख हो चुका है किंतु चलते-चलते यहाँ एक उदाहरण के माध्यम से इसे और स्पष्ट कर देना उचित होगा। मान लीजिए अनुवाद के क्रम में आपके सामने एक शब्द आता है--**Figure** । इसके अनेक संदर्भों में अनेक अर्थ होते हैं। शब्दकोश में अनेक अर्थ मिल जाएँगे किंतु सटीक प्रतिशब्द के चुनाव के लिए अवधारणा आपके सामने बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए। "थिसॉरस" की अनुक्रमणिका देखिए। इस शब्द के अंतर्गत **State** (स्थिति), **Number** (संख्या), **Form** (रूपाकार), **Metaphor** (रूपक/अलंकार), **Imagine** (कल्पना करना/अनुमान करना) आदि नौ शब्द हैं जो पूर्णत: भिन्न संदर्भों से जुड़े हुए हैं। मान लीजिए, अनूद्य पाठ के संदर्भ में आपको लगता है कि यह शब्द रूपाकार की अवधारणा से जुड़ा है तो अनुक्रमणिका में दी गई क्रमसंख्या **240** देखिए। विषय सूची के अनुसार यह **Space** के अंतर्गत् आता है। वहाँ आपको इसके समानार्थक या लगभग समानार्थक कई शब्द मिलेंगे--**Figure, Shape, Configuration, Make** आदि-- जिनके भिन्न-भिन्न हिन्दी प्रतिशब्द आप शब्दकोश में देख सकते हैं। आप यह भी देखेंगे कि **Form W** (और **Figure W** भी) प्रयोग संज्ञा ही नहीं क्रिया के तौर पर भी होता है। इस सारी जानकारी को लेकर आप निर्णय कर सकते हैं कि अनूद्य अंश में यह शब्द किस व्याकरणिक और अर्थी संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है और इसका उपयुक्त प्रतिशब्द क्या होगा।

एक और बात का यहाँ संकेत भर किया जा रहा है। हम पहले संकेत प्रणाली पर बात कर चुके हैं। "थिसॉरस" में देखिए, मुद्रण युक्तियों के माध्यम से कितने प्रकार के संकेत दिए गए हैं। विषय सूची में ही देखिए, कहीं बड़े आकार के कैपिटल वर्ण हैं, कहीं छोटे आकार के। कहीं पूरे कैपिटल वर्ण में दिए गए शब्द का पहला वर्ण बड़ा और शेष छोटे हैं। कहीं छोटे (small) वर्ण हैं, कहीं इटैलिक्स। विशेष चिह्न के रूप में कुछ स्थानों पर कोष्ठक तथा शून्य का प्रयोग हुआ है। अनुक्रमणिका में भी एक संकेत प्रणाली का प्रयोग हुआ है जो आरंभ में ही समझा दी गई हैं। आप इन सारे संकेतों पर ध्यान दें और इनके अर्थ तथा महत्व को भली प्रकार समझें।

12.3 पर्याय कोश का उपयोग

हिन्दी का प्रथम पर्यायवाची कोश सन् 1935 में वाराणसी में प्रकाशित हुआ था। कोशकार पं. श्रीकृष्ण शुक्ल विशारद ने इसमें संस्कृत के पारंपरिक पर्याय कोशों वाली पद्धति अपनाई थी--अर्थात् विषयों के वर्ग और फिर हर वर्ग में उपवर्ग तथा उनके अंतर्गत शब्दों की श्रेणियाँ या पर्यायमालाएँ। उदाहरण के लिए संस्कृत के हलायुध कोश में पाँच कांडों के अंतर्गत प्रमुख वर्ग बाँट दिए गए हैं--स्वर्ग, भूमि, पाताल, सामान्य तथा अनेकार्य। फिर हर कांड के अंतर्गत उससे संबद्ध शब्दों की पर्यायमालाएँ दी गई हैं। कोश के उत्तरार्ध में अकारादि क्रम में सारे शब्दों की सूची दे दी गई है। आप देख चुके हैं कि "थिसॉरस" की पद्धति भी कुछ इसी प्रकार की है। पं. श्रीकृष्ण शुक्ल के पर्याय कोश में भी चार प्रमुख खंड थे--देव, जल-स्थल, मानव जगत तथा मानवेतर जीव खंड। हर खंड के अंतर्गत अनेक वर्ग तथा हर वर्ग के अंतर्गत अनेक पर्यायमालाएँ थीं। सारे खंडों में मिलाकर कुल 37 वर्ग तथा **2200** से ऊपर पर्यायमालाएँ थीं।

यह पद्धति समयसिद्ध होते हुए भी हिन्दी के परवर्ती प्रमुख पर्याय कोशों में नहीं अपनाई गई है। इसकी एक वजह तो यह है कि इस पद्धति से शब्द ढूँढ़ना कुछ अधिक श्रमसाध्य है और यह समय भी अधिक लेती है। दूसरी वजह यह है कि "थिसॉरस" जितने बड़े पैमाने पर और व्यवस्थित रूप में नहीं। आज के अधिकतर प्रमुख पर्याय कोशों में शब्दकोशों की ही भाँति प्रविष्टियाँ अकारादि क्रम में मिलती है। अन्य सूचनाएँ अवश्य भिन्न-भिन्न कोशों में भिन्न हैं। उदाहरण के लिए डॉ. हरदेव बाहरी के "मानक हिन्दी पर्याय कोश में अकारादि क्रम से शब्द देते हुए हर शब्द की व्याकरणिक कोटि और स्रोत का उल्लेख भी किया गया है। साथ ही अनेकार्थी शब्दों के अलग-अलग अर्थों के पर्याय भी एक ही साथ दे दिए गए हैं। उदाहरण के लिए कोश की पहली ही प्रविष्टि देखिए :

उदाहरण 1

अंक : सं (सं.)। संख्या, नंबर, क्रमांक, 2. निशान, चिह्न, छाप, 3. गोद, कोड, अंकवार, 4. दाग, धब्बा।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के "हिन्दी पर्यायवाची कोश" में भी प्रविष्टियों में अकारादि क्रम अपनाया गया है और अनेकार्थी शब्दों के विभिन्न अर्थों के पर्याय भी एक ही साथ दिए गए हैं। शब्दों की

व्याकरणिक कोटि तथा स्रोत का उल्लेख अवश्य इसमें नहीं है। चूँकि इन कोशों में शब्दकोशों की ही भाँति प्रविष्टियाँ अकारादि क्रम से आती हैं अत: जिस किसी शब्द का पर्याय ढूंढना हो उसे कोश में वर्णक्रम के अनुसार देखा जा सकता है। इनमें भी प्राय: बाएँ तथा दाहिने पृष्ठों के सिरों पर इन पृष्ठों की क्रमश: प्रथम तथा अंतिम प्रविष्टि दी हुई रहती है। व्याकरणिक कोटि तथा स्रोत भी उल्लिखित रहने पर अधिक सुविधा अवश्य हो जाती है। आप पहले "कल" तथा present का उदाहरण देख चुके हैं। "कल" संज्ञा, विशेषण, अव्यय--कुछ भी हो सकता है और हर संदर्भ में इसके पर्यायवाची शब्द भिन्न होंगे। संदर्भ से आप मूल पाठ में इस शब्द की व्याकरणिक कोटि का पता लगा सकते हैं किंतु यदि कोश में भी व्याकरणिक कोटि का उल्लेख रहे तो आपका कार्य अधिक सहज हो जाता है। आप प्रतिशब्द तथा उसके पर्याय उस संबद्ध व्याकरणिक कोटि के अंतर्गत ही ढूँढ़ सकते हैं। इसी प्रकार स्रोत का ज्ञान भी सहायक होता है। एक शब्द लीजिए--"आपा"। हिन्दी में यह "अपने अस्तित्व", "अपने होने के बोध", "अहंकार" या "सुधबुध" का 374 देता है जबकि तुर्की भाषा से आए हुए समध्वनिक शब्द "आपा" का अर्थ "बड़ी बहन" होता है। जिन कोशों में ये सूचनाएँ दी हुई रहती हैं, आप उनका लाभ अवश्य उठाएँ। ये सूचनाएँ संकेतों में दी हुई रहती हैं। उदाहरण के लिए पीछे उद्धृत अंश को देखिए। "सं." का अर्थ वहाँ "संज्ञा" है। जबकि कोष्ठक में "(सं.)" का अर्थ "संस्कृत"। अर्थात् इस शब्द का स्रोत संस्कृत भाषा है। इस प्रकार के संकेतों की चर्चा पहले हो चुकी है। आप कोश का उपयोग करने के पहले संकेत सूची का अध्ययन अवश्य करें।

कुछ पर्याय कोशों में स्थिति कुछ भिन्न होती है। उनमें अनेकार्थी शब्दों में एक स्थान पर एक ही-बहुप्रचलित अर्थ के - पर्याय दिए जाते हैं तथा अन्य अर्थों के पर्याय उस अर्थ में बहुप्रचलित शब्द के साथ दिए जाते हैं। डॉ. बदरीनाथ कपूर के "नूतन पर्यायवाची तथा विपर्याय कोश" का उदाहरण लीजिए। फिर हम प्रथम प्रविष्टि को ही लेते हैं :

उदाहरण-2

अंक (पुं.) आँकड़ा, तादाद, नंबर, संख्या, संख्यांक, हिंदसा।
number, digit, Figure(s), numeral.

यहाँ "अंक" का केवल सबसे अधिक प्रचलित अर्थ लेकर उसी के पर्याय दिए गए हैं। अन्य पर्याय "चिह्न", "गोद" आदि के अंतर्गत आएँगे जिनमें एक पर्याय "अंक" भी होगा। इस स्थिति में आपके सामने परेशानी हो सकती है कि आपके पास अनूद्य पाठ में "अंक" अगर गोद के अर्थ में आया है, तो उसका पर्यायवाची कहाँ ढूँढे। वैसे आप शायद सामान्य ज्ञान के आधार पर "गोद" के अंतर्गत इस शब्द को देख लें किंतु जहाँ किसी शब्द के सारे अर्थों से परिचय न हो वहाँ कठिनाई हो सकती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए कोश के अंतिम खंड में सारे पर्याय शब्दों की सूची देखें। उसमें आपको समुचित निर्देश मिल जाएगा कि किसी शब्द को किन-किन संदर्भों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए "अंक" के अंतर्गत उसमें "गोद" शब्द भी देख लेने का सुझाव दिया गया है। यह सुझाव आपकी समस्या हल कर सकता है।

यहाँ उद्धृत उदाहरण में एक-दो और बातों पर ध्यान दें। यहाँ व्याकरणिक कोटि का संकेत किया गया है। कोष्ठक में "(पुं.)" के माध्यम से बतलाया गया है कि यह शब्द पुल्लिंग है और लिंगभेद संज्ञा शब्दों की विशेषता है। देखिए, यहाँ संज्ञा का संकेत दूसरी तरह से दिया गया है। इसलिए जरूरी है कि जो भी कोश आप देखें, उसकी प्रणाली का अध्ययन पहले कर लें।

इस कोश में हिन्दी के साथ ही अंग्रेजी प्रतिशब्द तथा उनके पर्यायों का भी उल्लेख है। यह शब्द का अर्थ-संदर्भ सुनिश्चित करने के साथ ही अनुवाद में भी कुछ सहायक हो सकता है।

इस विवेचन से आपके सामने एक और बात स्पष्ट हुई होगी। हर कोशकार की अपनी दृष्टि होती है और हर कोश की अपनी विशेषता। इसलिए उनकी विशेषताओं का पूर्णतया सामान्यीकरण करके यह सलाह दी जा सकती है कि पर्याय कोश मात्र का अध्ययन किस प्रकार किया जाए। यहाँ यह संकेत भर दिया गया है कि पर्याय कोशों का प्रयोजन क्या है, उनमें आपको क्या ढूँढ़ना है और ढूँढ़ने के क्रम में किन बातों का ध्यान रखना है, उनमें किस प्रकार की विभिन्नताएँ आपको मिल सकती हैं और उनसे उत्पन्न समस्याओं का समाधान कैसे किया जाए। हो सकता है, आपको कुछ कोश ऐसे मिलें जो इन दिए हुए उदाहरणों से भी भिन्न हों यहाँ सामान्य चर्चा से आप इतना समझ सकते हैं कि शब्द ढूँढ़ने में सहायक जानकारी का स्रोत कोश के आरंभ में भी हो सकता है, मध्य और अंत में भी। पूरे कोश को भली प्रकार देखें और उसकी भूमिका भी ध्यान से पढ़ लें। तभी कोशों में उपलब्ध जानकारी का आप पूरा लाभ उठा पाएँगे।

12.4 अन्य भाषिक कोशों का उपयोग

इकाई-10 में आपने कोशों के भिन्न-भिन्न प्रकारों का अध्ययन किया है। भाषिक कोशों में अब तक चर्चित कोशों के अतिरिक्त प्रमुख हैं-उपभाषा कोश, अपभाषा कोश विविध विषयों से संबद्ध .शब्दावली कोश, अभिव्यक्ति कोश तथा मुहावरा और लोकोक्ति कोश। आइए हम संक्षेप में इन्हें समझने के तरीकों पर भी दृष्टिपात कर लें। संक्षेप में इसलिए कि आमतौर पर सभी कोशों में उपयोग के मुख्य तरीके एक-से ही होते हैं। इनमें से लगभग सभी में प्रविष्टियाँ वर्ण-क्रमानुसार होती हैं और प्रविष्टि के संबंध में अधिक जानकारी विशेष संकेत चिह्नों के द्वारा दी जाती है जो या तो मुद्रण युक्तियों के माध्यम से सामने आते हैं या संक्षिप्तयों के माध्यम से या फिर कुछ विशिष्ट चिह्नों के माध्यम से।

जहाँ ये कोश द्विभाषिक हैं वहाँ प्रथम भाषा के वर्णक्रम का अनुसरण किया गया है। डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा द्विजेन्द्र नाथ के "अंग्रेजी-हिन्दी मुहावरा लोकोक्ति कोश" जैसे कोशों के दो खंड कर लिए गए हैं जिनमें से एक खंड में "क" भाषा प्रमुख होती है तो दूसरे में "ख" भाषा। उपर्युक्त कोश के पहले भाग में अंग्रेजी के मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ अंग्रेजी के वर्णक्रम में आते हैं और उनके हिन्दी रूप भी साथ ही दे दिए गए हैं। अंग्रेजी की हर प्रविष्टि को क्रमानुसार एक कोड नंबर दे दिया गया है। कोश के दूसरे भाग में हिन्दी के मुहावरे-लोकोक्तियाँ हिन्दी के वर्णक्रम के अनुसार विन्यस्त हैं और उनके साथ उनके अंग्रेजी रूप दिए गए हैं। अंग्रेजी रूपों के साथ प्रथम भाग में आया हुआ कोड भी दे दिया गया है ताकि आवश्यकता पड़ने पर पहले भाग से भी उन्हें आसानी से खोजा जा सके। वर्णक्रम के कारण वैसे भी किसी भी अंग्रेजी या हिन्दी मुहावरे-लोकोक्ति को खोजना आसान है।

मुहावरों और लोकोक्तियों के कोशों में एक पद्धति और अपनाई जाती है। वह है, विषय के अनुसार या एक सा आशय देने वाले मुहावरों कहावतों को एक साथ एकत्रित कर देना। उदाहरण के लिए वि.वि. नरवणे के "भारतीय कहावत संग्रह" में विषयानुसार कहावतों का संग्रह किया गया है किंतु विषयों को वर्णक्रमानुसार संयोजित कर दिया गया है। इसमें हिन्दी को आधार भाषा के रूप में रखकर प्रविष्टियों का क्रम निश्चित किया गया है। इस कोश में हिन्दी कहावत और उसके अर्थ के बाद उस आशय की अन्य हिन्दी कहावतें तथा सबके अंग्रेजी अनुवाद भी दिए गए हैं। फिर उसी आशय की अंग्रेजी कहावतें भी दी गई हैं। इस प्रकार यह कोश कहावतों के संदर्भ में पर्याय कोश का कार्य भी करता है और अनुवाद में तो यह सहायक है ही। इसमें किसी कहावत को खोजना हो तो विषय के अनुसार खोजा जा सकता है जो विषय-सूची में दिया ही रहता है। ओ.पी. गाबा के "विचारमूलक विश्व लोकोक्ति कोश" में भी हिन्दी आधार भाषा है और प्रविष्टियों को विषय के अनुसार विभाजित किया गया है न कि वर्णक्रम के अनुसार। किन्तु कोश के अध्येता की सुविधा के लिए विषय सूची के बाद एक संदर्भिका दी गई है जिसमें सारी लोकोक्तियों को वर्णक्रमानुसार संगृहीत कर दिया गया है। इसमें हिन्दी लोकोक्तियों के अंग्रेजी अनुवाद हैं तो अन्य भारतीय भाषाओं की लोकोक्तियों के हिन्दी अनुवाद भी।

एक पाठ की सीमा में सभी उपलब्ध कोशों की व्यवस्था का परिचय संभव नहीं है। इतना परिचय आपको यह समझाने के लिए दिया गया है कि अलग-अलग कोशों में विन्यास तथा संयोजन के कितनी-कितनी प्रकार के विकल्प हो सकते हैं और उनके समुचित उपयोग के लिए किस प्रकार कोश में ही निर्देश उपलब्ध रहते हैं। इस प्रकार के कुछ निर्देशों का उल्लेख इस पाठ में किया गया है ताकि आप किसी भी कोश में अनेक भिन्न प्रकार के निर्देशों की संभावना से परिचित रहें और उन निर्देशों को पहचानकर उनका ठीक से अध्ययन तथा उपयोग कर सकें।

बोध प्रश्न—1

1. थिसॉरस तथा सामान्य शब्दकोश में क्या अंतर है ?

   ....

   ....

   ....

   ....

2. रोंजे के थिसॉरस में प्रविष्टियों का वर्गीकरण किस प्रकार किया है? पाँच पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

3. विशेष क्षेत्र अथवा अवधारणाओं के संदर्भ में यह कोश किस प्रकार उपयोगी है?

....

....

....

....

4. पर्याय कोश की क्या उपयोगिता है?

....

....

....

....

5. दो मुहावरा कोशों के नाम बताइए।

....

....

12.5 उच्चारण कोश का उपयोग

इकाई 10 में इस बात पर प्रकाश डाला गया था कि अनुवादक के लिए उच्चारण की जानकारी क्यों जरूरी है। आप जानते हैं कि अनुवादक को स्रोत तथा लक्ष्य भाषाओं का पूरा ज्ञान होना चाहिए और उच्चारण का ज्ञान इस संपूर्ण ज्ञान का हिस्सा है। जहाँ मौखिक अनुवाद की आवश्यकता होती है, वहाँ उच्चारण का महत्व स्वयंसिद्ध है। इसके अतिरिक्त जब आप अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद करते हैं तो वहाँ भी कई बार कुछ प्रसंगों में आपको कुछ शब्दों का लिप्यांतरण करना पड़ सकता है। ऐसे में सही उच्चारण का ज्ञान बहुत आवश्यक है। अंग्रेजी में कहीं-कहीं समान वर्तनी वाले शब्दों में उच्चारण भेद के साथ अर्थ भेद भी आ जाता है। इस भेद को ध्यान में रखते हुए शब्द का सही अर्थ लगाना तभी संभव है जब आपको शब्द के सही उच्चारण का ज्ञान हो। इसलिए अनुवादक के लिए उच्चारण कोश का भी महत्व है।

इन कोशों में निर्देशों को पढ़ना और संकेत चिह्नों को समझना कुछ कठिन हो सकता है पर उतना ही जरूरी भी। कठिन इसलिए कि इन कोशों में संकेत चिह्न कुछ विशिष्ट होते हैं इनमें उच्चारण समझाने के लिए भाषाओं के सामान्य वर्णों के स्थान पर अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि प्रतीकों का सहारा लिया जाता है जिन्हें अच्छी तरह से जाने बिना इन कोशों का उपयोग संभव नहीं है। विशेषकर अंग्रेजी के संदर्भ में इनका बहुत महत्व है क्योंकि अंग्रेजी में अधिकतर वर्णों का निश्चित, निर्विकल्प उच्चारण नहीं होता जिससे आपको वर्तनी के आधार पर उच्चारण का कमोबेश सही अनुमान हो सके। इसलिए संकेत चिह्नों को समझना जरूरी भी है। डेनियल जोन्स की **English Pronouncing Dictionary** में प्रविष्टियों को पढ़ने का तरीका समझाने के लिए विस्तृत भूमिका दी गई है जिसमें ध्वनि प्रतीकों के ही नहीं, इटैलिक्स, कोष्ठक, कोलन (:) आदि जैसे प्रतीकों के अर्थ भी समझाए गए हैं। एक ही शब्द की विभिन्न वर्तनियों, समान वर्तनी के विभिन्न संदर्भों में विभिन्न वर्तनियों, समान वर्तनी के विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उच्चारणों आदि स्थितियों पर भी इस भूमिका में उदाहरण सहित प्रकाश डाला गया है। इनका अध्ययन कोश के उपयोग की तैयारी का अनिवार्य हिस्सा होना चाहिए। सामान्य शब्दकोशों में शायद इतनी तैयारी के बिना भी कुछ हद तक काम चला लिया जा सकता है। उच्चारण कोश में ऐसा करना उतना ही असंभव है जितना वर्णमाला सीखे बिना लिखना-पढ़ना सीखना।

12.6 विषय कोश, परिभाषा कोश तथा विश्वकोश का उपयोग

इन कोशों में भी सामान्यतया विषयों की प्रविष्टियाँ वर्णक्रमानुसार रहती हैं। कुछ कोशों में (उदाहरण के लिए **Adam** Kuper और Jessica Kuper के Social Science Encyclopaedia में) जहाँ एकाधिक अनुशासन से संबद्ध सामग्री होती है, आरंभ में अनुशासनों की वर्णक्रमानुसार सूची दे दी जाती है जिसमें हर अनुशासन के शीर्षक के अंतर्गत उससे संबद्ध प्रविष्टियों की सूची भी रहती है। कोश में तो सारे अनुशासनों की मिली-जुली प्रविष्टियाँ वर्णक्रम के अनुसार होती हैं, किंतु आरंभ की इस सूची से आप पूरे कोश को उलटे-पलटे बिना जान सकते हैं कि किस अनुशासन से संबद्ध क्या-क्या सामग्री इसमें उपलब्ध है। जिन कोशों में इस प्रकार की जानकारी आरंभ में नहीं रहती, उनमें भी प्राय: अंत में अनुक्रमणिका अवश्य होती है जिसमें वर्णक्रम के अनुसार सारी प्रविष्टियों के शीर्षक तथा उनकी पृष्ठ संख्या दी जाती है। आप किसी विशेष शब्द को देखना चाहते हैं तो अनुक्रमणिका में उसे खोजकर वहाँ दी हुई पृष्ठ संख्या या अनुभाग संख्या पर उसे देख सकते हैं।

12.7 साहित्य कोश का उपयोग

इन कोशों में भी प्रविष्टियाँ अपनी भाषा के वर्णक्रम के अनुसार होती हैं। हिन्दी के साहित्य कोशों में वर्णक्रम वही होता है जो शब्दकोशों में होता है। साहित्यिक प्रविष्टियाँ साहित्यकार (जैसे प्रेमचंद, **Milton** आदि), साहित्यिक काल (जैसे आदि काल, Elizabethan age आदि), साहित्यिक प्रवृत्तियों (जैसे छायावाद, Romanticism आदि), साहित्यिक महत्व के प्रकाशनों (जैसे ''सरस्वती, *spectator* आदि) अथवा साहित्यिक रचनाओं से संबद्ध होती हैं। प्रविष्टियों से जुड़ी अनेक सूचनाओं के लिए मुख्यत: संक्षिप्तियों तथा गौणत: अन्य संकेत चिह्नों का भी विस्तृत प्रयोग होता है अत: ग्रंथ के आरंभ में दी गई सूचियों से उनकी जानकारी कर लेना आवश्यक है। ये सूचियाँ अधिकतर कोशों के साथ वाली सूचियों जैसी ही होती है, अत: इनके बारे में यहाँ बात करना अनावश्यक है।

12.8 पुराण तथा मिथक कोश का उपयोग

ये कोश भी वर्णक्रम तथा संक्षिप्तियों/संकेतों की परंपरा ही अपनाते हैं और इनमें प्रविष्टियों को अन्य कोशों की भाँति ही ढूँढ़ा जा सकता है कुछ कोशों में अधिक जानकारी भी मिल जाती है। उदाहरण के लिए डॉ. रामशरण गौड़ के ''पुराण कथा कोश'' के उत्तरार्ध में विभिन्न पौराणिक आख्यानों का पुन: नामोल्लेख करते हुए वे प्रमुख साहित्यिक संदर्भ भी उद्धृत किए गए हैं जिनमें इन प्रसंगों का उपयोग हुआ है। साथ ही उन संदर्भों के रस, स्थायी भाव, अलंकारों आदि का भी परिचय दिया गया है। अनुवाद का इस सारी जानकारी से शायद कोई सीधा संबंध नहीं है किंतु कोश का अध्ययन करने में इसका उपयोग हो सकता है क्योंकि यह हमारे सामने कोश संयोजन का एक नया आयाम रखता है। साथ ही यह विशिष्ट पुराण प्रसंगों से जुड़े दार्शनिक, वैचारिक तथा भावगत संदर्भ को और स्पष्ट करता है जो दार्शनिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक विषयों के अनुवाद में अनुवादक के लिए सहायक सिद्ध हो सकता है।

12.9 कब कौन–सा कोश देखें

आपने ऊपर कोशों के उपयोग के विषय में पढ़ा है और जानकारी प्राप्त की है कि विभिन्न प्रकार के कोशों में प्रविष्टियों का संयोजन और सूचना किस प्रकार प्रस्तुत होती है तथा उपयुक्त सूचना पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए।

आपको कोश देखना आता हो, यह तो आवश्यक है ही, इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि अनुवाद करते समय आप कोश देखें। जरूरी तो यह है कि आप कोश देखने की आदत डालें। अक्सर ऐसा होता है कि अंग्रेजी के बहुत से शब्दों के हिन्दी पर्याय आपको मालूम होते हैं। इसी तरह हिन्दी के भी बहुत से पर्याय आपको पता होते हैं और आप उनसे काम चलाने की कोशिश करते हैं। फिर भी जरूरी नहीं कि जिस सामग्री का अनुवाद आप कर रहे हैं उसके संदर्भ में वही

पर्याय उपयुक्त होगा जो आपको पता है। फिर किसी शब्द के विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न पर्याय होते हैं और उन सबकी जानकारी आपको हो, यह संभव नहीं है। इसलिए अनुवादक को, विशेष रूप से अनुवाद सीखने की प्रक्रिया में कोश देखने का आलस बिल्कुल नहीं करना चाहिए। बल्कि जिन शब्दों का अर्थ मालूम है उन्हें भी कोश में देखना चाहिए ताकि उनके कई अर्थों से परिचय हो सके और किसी शब्द के विभिन्न पर्यायों में से उपयुक्त पर्याय चुनने का विवेक अनुवादक में पैदा हो सके। स्रोत भाषा अथवा लक्ष्य भाषा में से एक भाषा अक्सर अनुवादक की अपनी मातृभाषा अथवा प्रथम भाषा होती है। लेकिन उसके बारे में भी यह नहीं सोच लेना चाहिए कि कोश देखने की जरूरत ही नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि अनुवाद के दौरान कौन से कोश देखे जाएँ। इकाई 10-11-12 में आपने विभिन्न प्रकार के कोशों और उनकी उपयोगिता के बारे में पढ़ा है। लेकिन इनमें से कौन से कोश देखने हैं और कौन से अवश्य देखने हैं, यह जानना भी आपके लिए जरूरी है।

सर्वप्रथम् तो आपको द्विभाषिक कोश चाहिए। अंग्रेजी-हिन्दी कोश और हिन्दी-अंग्रेजी कोश। पिछली इकाइयों में हमने विभिन्न द्विभाषिक कोशों की चर्चा की है। इनके अलावा भी बाज़ार में बहुत से कोश उपलब्ध हैं। आप इनमें से एक-दो कोश चुन सकते हैं लेकिन सदैव ध्यान रखें कि अनुवाद के दौरान अच्छे और मानक कोश ही देखें। मानक कोश में न केवल पर्यायों की विविधता होती है बल्कि वे सही और सटीक होते हैं शब्द की विभिन्न अर्थच्छायायों का सूक्ष्म अंतर भी उनमें बहुत स्पष्ट दिया गया होता है। अच्छे कोशों के उपयोग से अनुवादक की भाषा प्रयोग क्षमता बढ़ती है और उसमें आत्मविश्वास पैदा होता है। अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद करते समय आप फादर कामिल बुल्के का ''अंग्रेजी-हिन्दी-कोश'' अथवा डा. हरदेव बाहरी के ''बृहत अंग्रेजी-हिन्दी कोश'' अथवा चैम्बर्स ''अंग्रेजी-हिन्दी कोश'' की सहायता ले सकते हैं।

इस तरह ये द्विभाषिक कोश तो आपके अनुवाद कार्य का मूल आधार हुए। इसके पश्चात् आपको यह देखना है कि आपकी अनूद्य सामग्री किस विषय की है। यदि विषय सामान्य है तो इन्हीं कोशों से कार्य चल जाएगा। लेकिन यदि अनूद्य सामग्री विषयनिष्ठ अथवा तकनीकी ढंग की है तो आपको उस विषय-विशेष से संबंधित कोश देखना होगा।

आपको विभिन्न विषय कोशों के बारे में जानकारी दी जा चुकी है। आप जानते हैं कि हर विषय क्षेत्र की अपनी पारिभाषिक शब्दावली प्रयुक्त होती है। अनुवाद करते समय भी लक्ष्य भाषा में उपयुक्त पारिभाषिक शब्दावली प्रयुक्त होनी चाहिए। इसलिए विभिन्न विषयों से संबंधित कोश देखना आपके लिए आवश्यक है। विभिन्न विषयों से संबंधित कोश और पारिभाषिक शब्द संग्रह पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। ''वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग'' ने विज्ञान, मानविकी, प्रशासन, चिकित्सा, कम्प्यूटर, कृषि, भाषाविज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि से संबंधित शब्दावलियाँ प्रकाशित की हैं। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं द्वारा भी अपनी विभागीय जरूरतों के अनुरूप शब्दावलियाँ तैयार की गई हैं जैसे बैंकिंग शब्दावली, विधि शब्दावली, लेखा एवं लेखा परीक्षा शब्दावली, रक्षा शब्दावली आदि। इनके अतिरिक्त विषय विशेषज्ञों ने अपने निजी प्रयास और परिश्रम से विभिन्न विषयों की शब्दावलियाँ, संदर्भ कोश, परिभाषा कोश आदि तैयार किए हैं। आप अपने अनूद्य विषय की जरूरतों के अनुरूप इन्हें देखें।

अनुवाद करते समय आपको कभी-कभी किसी विषय-विशेष के किसी शब्द की संकल्पना जानने की जरूरत पड़ती है, तभी आप उसका अर्थ भली-भाँति समझ पाते हैं और उसे लक्ष्य भाषा में उपयुक्त ढंग से प्रस्तुत कर पाते हैं। ऐसी स्थिति में परिभाषा कोश आपके सहायक होते हैं।

अनुवाद के दौरान व्यक्तिवाचक संज्ञाओं (**Proper** Noun) को लक्ष्य भाषा में सही ढंग से प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। यद्यपि व्यक्तिवाचक संज्ञाओं, व्यक्ति, स्थान आदि के नामों का लिप्यंतरण किया जाता है, फिर भी यह इतना सहज नहीं जितना ऊपर से लगता है। पहली बात तो यह है कि हर भाषा की अपनी उच्चारण प्रणाली होती है। कुछ भाषाओं में लेखन-उच्चारण में समानता होती है तो कुछ भाषाओं में इसके लिए कोई सामान्य नियम नहीं होता। उदाहरण के लिए हम हिन्दी और अंग्रेजी को ही ले सकते हैं। स्रोत और लक्ष्य भाषा में इन शब्दों के उच्चारण और लेखन को अनुवादक को भली-भाँति समझना होता है और सही शब्द लिखना होता है। उदाहरण के लिए हम भारतीय शहरों के नामों को ही ले सकते हैं कलकत्ता और दिल्ली की अंग्रेजी वर्तनी हिन्दी से बिल्कुल भिन्न है। लेकिन अनुवादक अपनी जानकारी और विवेक से सही लिप्यंतरण करता है।

दिक्कत विशेष रूप से विदेशी नामों की और खासतौर से प्राचीन अथवा मध्यकालीन नामों अथवा स्थान नामों की आती है। उनकी वर्तनी और उच्चारण विभिन्न भाषाओं की अपनी पद्धति के अनुरूप होते हैं। अनुवाद के दौरान आप इस समस्या का समाधान Webster's Biographical Dictionary तथा Webster' Geographical Dictionary की मदद से कर सकते हैं। इसमें नाम जिस भाषा का है, भाषा विशेष में उसके उच्चारण का संकेत किया गया है। इसके माध्यम से आप उच्चारण समझ सकते हैं और उसका लिप्यंतरण कर सकते हैं।

इनके अलावा स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा के एक भाषिक कोश देखने की भी आपको समय-समय पर जरूरत होती है। कभी-कभी अर्थ समझने के लिए तो कभी व्याकरणिक रूप समझने के लिए।

बोध प्रश्न—2

1. उच्चारण कोश की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

   ....

   ....

   ....

2. मिथक कोश की अनुवादक के लिए क्या उपयोगिता है ?

   ....

   ....

   ....

3. कौन-सी चीज अधिकांश कोशों में समान होती है ?

   ....

4. अनुवाद में कोश देखना क्यों आवश्यक है ?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

12.10 सारांश

इस इकाई में आपने पढ़ा कि कोश कैसे देखे जाते हैं तथा अनुवाद में उनकी उपयोगिता क्या है। अधिकांश कोशों की प्रविष्टियों में वर्णक्रम का निर्वाह किया जाता है। हालांकि रोजे के थिसॉरस में प्रविष्टियों का वर्गीकरण भिन्न ढंग से किया गया है, लेकिन इनकी प्रस्तुति की एक खास पद्धति है जिसे समझ लेने के बाद आप इसका सहजता से उपयोग कर सकते हैं।

विषय कोश, परिभाषा कोश, विश्व कोश आदि अनुवाद में कई दृष्टियों से उपयोगी होते हैं। आपको यह समझना होगा कि कौन से कोश का उपयोग कब करें। इसके साथ ही आपको कोश देखने में काफी चुस्ती बरतनी होगी तभी आप अच्छे अनुवादक बन सकते हैं।

साहित्य कोश, मिथक कोश आदि का यद्यपि सीधा संबंध अनुवाद से नहीं होता लेकिन अनूद्य विषय को समझने और प्रस्तुत करने में वे अनुवादक के सहायक होते हैं। इसी दृष्टि से आपने इन कोशों के उपयोग के बारे में भी इस इकाई में पढ़ा है।

12.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न—1

i) देखे भाग, 12.2 ii) देखें, वही iii) देखें, वही देखें भाग 12.3
v) देखें, भाग 12.4

बोध प्रश्न—2

i) देखें, भाग 12.[illegible] ii) देखें, भाग 12.8 (iii) [illegible] [illegible] देखें भाग 12.[illegible]

इकाई 13 कोश निर्माण और कंप्यूटर

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य
13.1 प्रस्तावना
13.2 कोश निर्माण क्यों होता है और कौन करता है?
13.3 शब्दकोश-निर्माण प्रक्रिया-संक्षिप्त परिचय
13.3.1 संकलन प्रक्रिया
13.3.2 संपादन प्रक्रिया
13.3.3 प्रेसकापी निर्माण/मुद्रण
13.4 कंप्यूटर का संक्षिप्त परिचय
13.4.1 कंप्यूटर क्या है?
13.4.2 कुछ उपयोगी प्रणालियाँ
13.5 शब्दकोश-निर्माण में कंप्यूटर का प्रयोग
13.5.1 सामग्री संकलन में कंप्यूटर का प्रयोग (ओ.सी.आर.)
13.5.2 प्रयोग-आवृत्ति जानने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग (कॉन्कॉर्डेन्स)
13.5.3 अर्थ-निर्धारण में कंप्यूटर का प्रयोग (कॉन्कॉर्डेन्स)
13.5.4 प्रेसकापी निर्माण तथा मुद्रण में कंप्यूटर का प्रयोग (डी.टी.पी)
13.6 कंप्यूटर अनुवाद में शब्दकोश का प्रयोग
13.6.1 कंप्यूटर अनुवाद की प्रकृति
13.6.2 कंप्यूटर शब्दकोश-लेक्सिकॉन
13.7 सारांश
13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़कर आपको पता चलेगा कि शब्दकोश के निर्माण में कंप्यूटर की विभिन्न प्रणालियाँ कैसे उपयोगी हो सकती हैं। इस इकाई को पढ़कर आप:

- कोश निर्माण के बारे में बता सकेंगे;
- आज के जीवन में कंप्यूटर के बढ़ते हुए प्रयोग की जानकारी दे सकेंगे;
- बता सकेंगे कि कंप्यूटर क्या है और कैसे कार्य करता है;
- कंप्यूटर की कुछ उन प्रणलियों की जानकारी दे सकेंगे जो शब्दकोश-निर्माण में उपयोगी हो सकती हैं;
- शब्दकोश-निर्माण की प्रक्रिया से जुड़े विभिन्न कार्यों का परिचय दे सकेंगे और
- यह जान सकेंगे कि शब्दकोश-निर्माण में कंप्यूटर की विभिन्न प्रणालियाँ किस प्रकार शब्दकोश-निर्माण के कार्य को अत्यंत सरल बना देती हैं और वर्षों के काम को कुछ ही समय में पूरा कर देती हैं।

13.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि कोश (विशेष रूप से शब्दकोश) अनुवादक का प्रमुख उपकरण है जिसके बगैर वह अपने कार्य को थोड़ा-बहुत तो आगे बढ़ा सकता है लेकिन उसे पूर्णता प्रदान नहीं कर सकता। पिछली इकाइयों में आपने विभिन्न प्रकार के कोशों के बारे में पढ़ा है। आपके मन में यह प्रश्न भी होगा कि कोश कौन तैयार करता है और इन्हें कैसे तैयार किया जाता है? प्रस्तुत इकाई में हम कोश निर्माण की प्रक्रिया से आपका परिचय कराएँगे। कोश-निर्माण की प्रक्रिया को जानना न केवल आपकी जिज्ञासा के समाधान की दृष्टि से उपयोगी होगा बल्कि इससे आपको अपने कार्यक्षेत्र में भी

सहायता मिलेगी। शब्दकोश निर्माण वास्तव में अनुवाद का ही सहवर्ती कार्य है। कोश की आवश्यकता भाषा अध्ययन और अनुवाद, दोनों के लिए तो पड़ती है विभिन्न विषयों के अध्ययन में भी इनकी जरूरत पड़ती है। इसलिए कोश निर्माण कार्य सभी उन्नत समाजों में होता है। जो समाज जितना अधिक विकसित है उसमें यह कार्य उतनी ही अधिक संपन्नता और शीघ्रता से किया जाता है।

आज कंप्यूटर हमारे जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है। इस इकाई में हम देखेंगे कि कंप्यूटर किस प्रकार शब्दकोश-निर्माण के कार्य में उपयोगी हो सकता है। शब्दकोश-निर्माण से संबंधित बहुत से काम जिन्हें पहले हाथ से करने में वर्षों लग जाते थे अब कंप्यूटर का इस्तेमाल कर कुछ ही समय में पूरे हो सकते हैं। कोलिन्स प्रकाशकों ने शब्दकोश निर्माण की समस्त प्रक्रिया का कंप्यूटरीकरण कर एक नए प्रकार का कोश Collins Cobuild Dictionary of English Language 1987 में इंग्लैंड में प्रकाशित किया जिसने शब्दकोश की दुनिया में एक क्रांति ला दी।

हम इस इकाई में देखेंगे कि आज उपलब्ध कंप्यूटर की विकसित प्रणालियाँ कैसे शब्दकोश के निर्माण में सहायक हो सकती है। हम आपको थोड़ा-सा परिचय इन प्रणालियों का देंगे। शब्दकोश-निर्माण की प्रक्रिया में शामिल कुछ महत्वपूर्ण कार्य-घटकों का परिचय भी आप इस इकाई में पाएँगे।

जहाँ एक ओर कोशकार कंप्यूटर को एक उपकरण के रूप में इस्तेमाल करता है वहीं कंप्यूटर विशेषज्ञ भी कुछ अपने प्रयोजनों के लिए शब्दकोश को उपकरण के रूप में इस्तेमाल करता है। यह शब्दकोश, जो कंप्यूटर की भाषा में लेक्सिकॉन (Lexicon) कहलाता है, कंप्यूटर अनुवाद के लिए खास महत्व का है। अत: इस इकाई में हम कंप्यूटर अनुवाद की प्रकृति और लेक्सिकॉन के स्वरूप की भी थोड़ी-सी चर्चा करेंगे, जिससे आप समझ सकेंगे कि यह किस प्रकार अन्य सामान्य कोशों से अलग है।

13.2 कोश–निर्माण क्यों होता है और कौन करता है ?

कोश-निर्माण का कार्य विभिन्न भाषा समाजों में बहुत समय से होता आ रहा है। ज्ञान के क्षेत्र में जागरूक विद्वान इसे अपना दायित्व समझ कर निभाते रहे हैं। उदाहरण के रूप में हम "निघंटु" का नाम ले सकते हैं जो वैदिक संस्कृत कोश है। जब कोई भाषा, ज्ञान-विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र में समृद्ध होती है तो उसमें शब्दावली संग्रह और कोश-निर्माण कार्य भी सम्पन्न होता है। आधुनिक काल में भारतीय भाषाओं में यह कार्य काफी तादाद् में हुआ है। इसके अतिरिक्त, जब कोई भाषा-समाज दूसरे भाषा-भाषियों के गहन संपर्क में आता है तो अपनी जरूरतों के लिए वह द्विभाषिक शब्दकोश निर्मित करता है। फालेन तथा जॉन शेक्सपियर द्वारा तैयार किए गए आरंभिक हिन्दी-अंग्रेजी कोश इसी कोटि में आते हैं। अंग्रेजी को भारत में व्यापार और प्रशासन के लिए भारतीय लोगों से संपर्क की जरूरत पड़ी और उन्होंने द्विभाषिक कोश तैयार किए।

जहाँ तक कोश-निर्माण के दायित्व का प्रश्न है यह व्यक्ति और संस्था दोनों के द्वारा वहन किया जाता है। भाषा के प्रति निष्ठावान और जागरूक विद्वान इस कार्य में स्वप्रेरणा से ही लगते हैं। उदाहरण के रूप में Webster के अंग्रेजी कोश तथा फादर कामिल बुल्के, डॉ. हरदेव बाहरी के अंग्रेजी-हिन्दी कोश या रामचंद्र वर्मा के "हिन्दी कोश" के नाम लिए जा सकते हैं।

कोश निर्माण अत्यंत विस्तृत और श्रम-साध्य कार्य होता है अत: इसे सामूहिक और संस्थागत स्तर पर भी किया जाता है। सामूहिक स्तर पर एक संपादक होता है जो कोश निर्माण कार्य की योजना के रूप में पूरा करता है। यह कार्य सरकारी संस्थाओं तथा विद्या संबंधी और स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा किया जाता है। इसके साथ ही कुछ निजी प्रकाशन भी कोश निर्माण की योग्यता के तहत कोश तैयार कराते हैं। Oxford English Dictionary, Chamber's English Dictionary, Longman's Dictionary, हिन्दी शब्दसागर, हिन्दी साहित्य कोश, Encyclopaedia of Indian Literature, हिन्दी विश्वकोश, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा तैयार किए गए विभिन्न पारिभाषिक शब्दसंग्रह आदि इसी कोटि में आते हैं।

खास बात यह है कि कोश निर्माण का कार्य एक बार हो जाने पर पूरा नहीं हो जाता। वास्तव में कोश कार्य एक सतत् प्रक्रिया है जो लगातार चलती रहती है। एक बार तैयार किया गया कोश कुछ समय पश्चात् अपर्याप्त महसूस होने लगता है। कारण, भाषा एक सतत, परिवर्तनशील, विकासशील

जीवंत इकाई होती है। उसमें निरंतर नए शब्द बनते रहते हैं और बाहर से शब्द आते रहते हैं। इसके अलावा पुराने शब्दों के अर्थ में निरंतर घट-बढ़ होती रहती है। नई अर्थच्छायाएँ विकसित होती रहती हैं। अत: शब्दकोशों को समय-समय पर अद्यतन बनाने की जरूरत होती रहती है। उनमें नई प्रविष्टियाँ शामिल करने और पुरानी प्रविष्टियों में संशोधन करने की आवश्यकता होती है। व्यक्तिगत स्तर पर निर्मित कोशों में यह कार्य आगे आने वाली पीढ़ियों को करना पड़ता है, जैसा कि Webster के कोश में किया गया। 1828 में निर्मित आरंभिक कोश में 1847 में परिवर्धन, संशोधन किया गया और बाद में फिर समय-समय पर किया जाता रहा। संस्थाओं द्वारा तैयार कराए गए कोशों में यह कार्य संपादक मंडल द्वारा कराया जाता है।

कोश निर्माण कार्य की निरंतरता वास्तव में भाषा की समृद्धि और विस्तार की सूचक है। संपन्न और व्यापक रूप से व्यवहृत भाषाओं में कोश निर्माण कार्य लगातार चलता रहता है। कोशों को कुछ वर्ष बाद संशोधित किया जाता है। इस कार्य में पर्याप्त मानवीय श्रम अपेक्षित होता है। अब कंप्यूटर के आ जाने से कोशों के निर्माण, नवीकरण और अद्यतन बनाए जाने से काफी सुविधा हो गई है। कोश कार्य में कंप्यूटर के उपयोग की चर्चा आगे की जाएगी। इससे पहले कोश निर्माण की प्रक्रिया से आपका परिचय कराया जाएगा।

13.3 शब्दकोश–निर्माण प्रक्रिया—संक्षिप्त परिचय

शब्दकोश का निर्माण अपने आप में एक बहुत जटिल और लंबी प्रक्रिया है। शब्दकोश बनाने की प्रारंभिक योजना से लेकर उसके छप जाने तक की प्रक्रिया काफी श्रम और समय की माँग करती है। शायद आपको आश्चर्य हो कि ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी कोश को बनने में चालीस वर्ष लगे थे। यह कार्य 1888 में शुरू हुआ था और 1928 में समाप्त हुआ। कई बड़े ऐतिहासिक कोशों के पूरे खंडों को छपने में तो 100-150 वर्ष भी लग जाते हैं।

यहाँ पर पर हम शब्दकोश निर्माण से जुड़े विभिन्न कार्यों का संक्षेप में उल्लेख करेंगे और इसके बाद में यह देखने की कोशिश करेंगे कि इनमें से कितने कार्यों में और किस प्रकार कंप्यूटर का उपयोग संभव है।

शब्दकोश से संबंधित समस्त कार्यों को मोटे रूप में तीन चरणों में रखा जाता है--संकलन, संपादन और प्रेस कापी निर्माण/मुद्रण।

13.3.1 संकलन प्रक्रिया

संकलन प्रक्रिया में दो प्रमुख कार्य शामिल हैं--मूलभूत नीति-निर्णय और सामग्री संकलन।

(क) मूलभूत नीति–निर्णय : शब्दकोश-निर्माण कार्य शुरू करने से पहले यह निर्णय करना जरूरी होता है कि प्रस्तावित कोश का उद्देश्य तथा स्वरूप क्या होगा। क्या यह कोश सामान्य कोश होगा या शिक्षार्थी कोश ? क्या यह भाषा सीखने वाले अन्य भाषा-भाषी छात्रों को ध्यान में रखकर बनाया जाएगा या मातृभाषियों को ध्यान में रखकर ? क्या यह ऐतिहासिक कोश होगा या समकालीन भाषा-प्रयोग पर आधारित होगा ? कोश आकार में छोटा होगा या बृहत ? एक भाषा कोश होगा या द्विभाषा कोश ? इसमें शब्दों (प्रविष्टियों) की संख्या लगभग कितनी होगी ? इसी प्रकार शब्दकोश से संबंधित अनेक नीति संबंधी निर्णय लेने पड़ते हैं।

एक बार शब्दकोश का स्वरूप निर्धारित हो जाने के बाद आधार-साहित्य या आधार-सामग्री के स्वरूप का निर्धारण किया जाता है। दूसरे शब्दों में कोश में दिए जाने वाले शब्दों (प्रविष्टियों) के स्रोत क्या होंगे ? क्या वे लिखित या मौखिक साहित्य दोनों होंगे ? कौन-कौन सी और किस काल तक की साहित्यिक तथा गैर-साहित्यिक कृतियों को शामिल किया जाएगा ? कौन-कौन सी पत्र-पत्रिकाओं, कौन-कौन से तकनीकी साहित्य और दस्तावेजों या अन्य भाषा-सामग्री को विश्लेषण के लिए चुना जाएगा? आदि।

(ख) सामग्री संकलन : प्रस्तावित आधार-सामग्री की रूपरेखा तैयार हो जाने के बाद उस सामग्री को उपलब्ध करने की कोशिश की जाती है। इसके बाद उसके आवश्यक अंशों तथा शब्दों को कार्डों में लिखा या टंकित किया जाता है। एक बार यह प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद कुछ निर्धारित

मानदंडों के आधार पर उन शब्दों को चुना जाता है जिनका अर्थ-व्याख्या कोश में जरूरी समझी जाती है। ऐसे शब्दों को प्रविष्टियाँ या प्रविष्टि शब्द कहा जाता है। इन प्रविष्टियों के चयन का एक महत्वपूर्ण मानदंड उनकी प्रयोग-आवृत्ति है।

इसके बाद हर प्रविष्टि शब्द के प्रयोग तथा अर्थ को स्पष्ट करने के लिए आधार-सामग्री से आवश्यक संदर्भ तथा दृष्टांत वाक्यों को अलग-अलग कार्डों पर लिखा या टंकित किया जाता है। इन कार्डों की संख्या लाखों में जा सकती है। कोश की परंपरा के अनुसार सभी प्रविष्टियों को अकारादि क्रम (alphabetical order) से संयोजित किया जाता है।

13.3.2 संपादन प्रक्रिया

एक बार शब्दकोश के लिए प्रविष्टियों का चयन हो जाने के बाद संपादन की प्रक्रिया शुरू होती है। संपादन प्रक्रिया को दो भागों में बाँटा जा सकता है--प्रविष्टियों से संबंधित संपादन और अर्थ-व्याख्या से संबंधित संपादन।

(क) प्रविष्टियों से संबंधित संपादन : प्रविष्टियों के संबंध में जो सबसे पहला निर्णय कोशकार को लेना होता है वह यह कि वह उस प्रविष्टि के कितने व्युत्पन्न रूपों को कोश में मुख्य प्रविष्टि या उप-प्रविष्टि (सब-एन्ट्री) के रूप में रखना चाहता है। उदाहरण के लिए साहस, साहसी, साहसपूर्ण, साहसिक, साहसवान, साहसयुक्त, साहसहीन आदि में से कौन-कौन से रूपों को कोश में जगह दें और कौन-से को नहीं। इसी प्रकार शब्दों से बनने वाले मुहावरों को कोश में शामिल करें या न करें, या करें तो किस सीमा तक करें।

दूसरे, कोशकार को प्रविष्टियों तथा उप-प्रविष्टियों के संबंध में जरूरी व्याकरणिक सूचनाएँ देनी पड़ती हैं, जैसे शब्दों की संरचनात्मक कोटि या शब्द-वर्ग (संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रिया आदि)।

तीसरे, जहाँ जरूरी हो शब्दों के उच्चारण तथा वर्तनी-रूपों का भी संकेत दिया जाता है, जैसे occur, ocurred, ocurring; बहन, बहिन। इसी प्रकार जरूरत के अनुसार प्रविष्टियों के सामने उनके विषय-क्षेत्र या प्रयोग-क्षेत्र का भी संकेत दिया जाता है जैसे **Math.** Chcm. **Bot.** आदि। इसी प्रकार अंग्रेजी में slang, vulgar, colloq और हिन्दी में 'ग्राम्य', 'बोलचाल', 'क्षेत्रीय' आदि संकेतक चिह्नों द्वारा शब्दों के प्रयोग-मूल्यों तथा सामाजिकता के बारे में भी सूचना दी जाती है। इन्हें टैग या लेबल कहते हैं।

(ख) अर्थ–व्याख्या से संबधित संपादन : अर्थ की व्याख्या किसी भी कोश का प्राथमिक उद्देश्य होता है। आज यह माना जाता है कि किसी भी शब्द का अर्थ तब तक पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो सकता जब तक उसके अर्थक्षेत्र से संबंधित अन्य शब्दों से उसकी तुलना न की जाए और उनके प्रयोग को दृष्टांत वाक्यों तथा संदर्भों से स्पष्ट न किया जाए। अत: अर्थ के संबंध में संपादक या कोशकार को आवश्यकता के अनुसार निम्नलिखित प्रमुख कार्य करने पड़ते हैं :

क) शब्दों के अर्थों और अर्थच्छायाओं का निर्धारण, उनकी व्याख्या तथा उनके पर्यायों या उनकी परिभाषाओं का निर्धारण।

ख) शब्दों के अर्थ-क्षेत्र में आने वाले पर्याय, विलोम या संबद्ध शब्दों का यथावश्यक उल्लेख और उनकी तुलना (जैसे शोक-दुख-खेद, अनुकूल-प्रतिकूल, नकारात्मक-सकारात्मक, चाचा-चाची)

ग) शब्दों के वास्तविक प्रयोग को स्पष्ट करने के लिए दृष्टांत वाक्यों का चयन या निर्धारण तथा जहाँ जरूरत हो वहाँ चित्रों या आरेखों की व्याख्या करना।

घ) सहप्रयोगों का निधारिण, अर्थात् ऐसे शब्द जो हमेशा या प्राय: अपने आगे-पीछे खास तरह के शब्दों की आकांक्षा करते हैं, जैसे चिकनी-चुपड़ी (बातें), अदम्य (साहस), प्रकांड (पंडित), चिलचिलाती (धूप), **to comply (with), to consist (of), profound (knowledge, sleep)** आदि।

13.3.3 प्रेसकापी निर्माण/मुद्रण

शब्दकोश की प्रेसकापी तैयार करना बहुत मेहनत का काम है, क्योंकि शब्दकोश में प्रयुक्त हर संकेत-चिह्न, अक्षर का आकार, विरामदि चिह्न, संक्षिप्त और फॉरमेट-डिज़ाइन महत्वपूर्ण सूचना प्रकट करता है।

प्रेसकापी निर्माण प्रक्रिया का पहला चरण है कोश की सामग्री को उस रूप में सेट करना जिस रूप में उसे पाठकों के सामने प्रस्तुत किया जाना है। इनमें कोश के कलेवर तथा उसके पृष्ठों के फॉरमेट को अंतिम रूप देने का काम भी शामिल है।

कोश के शब्दों, वाक्यांशों तथा अन्य विवरणों के लिए अलग-अलग तरह के **टाइप या फॉन्ट का चयन** और उनके प्रयोगों में समरूपता सुनिश्चित करना दूसरा महत्वपूर्ण कार्य है।

तीसरा महत्वपूर्ण कार्य है संकेतक चिह्नों (जैसे - > * ◊ आदि) संक्षिप्तियों (abbreviation) तथा विरामादि चिह्नों के प्रयोग में समरूपता सुनिश्चित करना। इसी प्रकार संपूर्ण कोश में वर्तनी की शुद्धता और समरूपता सुनिश्चित करना प्रेसकापी निर्माण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है।

चौथा कार्य है कोश के लिए आवश्यक प्रस्तावना, भूमिका, नामावली, आभार-प्रदर्शन, संक्षिप्तियों की व्याख्या और अन्य सहायक विवरण तैयार करना।

पहले प्रेसकापी तैयार करने के बाद उसे मुद्रण के लिए भेजा जाता था जहाँ समस्त सामग्री को नए सिरे से कम्पोज करना होता था जिसमें उनकी जाँच तथा वर्तनी सुधार का अतिरिक्त काम भी जुड़ा रहता था। अब कंप्यूटर के डाटाबेस में समस्त कोश-सामग्री डिस्क या फ्लापी में संचित रहती है। अत: इनसे सीधे लेसर प्रिन्ट या मुद्रण किया जा सकता है। अत: कंपोजिंग तथा वर्तनी जाँच की प्रक्रिया जो मुद्रण का 70 प्रतिशत समय लेती थी, अब कंप्यूटर प्रणाली के कारण कम हो गयी।

13.4 कंप्यूटर का संक्षिप्त परिचय

अगर आप चारों ओर नज़र डालें तो पाएँगे कि आज हमारे जीवन के हर क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। चाहे बिजली-टेलीफोन का बिल तैयार करना हो या रेल और हवाई जहाज का टिकट बुक करना हो, आज कंप्यूटर का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर हो रहा है। उपग्रहों के जरिए टेलिविजन से सूचना और चित्रों का प्रसारण भी आप कंप्यूटर की वजह से ही देख पाते हैं। केल्कुलेटर से आप गिनती का सारा काम चुटकी में कर लेते हैं। मरीजों का इलाज करने, पुस्तकों का मुद्रण करने तरह-तरह के डिज़ाइन बनाने और दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक तुरंत सूचना भेजने के लिए आज कंप्यूटर का प्रयोग बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। कंप्यूटर की इस बढ़ती रफ्तार को देखकर जानकारों का अनुमान है कि सन् 2001 तक विकसित देशों में कुल कामगारों का एक तिहाई भाग सिर्फ कंप्यूटर या कंप्यूटर से जुड़े उद्योगों में ही काम कर रहा होगा।

13.4.1 कंप्यूटर क्या है?

कंप्यूटर एक ऐसी मशीन है जो आपके और हमारे द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले आँकड़ों, संख्याओं, शब्दों और चित्रों की सूचनाओं को अपने समृतिकोश में संचित करके रखती है। ये सूचनाएँ मुख्यत: कंप्यूटर के **कुंजीपटल** (key-board) पर टाइप करके इसमें प्रविष्ट की जाती है। कंप्यूटर की भाषा में इन सूचनाओं को 'डाटा' या आँकड़ा कहते हैं। हम इन सूचनाओं से संबंधित जटिल से जटिल प्रश्नों के उत्तर या परिणाम कंप्यूटर के जरिए तुरंत प्राप्त कर सकते हैं। यह कैसे संभव होता है ?

आप इन आंकड़ों से जो परिणाम या उत्तर प्राप्त करना चाहें, आप उसका आदेश उपयुक्त कुंजी दबाकर कंप्यूटर को दे दें। आपका कंप्यूटर आपके द्वारा पहले से भरी गई सूचनाओं को कच्चेमाल की तरह इस्तेमाल करते हुए बड़ी तेज गति से अंदर ही अंदर उन पर कुछ कार्य करेगा, जैसे जोड़ना, घटाना, लुप्त करना, बदलना, गिनना, छाँटना, क्रम में लगाना आदि। इसे कंप्यूटर की भाषा में **संसाधन** (processing) कहते हैं। आदेश के अनुसार कंप्यूटर तुरंत उन सूचनाओं को संसाधित कर आपके सामने परिणाम प्रस्तुत कर देगा।

ध्यान रहे कि कंप्यूटर से यह परिणाम अपने आप ही नहीं निकल आता। उसके लिए एक खास क्रम से जरूरी आदेशों की एक पूरी शृंखला बनानी होती है। आदेशों की इस क्रमबद्ध शृंखला को **क्रमादेश** (programme) कहते हैं। प्रोग्राम बनाने का यह काम कंप्यूटर विशेषज्ञ करता है। खास तरह के कामों को संपन्न करने के लिए खास तरह के प्रोग्राम बनाए जाते हैं। बड़े या जटिल कामों के लिए एक से अधिक प्रोग्राम बनाने की जरूरत पड़ती है। एक ही प्रयोजन के लिए बने इन

प्रोग्रामों को **सॉफ्टवेयर** कहते हैं। कई कंपनियाँ अलग-अलग प्रयोजनों के लिए बने-बनाए **सॉफ्टवेयर पैकेज** बेचती हैं, जैसे वेतन-पर्ची के लिए, बैंक में लेखा का काम करने के लिए, सामग्री के संपादन के लिए आदि। खास तरह के कामों की विशेष जरूरतों के अनुसार अलग से भी साफ्टवेयर विकसित करने की आवश्यकता पड़ती है।

13.4.2 कुछ उपयोगी प्रणालियाँ

कंप्यूटर की इस असीम क्षमता का उपयोग आज हम कई तरह से और कई क्षेत्रों में कर रहे हैं, जैसे शिक्षा, चिकित्सा, कार्यालय, बैंक, जनसंचार, व्यापार, शेयर बाजार, इंजीनियरी, गणित, मुद्रण, शब्दकोश- निर्माण, वास्तुकला, डिज़ाइनिंग आदि। इन सब के लिए अलग-अलग तरह के साफ्टवेयर तथा प्रणालियाँ विकसित हुई हैं, लेकिन यहाँ हम आपको केवल कुछ ऐसी प्रणालियों से ही परिचित कराएँगे, जिनका उपयोग शब्दकोश-निर्माण में होता है या हो सकता है।

(क) शब्द संसाधन (word processing) : वर्ड प्रोसेसर कंप्यूटर प्रणाली के आधार पर विकसित सबसे प्रारंभिक टंकण उपकरण **81**यह कंप्यूटर में टंकित **(type)** की गई सामग्री को अपने **स्म ति–कोश** (memory) में संचित करके रखता है। इस संचित सामग्री को आप अंतिम टंकित प्रति निकालने से पहले कंप्यूटर पर ही जरूरत के अनुसार संशोधित या परिवर्तित कर सकते हैं, वर्तनी की गलतियाँ ठीक कर सकते हैं और मनचाहे फॉरमेट में ढाल सकते हैं। इसके लिए वर्ड प्रोसेसर में कुछ खास तरहे के साफ्टवेयर पैकेज इस्तेमाल किए जाते हैं, जैसे अंग्रेजी में वर्ड स्टार, लोटस आदि और हिन्दी में शब्दरत्न, शब्दमाला, अक्षर, मल्टीकार्ड आदि। इसके साथ लगे हुए प्रिन्टर से आप जितनी चाहे प्रतियाँ निकाल सकते हैं। इस प्रकार प्राप्त प्रिन्ट-आउट की छपाई को **डॉटमैट्रिक्स** कहते हैं।

(ख) डाटा संसाघन (Data Processing): कंप्यूटर की क्षमता का वास्तविक उपयोग **डाटा संसाघन** (Data Processing) के क्षेत्र में देखने को मिलता है। डाटा संसाधन के जरिए हम कंप्यूटर में संचित सामग्री को कई तरह से संसाधित कर मनचाहा परिणाम प्राप्त कर सकते हैं, जैसे शब्दों को अकारादिक्रम (वर्णक्रम) में लगाना, सामग्री में से इच्छित शब्दों को ढूँढ़ कर निकालना, शब्दों के दोहराव को हटाना, सामग्री के किसी अंश या शब्द में एक साथ सभी जगह परिवर्तन या संशोधन करना, गणित संबंधी सामान्य कार्यों को संपन्न करना आदि। कार्यालयों में बिल और वेतन-पर्ची बनाने, बैंकों में ग्राहकों के खातों का हिसाब रखने, रेल और विमानों में सीटों के आरक्षण को नियंत्रित करने, एक भाषा की लिपि को दूसरी भाषा की लिपि में रूपांतरित करने और गणितीय आँकड़ों से निष्कर्ष निकालने आदि कार्यों में डाटा-संसाधन प्रणाली का ही इस्तेमाल किया जाता है।

अंग्रेजी में तो ये सब सुविधाएँ हैं ही, लेकिन भारतीय भाषाओं में इन्हें सुलभ कराने के लिए जिस्ट कार्ड का इस्तेमाल किया जाता है। इसे एक बार कंप्यूटर में फिट कर देने से सारा काम इन भाषाओं में भी संभव है। इसकी मदद से एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा की लिपि में भी प्राप्त किया जा सकता है, जैसे रेलवे में आरक्षण की सूची आजकल हिन्दी तथा अंग्रेजी दो भाषाओं की लिपियों में उपलब्ध होती हैं।

(ग) डेस्क टॉप पब्लिशिंग प्रणाली (डी.टी.पी.) : यह प्रणाली बुनियादी तौर पर पुस्तकों को संपादित और मुद्रित करने के लिए विकसित की गई है। इस प्रणाली में कंप्यूटर की सामान्य प्रणाली के साथ-साथ एक **लेसर प्रिंटर** भी होता है। लेसर प्रिंटर से छपकर आया हुआ प्रिन्ट-आउट इतना साफ और सुंदर होता कि उससे सीधे फोटो कापी बनाकर ऑफसेट मुद्रण किया जा सकता है। इस प्रणाली में टाइपसेटिंग और पेज-मेकर की सुविधा होती है जिससे आप कंप्यूटर में संचित सामग्री को किसी भी साइज़ या आकार के टाइप-फेस (फॉन्ट) में प्राप्त कर सकते हैं--छोटा-बड़ा, बोल्ड-केपिटल, तिरछा, इटेलिक्स आदि। यह पूरे पृष्ठ की बनावट भी अपने-आप कर देता है, यानी पृष्ठ संख्या देने, कॉलम बनाने और फॉरमेट डिज़ाइन करने का काम यह खुद करता है। यदि रंगीन चित्र देने हों तो एक खास प्रिन्टर के जरिए यह सुविधा भी उपलब्ध हो जाती है।

(घ) ओ.सी.आर. (Optical Character Recogniser): किसी भी सूचना या सामग्री को कंप्यूटर में प्रविष्ट करने का अभी तक एक ही तरीका था कुंजीपटल द्वारा टंकण। यद्यपि कंप्यूटर के कुंजीपटल में सामान्य टाइपराइटर की तुलना में कुछ अधिक सुविधाएँ रहती हैं, लेकिन फिर भी सामग्री के टंकण या प्रविष्टि में काफी समय लग जाता है। ओ.सी.आर. प्रणाली के विकास के बाद यह काम बहुत ही आसान हो गया है। ओ.सी.आर. छपे हुए अक्षरों को अपने आप पहचान कर कंप्यूटर के

डिस्क या फ्लापी में प्रविष्ट कर देता है। इसकी प्रक्रिया लगभग वैसी ही है जैसे जिरॉक्स की। जिरॉक्स का परिणाम तो कागज पर चित्र या फोटो की तरह आ जाता है लेकिन ओ.सी.आर. मूल पाठ के अक्षरों को पहचानते हुए उन्हें टंकित रूप में-कंप्यूटर की फ्लापी पर उतार देता है जो कंप्यूटर के स्मृतिकोश में संचित हो जाते हैं। सामान्यत: एक पृष्ठ को कंप्यूटर में टाइप करने में 10-12 मिनट लगते हैं लेकिन ओ.सी.आर. में केवल 15-20 सेकेन्ड ही लगते हैं। ध्यान रहे कि ओ. सी.आर. अभी तक केवल स्वच्छ रूप से मुद्रित सामग्री को ही पहचानने में समर्थ है, हाथ की लिखावट को नहीं। देवनागरी लिपि के संबंध में अभी यह सुविधा उपलब्ध नहीं है, लेकिन ओ.सी. आर. में देवनागरी लिपि को पहचानने की क्षमता विकसित करने की कोशिशें जारी हैं।

(ड) वर्तनी संशोधक (Spell Checker): कंप्यूटर में जो सामग्री टंकित की जाती है उसमें वर्तनी **(spelling)** संबंधी गलतियों का होना स्वाभाविक है। बाद में इसे ठीक करने में काफी मेहनत और समय लगता है। Spellchecker नामक सॉफ्टवेयर को कंप्यूटर में लगा देने से सामान्य शब्दों की वर्तनी की गलतियाँ यह अपने आप ठीक कर देता है। अगर कंप्यूटर को किसी शब्द की वर्तनी के सही या गलत होने के बारे में शक होता है तो वह संभावित वर्तनी का सुझाव देता है जिसका फैसला व्यक्ति अपने विवेक से करता है। स्पेलचेकर में सभी शब्द न मिले तो व्यक्ति अपनी जरूरत के मुताबिक उसमें जितने चाहे नए शब्द भर सकता है।

बोध प्रश्न—1

क) नीचे दिए कथनों में से सही कथन के सामने (सही) और गलत कथन के सामने (गलत) लिखिए :

1. कंप्यूटर में डाटा केवल टंकण (टाइपिंग) पद्धति से ही प्रविष्टि किया जा सकता है। ( )
2. लेसर प्रिन्टर की छपाई डॉटमेट्रिक्स की छपाई से अधिक सुंदर और स्वच्छ होती है। ( )
3. शब्दों को अकारादिक्रम में संयोजित करने में कंप्यूटर अभी सक्षम नहीं है। ( )
4. शब्दकोशों में व्याकरण संबंधी सूचना नहीं दी जाती। ( )
5. उचित-अनुचित, माता-पिता, गुरु-शिष्य एक ही अर्थक्षेत्र के सदस्य हैं। ( )
6. शब्दों के सही अर्थों का निर्धारण न केवल व्यक्ति बल्कि कंप्यूटर भी कर सकता है। ( )
7. कंप्यूटर में संचित सामग्री की प्रेसकापी बनाने के लिए उसे दुबारा टंकित करना पड़ता है। ( )
8. डेस्क टॉप पब्लिशिंग प्रणाली में अक्षरों को छोटा-बड़ा करने, और लेसर प्रिन्ट-आउट निकालने की सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। ( )

ख) कोष्ठक में दिए उत्तरों में से एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए।

1. कंप्यूटर को दिए जाने वाले आदेशों की क्रमबद्ध श्रृंखला को............ कहते हैं।
   (संसाधन/प्रोग्राम/साफ्टवेयर)
2. कंप्यूटर से परिणाम प्राप्त करने के लिए आँकड़ों को .... करना पड़ता है।
   (परिवर्तित/संपादित/संसाधित)
3. कंप्यूटर की प्रणाली के आधार पर विकसित सबसे प्रारंभिक टंकण उपकरण है ....।
   (वर्ड प्रोसेसर/डाय प्रोसेसर/ओ.सी.आर.)
4. जिस्टकार्ड की मदद से हम कंप्यूटर में .... में काम कर सकते हैं।
   (अंग्रेजी/भारतीय भाषाओं/किसी भी भाषा)
5. कोश में जिन शब्दों के अर्थ दिए जाते हैं, उन्हें .... शब्द कहते हैं।
   (स्रोत/प्रविष्टि/तकनीकी)
6. वायुयान में टिकटों के आरक्षण के लिए कंप्यूटर में .... का इस्तेमाल किया जाता है। (वर्ड प्रोसेसिंग/डाटा प्रोसेसिंग/दोनों)
7. मुद्रित अक्षरों को पहचान कर स्वयं कंप्यूटर में डाटा प्रविष्टि करने वाली प्रणाली को .... कहते हैं। (जिस्डकार्ड/कॉन्कॉरडेन्स/ओ.सी.आर.)

13.5 शब्दकोश—निर्माण में कंप्यूटर का प्रयोग

आपने ऊपर देखा कि शब्दकोश के निर्माण में कितने तरह के छोटे-बड़े काम शामिल हैं। इनमें से **कुछ काम विवेक, कल्पना और निर्णय शक्ति की माँग करते हैं, जैसे संदर्भ के अनुसार शब्दों के**

अर्थ और अर्थच्छायाओं की व्याख्या करना, व्याकरणिक सूचना देना, प्रयोग संबंधी सूचना देना आदि। इस प्रकार का बौद्धिक काम मानव मस्तिष्क ही कर सकता है, मशीन नहीं। लेकिन शब्दकोश के निर्माण में एक बहुत बड़ा अंश ऐसा है जो नेमी किस्म का है, जैसे गिनती, मिलान, वर्णक्रम–संयोजन, प्रयोग–आव त्ति की गणना, संशोधनों को सर्वत्र ठीक करना, लेखन, टंकण, मुद्रण आदि। इस तरह के कई काम आज कंप्यूटर कई गुना ज्यादा दक्षता और फुर्ती के साथ करने में समर्थ है। हम आगे यह देखने की कोशिश करेंगे कि शब्दकोश के निर्माण में ऊपर गिनाए गए कामों में से कौन-कौन से काम आज कंप्यूटर हमारे लिए कर रहा है या करने में समर्थ है।

13.5.1 सामग्री–संकलन में कंप्यूटर का प्रयोग (ओ.सी.आर.)

भाग 13.3.1 में आप पढ़ चुके हैं कि एक बार कोश के स्वरूप के बारे में नीति तय हो जाने के बाद, बड़े पैमाने पर उस भाषा में उपलब्ध साहित्य से आवश्यक शब्दों और वाक्यांशों को संकलित करने का काम शुरू हो जाता है। चुने हुए अंशों को अलग-अलग कार्डों पर संदर्भ के साथ उद्धृत किया जाता है। यह काम या तो हाथ से लिखकर या टंकित करके किया जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं कि हजारों-लाखों पुस्तकों, दस्तावेजों और पत्र-पत्रिकाओं से शब्दों और उनके उद्धरणों को छाँट कर लिखना कितना लंबा और थकाऊ काम है। कोश बनाने वाली प्रतिष्ठित संस्थाओं में केवल इसी काम के लिए बहुत बड़ी संख्या में लोग वर्षों तक जुटे रहते हैं।

ओ.सी.आर. की सहायता से यह समस्त कार्य अब बहुत ही कम समय में संपन्न हो सकता है। आप पिछले भाग में देख चुके हैं कि ओ.सी.आर. से किस प्रकार कुछ ही सेकेन्डों में पूरे पृष्ठ की सामग्री को कंप्यूटर में प्रविष्ट किया जा सकता है। **Collins Cobuild Dictionary of English** Language (1987) में (जिसने पहली बार शब्दकोश के निर्माण की समस्त प्रक्रिया का कंप्यूटरीकरण किया) ओ.सी.आर. की पद्धति का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया है।

ओ.सी.आर. की सुविधा के चलते सामग्री संकलन की प्रक्रिया में भी फर्क आया। अब स्रोत साहित्य से उद्धरण और शब्द चुनकर लिखने की जरूरत नहीं। अब सारे के सारे स्रोत साहित्य को कंप्यूटर द्वारा पढ़ी जाने वाली भाषा में संचित कर दिया जाता है। यह काम मुख्यत: ओ.सी.आर. के द्वारा अन्यथा कंप्यूटर टाइपिंग द्वारा संपन्न किया जाता है। इस प्रकार भाषा का समस्त साहित्य जो मुद्रित रूप में उपलब्ध होता है कंप्यूटर द्वारा पढ़ी जाने वाली भाषा के रूप में भी उपलब्ध हो जाता है। एक बार कंप्यूटर के स्मृतिकोश में संचित हो जाने के बाद इस सामग्री का उपयोग शब्दकोश निर्माण से जुड़े कई तरह के प्रयोजनों के लिए किया जा सकता है, जिसकी चर्चा आगे की जा रही है।

13.5.2 प्रयोग–आव त्ति जानने के लिए कंप्यूटर का प्रयोग (कॉन्कार्डेन्स):

कंप्यूटर अपने में संचित भाषा-सामग्री में आए संपूर्ण शब्दों की सूची तैयार कर तुरंत प्रस्तुत कर सकता है, उन्हें अकारादिक्रम में व्यवस्थित कर सकता है, शब्दों के दुहराव को हटा सकता है और आदेश पाने पर उन शब्दों को मनचाहे क्रम या तरीके से पर्दे पर प्रस्तुत कर सकता है। यह पद्धति कंप्यूटर की भाषा में कॉनकॉर्डेन्स (concordance) कहलाती है। यह प्रणाली कोशकार के बहुत काम की है। शब्दकोश-निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया में वह अनेक प्रयोजनों के लिए इसका उपयोग करता है। इनमें से एक महत्वपूर्ण प्रयोजन है शब्दों की प्रयोग-आवृत्ति की गणना। इससे कोशकार को तुरंत यह जानकारी मिल जाती है कि वास्तविक व्यवहार में कौन-से शब्दों का प्रयोग कितना अधिक या कम है और कौन-से शब्द प्रचलन से हट गए हैं। इससे कोशकार को यह निर्णय लेने में मदद मिलती है कि किस शब्द को कोश में जगह दे और किस शब्द को नहीं। Collins Cobuild ने 2 करोड़ शब्दों की सामग्री का विश्लेषण कर यह बताया कि अंग्रेजी में सबसे अधिक प्रचलित शब्द केवल 700 हैं जो 70 प्रतिशत पाठों में इस्तेमाल किए जाते हैं। सबसे अधिक प्रचलित संज्ञाओं में way शब्द का स्थान time और people के बाद तीसरा है।

13.5.3 अर्थ निर्धारण में कंप्यूटर का प्रयोग (कॉन्कार्डेन्स)

संकलित भाषा-सामग्री में शब्द किन-किन नए या पुराने अर्थों में इस्तेमाल हुए हैं इसका निर्णय तो कोशकार या संपादक अपने विवेक से करता है, लेकिन कंप्यूटर उसके इस काम में एक दूसरी तरह से मदद करता है। कॉन्कॉर्डेन्स की एक अन्य विकसित प्रणाली का इस्तेमाल कर कंप्यूटर अपने डाटा में से उन सभी वाक्यों या वाक्यांशों को ढूँढ़ कर पर्दे पर प्रस्तुत कर देता है जिनमें उस शब्द का

प्रयोग हुआ है जिसके बारे में हम जानना चाहते हैं। वाक्यों की पूरी सूची इस प्रकार पर्दे पर प्रदर्शित होती है कि हर पंक्ति में संबंधित शब्द पर्दे के बीचों-बीच रहता है और उसके पहले और बाद के *10-12* शब्द हर पंक्ति में उद्धृत होते हैं। उदाहरण के लिए, अगर आपको 'mind' शब्द के विविध अर्थों तथा प्रयोगों को ढूँढना हो तो इसका कॉन्कॉर्डेन्स कुछ इस प्रकार पर्दे पर आएगा--

an original idea in a	mind capable of original ideas. It...
why even mention love, never	mind, carry on about how love...
left it in the safe. "Would you	mind checking up!" I will ask....
her own meals. She didn't	mind cigarettes smoke any more...
to generation. The modem	mind conditioned as it is to the
of hand and inventive of	mind, did neither. He hunted
in this house. You don't	mind, do you? Sarah asked
two thoughts uppermost in my	mind while entering into the
know she could improve her	mind with good books. Yet it
name didn't strike in my	mind. I am sorry for that
be out of sight out of	mind. I had the feeling that
settled. I have an open	mind. I can still reconsider
coach came to a halt.	mind your head or else
was crowded. Would you	mind the bag? Jane told
I will tell you one thing,	mind, it's very expensive.

इस प्रकार के डाटा से कोशकार कई प्रकार के महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाल सकता है। वह एक ही नज़र में पता कर सकता है कि 'mind' का प्रयोग कितने अलग-अलग अर्थों में संभव है। इन अर्थों में उस शब्द के आगे-पीछे किन शब्दों की आकांक्षा होती है। उदाहरण के लिए, किसी अन्य डाटा से हम यह निष्कर्ष निकालेंगे कि dependent के बाद upon की आकांक्षा होती है, comply के बाद with की consist के बाद of की, with a view के बाद to की, आदि। हिन्दी से उदाहरण लें तो 'चिलचिलाती' शब्द 'धूप' की आकांक्षा करता है, 'प्रकांड' शब्द 'पंडित' की आदि। इस प्रकार के शब्दों के प्रयोग को सहप्रयोग कहा जाता है।

इस प्रकार के डाटा से एक और महत्वपूर्ण जानकारी यह मिलती है कि वास्तविक व्यवहार में किस शब्द का प्रयोग किस अर्थ में सबसे ज्यादा होता है और किसमें सबसे कम। कॉलिन्स कोबिल्ड (1987) के शब्दकोश में जब पहली बार इस पद्धति का प्रयोग हुआ तो कंप्यूटर ने कुछ चौंकाने वाले परिणाम दिए। उदाहरण के लिए, यह पाया गया कि वास्तविक व्यवहार में 'देखना' के मूल अर्थ में 'see' के जितने प्रयोग हैं उनसे कहीं ज्यादा अधिक प्रयोग उसके गौण अर्थों में हैं, जैसे--

I will **see** what I can do for you.
Please **see** that you complete it today.
Do you see my point?
I will **see** you later.
I don't **see** any virtue in it.
As far as I can **see,** the scheme will be a flop.
You **saw** in the earlier chapter that....

इसी प्रकार 'रखना' के मूल अर्थ में 'keep' का प्रयोग जितना है उससे कहीं ज्यादा अधिक प्रयोग इसके गौण अर्थों का है, जैसे :

I am not keen on **keeping** a car.
I **keep** thinking about it.
Keep a close watch at the gate.
He **kept** the secret to himself.
I won't be able to **keep** my appointment.
He **kept** on doing the work undisturbed.
He gets only ten dollars to **keep** himself.

इस प्रकार की कॉन्कॉर्डेन्स सूची का उपयोग कोशकार अपने शब्दों की व्याख्या के लिए उपयुक्त दृष्टांत वाक्य जुटाने के लिए भी करता है। उसे अपने कोश में नकली वाक्यों के दृष्टांत देने की जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि कॉन्कॉर्डेन्स से प्राप्त दृष्टांत वाक्य वास्तविक होते हैं।

13.5.4 प्रेसकापी निर्माण तथा मुद्रण में कंप्यूटर का प्रयोग (डी.टी.पी.)

इस विषय की चर्चा विस्तार से पिछले भाग 13.3.3 में कर दी गयी है।

13.6 कंप्यूटर अनुवाद में शब्दकोश का प्रयोग

आपने पिछले भाग में देखा कि शब्दकोश के निर्माण में कोशकार किस प्रकार अपने विभिन्न प्रयोजनों के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल करता है। कंप्यूटर उसके लिए एक उपकरण या साधन होता है और लक्ष्य होता है शब्दकोश का निर्माण। लेकिन एक स्थिति ऐसी भी है जब कंप्यूटर विशेषज्ञ को खुद अपने कुछ खास प्रयोजनों के लिए शब्दकोश की जरूरत पड़ती है जहाँ वह शब्दकोश का इस्तेमाल एक उपकरण या साधन के रूप में करता है। उसका अंतिम लक्ष्य होता है कंप्यूटर अनुवाद। कंप्यूटर-अनुवाद के लिए जिस तरह के कोश की जरूरत होती है वह एक अलग तरह का कोश होता है जिसे कंप्यूटर की भाषा में लेक्सिकॉन (lexicon) कहते हैं। इसकी चर्चा हम आगे करेंगे। इससे पहले कंप्यूटर अनुवाद की प्रकृति के बारे में कुछ चर्चा यहाँ अपेक्षित है। इस पर विस्तार से आप खंड 5 में पढ़ेंगे।

13.6.1 कंप्यूटर अनुवाद की प्रकृति

कंप्यूटर अनुवाद के बारे में तीन बातें आपको ध्यान में रखनी चाहिए। पहला, कंप्यूटर अनुवाद इस समय अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही है। दूसरे, कंप्यूटर से जो भी अनुवाद किया जा रहा है या किया गया है वह अत्यंत सीमित विषय-क्षेत्र से संबद्ध है, जैसे मौसम की जानकारी से संबंधित अनुवाद, डाक्टर और नर्स के बीच होने वाले चिकित्सा संबंधी संवाद, मशीनों के मेनुअल या निर्देश और वैज्ञानिक या तकनीकी विषयों का कोई सीमित प्रयोग-क्षेत्र। कंप्यूटर प्रणाली से ऐसे साहित्य का अनुवाद आज संभव नहीं जिसमें लक्षणा, व्यंजना या शैली की विशिष्टता हो।

तीसरे, कंप्यूटर से औसतन 80 प्रतिशत सही अनुवाद की ही आशा की जानी चाहिए। 20 प्रतिशत काम फिर भी अनुवादक का रहेगा जो उसे अनुवाद का संपादन और संशोधन करेगा। दूसरे शब्दों में कहें तो कंप्यूटर अनुवादक का सहायक है, वह उसका स्थान नहीं ले सकता।

कंप्यूटर की अपनी कोई बुद्धि नहीं होती। वह वही काम करता है जिसकी जानकारी उसमें भर दी जाती है। उसे यह जानकारी सूत्रों और नियमों के रूप में चाहिए। कोशिश यह रहती है कि मानव के मस्तिष्क में भाषा संबधी जो नियम और जानकारी रहती है उन्हें सूत्र रूप में कंप्यूटर में डालें। कंप्यूटर से अनुवाद करवाने के लिए अब उसी प्रक्रिया को अपनाया जाता है जो प्रक्रिया मानव अनुवादक की होती है। उदाहरण के लिए, मानव अनुवादक को तरह, कंप्यूटर में भी दो भाषाओं के बोध की क्षमता उत्पन्न की जाती है। यह भी क्षमता उत्पन्न की जाती है कि वह दोनों भाषाओं के वाक्यों की रचना कर सके। कंप्यूटर के संदर्भ में इसका तात्पर्य यह हुआ कि

क) कंप्यूटर किसी दिए हुए पाठ के अर्थ को समझ सके।

ख) वह लक्ष्य भाषा में सही वाक्य की रचना कर सके।

ग) उसमें दो भाषाओं के शब्दों, वाक्यों, अर्थों आदि के बीच समान-असमान तत्वों का विश्लेषण करने की क्षमता हो।

घ) वह स्रोत भाषा के शब्दों, वाक्यों तथा अभिव्यक्तियों आदि के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य रचनाओं का चयन कर सही अनुवाद प्रस्तुत कर सके। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में समान दीखने वाले इन तीन वाक्यों में **'have'** का अनुवाद हिन्दी में तीन अलग तरह से होगा, यह जानने की क्षमता कंप्यूटर में होनी चाहिए:

I have a car.	मेरे पास कार है।
I have a son.	मेरे एक लड़का है।
I have fever.	मुझे बुखार है।

13.6.2 कंप्यूटर शब्दकोश--लेक्सिकॉन

कंप्यूटर अनुवाद के लिए कंप्यूटर को जिस प्रकार के विशिष्ट शब्दकोश की जरूरत पड़ती है उसे लेक्सिकॉन **(lexicon)** कहते है। लेक्सिकॉन में शब्द के संबंध में सूत्र रूप में वह सभी जानकारी होती है जो कंप्यूटर को भाषा के वाक्यों को समझने और दूसरी भाषा में उसका अनुवाद करने के लिए जरूरी होता है। इस प्रयोजन के लिए कंप्यूटर को शब्द के संबंध में कम से कम चार प्रकार की जानकारी की ज़रूरत होती है। यह जानकारी सामान्य कथन के रूप में नहीं बल्कि सूक्ष्म

नियमों, उपनियमों तथा अपवादों के रूप में सूत्रबद्ध होनी चाहिए।

(क) शब्द संरचना संबंधी जानकारी : इसके अंतर्गत शब्द की संरचनात्मक कोटियों (जैसे संज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रिया आदि) और उनकी आंतरिक रचना के नियमों का सूत्रबद्ध वर्णन शामिल है। ये सूचनाएँ सामान्य व्याकरण या शब्दकोशों में एक सीमा तक उपलब्ध होती हैं लेकिन उन्हें कंप्यूटर के फार्मूला के अनुसार सूत्रबद्ध करना होता है।

(ख) अर्थ संबंधी जानकारी : शब्दों के अर्थ सभी कोशों में उपलब्ध होते हैं लेकिन कंप्यूटर की जरूरतों की दृष्टि से ये अधूरे हैं। इन अर्थों की मदद से वाक्य में शब्दों के प्रयोग की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता के बारे में कोई संकेत नहीं मिलता। उदाहरण के लिए, सामान्य शब्दकोश में 'देहांत' शब्द का अर्थ 'मृत्यु' होगा, लेकिन कंप्यूटर के लिए यह काफी नहीं है क्योंकि इस आधार पर कंप्यूटर हमें ये दोनों वाक्य दे सकता है:

His father expired.		उसके पिताजी का देहांत हुआ।
His dog expired.	x	उसके कुत्ते का देहांत हुआ।(गलत)

लेक्सिकॉन में 'देहांत' के अर्थ के साथ एक और अर्थ लक्षण (+ मानव) जोड़ना जरूरी है जिससे कंप्यूटर मानव के अलावा अन्य प्राणियों के संदर्भ में 'देहांत' शब्द के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दें।

इसी तरह 'आना' और 'मालूम होना' दोनों का अर्थ शब्दकोश में 'to know' होगा जिससे कंप्यूटर अनुवाद में ये चारों प्रकार के सही-गलत वाक्य आपको मिल सकते हैं :

I know the doctor's name.		मुझे डाक्टर का नाम मालूम है।	(सही)
	x	मुझे डाक्टर का नाम आता है।	(गलत)
I know Hindi.		मुझे हिन्दी आती है।	(सही)
	x	मुझे हिन्दी मालूम हैं।	(गलत)

मालूम होना' का प्रयोग तथ्य और सूचना की जानकारी से जुड़ा है जबकि 'आना' क्रिया का प्रयोग कौशल या विद्या की जानकारी से जुड़ा है। लेक्सिकॉन इस अतिरिक्त सूचना का समावेश अर्थ के लक्षण के रूप में होना चाहिए, जैसे (+ कौशल) तथा (+ सूचना) आदि। तभी कंप्यूटर एक वाक्य को स्वीकार्य और दूसरे को अस्वीकार्य मानेगा।

(ग) वाक्य-विन्यास संबंधी जानकारी : व्याकरण की सामान्य पुस्तकों में कई प्रकार के वाक्यों की संरचना का वर्णन मिलता है, जैसे अकर्मक, सकर्मक, द्विकर्मक आदि। लेकिन कंप्यूटर को इस सूचना की ज्यादा जरूरत है कि कौन-सा शब्द वाक्य की रचना और प्रकार को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है, वाक्य में किस शब्द की क्या आकांक्षा है, कौन-सी क्रिया किस प्रकार के कर्म, कर्ता या पात्रों की अपेक्षा करती है। उदाहरण के लिए, 'चौंकना' क्रिया अकर्मक वाक्य और चेतन कर्म की आकांक्षा करती है, जैसे :

'मोहन चौंका।' ('मेरा मकान चौंका' वाक्य स्वीकार्य नहीं)

इसी तरह 'लड़ना' दो पात्रों की आकांक्षा करता है, जैसे 'राधा अपनी बहन से लड़ी'। 'लड़ना' क्रिया अपने से पहले 'से'परसर्ग की भी आकांक्षा करती है।

इसी तरह 'चोट लगना', 'प्यास लगना', 'दया आना', पसंद होना, आदि क्रियाएँ, कर्ता + को; वाक्य की आकांक्षा करती हैं जबकि अंग्रेजी के समानार्थी वाक्यों की रचना बिल्कुल अलग है। देखिए :

राम को चोट लगी।	Ram hurt himself.
बच्चे को प्यास लगी है।	The child is thirsty.
राधा को भिखारी पर दया आई।	Radha felt pity on the beggar.
रमेश को लड़की पसंद है।	Ramesh likes the girl.

लक्सिकॉन में इन सभी क्रियाओं के सामने उनके सामान्य अर्थ के साथ-साथ वाक्य-संरचना संबंधी लक्षण 'कर्ता + को' भी दिया जाएगा जिससे कंप्यूटर को यह संकेत मिले कि इन क्रियाओं के साथ 'कर्ता + को' वाले वाक्यों का प्रयोग होता है।

(घ) संदर्भ/व्यावहारिक ज्ञान संबंधी जानकारी : एक शब्द का अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ हो सकता है। उदाहरण के लिए 'post' का अर्थ 'डाक' भी हो सकता t, 'पद' भी, 'खंभा' भी और 'चौकी' भी। वाक्य में इस्तेमाल होकर आने पर पाठक संदर्भ के पूर्वज्ञान के कारण शब्द का ठीक जगह पर ठीक अर्थ लगा लेता है, लेकिन कंप्यूटर, जिसके पास न पूर्वज्ञान है न संदर्भ की जानकारी, किस प्रकार शब्द का सही अर्थ निर्धारित कर सकता है ? उदाहरण के लिए,

शीला मेरी बहन है। वह बीमार है।

वाक्य में कंप्यूटर को कैसे पता चलेगा कि 'वह' she है या he?

इसी तरह कंप्यूटर

Please bring the spirit.

वाक्य का अनुवाद 'कृपया स्पिरिट लाइए' भी कर सकता है और 'कृपया प्रेतात्मा लाइए' भी।

संदर्भ और व्यावहारिक ज्ञान की जानकारी कंप्यूटर में भर पाना वास्तव में कंप्यूटर अनुवाद से जुड़े विशेषज्ञों के लिए आज सबसे बड़ी चुनौती है। इस समस्या को सुलझाने की कोशिशें जारी हैं। वास्तव में यही वह स्थल हैं जहाँ कंप्यूटर अनुवाद में मानव के हस्तक्षेप की आवश्यकता पड़ती है और जहाँ उसे कंप्यूटर से प्राप्त अनूदित पाठ को संपादित और संशोधित करना पड़ता है।

बोध प्रश्न—2

क) नीचे दिए कथनों में से सही कथन के सामने (सही) और गलत कथन के आगे (गलत) लिखिए।

1. कंप्यूटर की अपनी कोई बुद्धि नहीं होती, वह वही कार्य करता है जिसकी जानकारी उसमें भरी जाती है। ( )
2. अंग्रेजी और हिन्दी का वाक्य-विन्यास एक समान है। ( )
3. कंप्यूटर अनुवाद के लिए उपयुक्त संदर्भ और व्यावहारिक ज्ञान के नियम आज कंप्यूटर को उपलब्ध हो गए हैं। ( )
4. आज कंप्यूटर से किसी भी पाठ का दूसरी भाषा में शत-प्रतिशत अनुवाद संभव है। ( )
5. कंप्यूटर अनुवाद की क्षमता केवल सीमित विषय-क्षेत्र के संदर्भ में ही संभव है। ( )
6. आज कोश में पृष्ठ संख्याओं का अंकन कंप्यूटर-प्रणाली से संभव नहीं। ( )

ख) कोष्ठक में दिए उत्तरों में से एक उत्तर सही है। जो सही उत्तर हो उसे रिक्त स्थान में लिखिए।

1. शब्दों के वास्तविक प्रयोग को स्पष्ट करने के लिए दिए गए वाक्यों को .... वाक्य कहते हैं। (शब्दों/संख्याओं/दृष्टांत)
2. कंप्यूटर अनुवाद के लिए जिस तरह के कोश की जरूरत पड़ती है उसे .... कहते हैं। (बृहत् कोश/लेक्सिकॉन/द्विभाषा कोश)
3. इनमें से ....वाक्य में 'see' अपने मूल अर्थ में प्रयुक्त हुआ है : (पहले/दूसरे/तीसरे)

   (i) As far as I can see, the scheme is a flop.
   (ii) Do you see my point.
   (iii) Can you see that house from here.
4. .... का प्रयोग केवल वहीं होता है जहाँ जानकारी का संबंध कौशल या विद्या से हो, तथ्य या सूचना से नहीं। (मालूम होना, जानना, आना)
5. संज्ञा, विशेषण, क्रिया आदि वर्गीकरण शब्द की........................... कोटियाँ हैं। (संरचनात्मक/व्याकरणिक/अर्थगत)
6. कंप्यूटर में प्रविष्टि सामग्री के संपूर्ण शब्दों की सूची प्रस्तुत करने वाली प्रणाली को .... कहते हैं। (ओ.सी.आर./कॉन्कॉर्डेन्स/स्पेलचेकर)

ग) कंप्यूटर की इन प्रणालियों/उपकरणों का प्रयोग शब्दकोश निर्माण में किन प्रयोजनों के लिए किया जाता है :

(1) ओ.सी.आर. ....
....

....

....

(2) स्पेलचेकर..

....

....

....

(3) कॉन्कॉर्डेन्स ....

....

....

....

(4) जिस्टकार्ड ....

....

....

....

(5) डेस्क टॉप पब्लिशिंग ....

....

....

....

13.7 सारांश

इस इकाई में शब्दकोश के निर्माण में कंप्यूटर के प्रयोग के बारे में आपने पढ़ा कि

- कंप्यूटर अपने स्मृतिकोश में हमारे द्वारा प्रविष्ट की गई सूचनाओं तथा आँकड़ों को संचित रखता है।
- वह इन सूचनाओं तथा आँकड़ों को संसाधित कर हमें तुरंत इच्छित परिणाम या उत्तर देता है। इसके लिए कई तरह के साफ्टवेयर तथा प्रोग्राम विकसित किए जाते हैं।
- शब्दकोश के निर्माण में डाटा संसाधन, डेस्क टॉप पब्लिशिंग, ओ.सी.आर., स्पेलचेकर, कॉन्कार्डेन्स आदि अनेक प्रणालियों का विभिन्न प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाता है। इनकी मदद से महीनों का काम कुछ ही समय में पूरा किया जा सकता है।
- शब्दकोश निर्माण के तीन प्रमुख चरण हैं-- संकलन, संपादन और प्रेसकापी निर्माण/मुद्रण। इन तीनों में कंप्यूटर का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल संभव है। Collin's Cobuild Dictionary of English Language (1987) पूर्णत: कंप्यूटर की प्रक्रिया से बना पहला अंग्रेजी कोश है।
- ओ.सी.आर. प्रणाली के प्रयोग से हम मुद्रित पृष्ठों को चित्रविधि से क्षणभर में कंप्यूटर में प्रविष्टि कर सकते हैं।
- कॉन्कार्डेन्स प्रणाली के प्रयोग से कंप्यूटर में संकलित सामग्री में आए संपूर्ण शब्दों की सूची तुरंत प्राप्त की जा सकती है। इस विधि से शब्दों और अर्थों की प्रयोग-आवृत्ति संबंधी जानकारी भी प्राप्त की जा सकती है। शब्दकोशकार इसी सामग्री में से अपने कोश के लिए उपयुक्त दृष्टांत वाक्य भी छाँटता है।
- शब्दकोश की प्रेसकॉपी तैयार करने में डेस्क टॉप पब्लिशिंग (DTP) का इस्तेमाल किया जाता है जिससे सामग्री के संपादन, संशोधन और मुद्रण का काम बहुत ही कम समय में संपन्न हो जाता है।
- कंप्यूटर के लिए निर्मित विशिष्ट शब्दकोश (लेक्सिकॉन) में शब्दों के ऐसे अर्थ, वाक्य-विन्यास, प्रयोग तथा संदर्भ संबंधी नियम और लक्षण सूत्रबद्ध किए जाते हैं जो प्राय: सामान्य शब्दकोशों में नहीं मिलते।
- जिस प्रकार कोशकार अपने कार्य के लिए कंप्यूटर का उपयोग एक उपकरण के रूप में करता है, उसी तरह कंप्यूटर-अनुवाद कार्य में लगे विशेषज्ञ भी शब्दकोश (लेक्सिकॉन) का इस्तेमाल एक उपकरण की तरह करता है।

13.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1) हिन्दी का वाक्यात्मक व्याकरण (1985-1992) सूरज भान सिंह, साहित्य सहकार, ई/10-4, कृष्णा नगर, दिल्ली-110 051 ।

2) कंप्यूटर से बातचीत (1989) ओम विकास, एन.सी.ई.आर.टी., श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110 016

13.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

क) 1) गलत 2) सही 3) गलत 4) गलत 5) सही
6) गलत 7) गलत 8) सही।

ख) 1) प्रोग्राम 2) संसाधित 3) वर्ड प्रोसेसर 4) भारतीय भाषाओं
5) प्रविष्टि 6) डाटा प्रोसेसिंग 7) ओ.सी.आर.

बोध प्रश्न-2

क) 1) सही 2) गलत 3) गलत 4) गलत 5) सही
6) गलत

ख) 1) दृष्टांत 2) लेक्सिकॉन 3) तीसरे 4) आना
5) संरचनात्मक 6) कॉन्कॉर्डेन्स

ग) इकाई के भाग 13.5 से स्वयं जाँच करें।

NOTES